ल्यू शाओ-ची

हम अच्छे कम्युनिस्ट कैसे बनें

अनुवादक
रमेश सिनहा

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस लिमिटेड, बम्बई ४.

पहला हिन्दी संस्करण
अगस्त, १९५२

प्रकाशक का नोट

जुलाई १९३९ में चीन के येनान शहर में कॉ. ल्यू शाओ-ची ने मार्क्सवादी-लेनिनवादी शिक्षालय में इस विषय पर कई व्याख्यान दिये थे। येनान में ही उस समय चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का प्रधान दफ़्तर था और वही उस समय चीन के आज़ाद प्रदेशों की राजधानी थी। जनवादी चीन के 'फॉरेन लैंग्वेजेज प्रेस' ने १९५१ में इन व्याख्यानों को अंग्रेज़ी भाषा में संग्रह के रूप में प्रकाशित किया। प्रस्तुत पुस्तक उसी का हिन्दी अनुवाद है।

१ अगस्त, १९५२

मूल्य सवा रुपया

जयन्त भट्ट द्वारा, न्यू एज प्रिंटिंग प्रेस, १९० बी. खेतवाडी मेन रोड, बम्बई ४. में मुद्रित और उन्हींके द्वारा पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस लिमिटेड बम्बई ४. की तरफ़ से प्रकाशित।

सूची

अध्याय : एक

अध्याय : दो

पृष्ठ

परिशिष्ट

अध्याय : एक

विषय प्रवेश

साथियो ! मुझे आप से माफी माँगनी चाहिए। भाषण देने के लिए आपने मुझे काफी दिन पहले बुलाया था लेकिन मैं आज से पहले न आ सका। जिस प्रश्न के बारे में मैं बात करने जा रहा हूँ उसका सम्बंध कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों के आत्म-विकास से है। मेरा खयाल है कि ऐसे समय में जबकि पार्टी के निर्माण और गठन का बुनियादी कार्य हमारे सामने है, इस प्रश्न के विषय में बात करना अलाभकर न होगा। अपने भाषण को मैं कई भागों में बाँटना चाहता हूँ, इसलिए आज सिर्फ़ एक भाग को मैं लूँगा, बाकी को अगली बार के लिए छोड़ दूंगा, जिससे कि चीज़ों को नये साथी भी समझ सकें। कुछ प्रश्नों के बारे में मुझे अधिक सफ़ाई और उदाहरण देने पड़ेंगे। इस कारण अपने भाषण को मैं बहुत संक्षिप्त नहीं बना सकता। यह मैं आपको शुरू में ही बताए देता हूँ।

कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों के लिए आत्मविकास की कोशिश करना क्यों जरूरी है ?

साथियो, कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों के लिए आत्म-विकास के लिए कोशिश करना क्यों जरूरी है ?

जिस दिन से मनुष्य दुनिया में पैदा हुआ, जिन्दा रहने के लिए और अपने जीवन के लिए आवश्यक भौतिक वस्तुओं के उत्पादन के वास्ते उसे उसी दिन से प्रकृति के विरुद्ध संघर्ष करना पड़ा है।

"मनुष्य प्रकृति से युद्ध करता है और भौतिक मूल्यों के उत्पादन के लिए उसका उपयोग करता है। परंतु ऐसा वह व्यक्तिगत रूप से, दूसरों से अलग रह कर, नहीं करता। वह गुटों में, समाज में, दूसरों से मिलकर ऐसा करता है। इसलिए हर समय और हर दशा में उत्पादन **सामाजिक** उत्पादन है। भौतिक मूल्यों के उत्पादन में, उस उत्पादन क्षेत्र में ही मनुष्य एक या दूसरी तरह का परस्पर सम्बंध प्रस्थापित करता है अर्थात वह परस्पर का कोई उत्पादन संबंध जोड़ लेता है।"

(**सोवियत संघ की कम्युनिस्ट (बो.) पार्टी का इतिहास**, हिन्दी, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ १२६)

इस तरह, उत्पादन के लिए प्रकृति के विरुद्ध जो संघर्ष मनुष्य करते हैं उसका रूप सामाजिक है। प्रकृति के विरुद्ध मनुष्यों का यह संघर्ष सामाजिक प्राणियों का संघर्ष है। प्रकृति के विरुद्ध इस निरन्तर संघर्ष में ही मानव प्राणी प्रकृति को और, साथ ही साथ, अपने को भी बराबर बदलते आये हैं। अपने पारस्परिक सम्बंधों को भी उन्होंने इसी संघर्ष में बदला है। मनुष्यों के शारीरिक स्वरूप (हाथ, पैर, काठी, आदि), उनके सामाजिक सम्बंध, उनके सामाजिक संगठन के रूप तथा उनके दिमाग, विचारधाराएँ, आदि, सभी चीजें, सामाजिक प्राणियों की हैसियत से प्रकृति के विरुद्ध किये गये मनुष्यों के इस लम्बे संघर्ष के दौरान में ही बराबर बदलती और उन्नत होती आयी हैं। क्योंकि,

"उत्पादन का **पहला लक्षण** यह है कि वह किसी एक अवस्था में देर तक स्थिर नहीं रहता, वरन सदा परिवर्तन और विकास की ही दशा में रहता है; उत्पादन-पद्धति में परिवर्तन होने से तमाम सामाजिक व्यवस्था में, विचारों, राजनीतिक मतों और राजनीतिक संस्थाओं में परिवर्तन अवश्यम्भावी हो जाता है।"

(**सोवियत संघ की कम्युनिस्ट (बो०) पार्टी का इतिहास**, हिन्दी, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ १२६)

मनुष्य का विकास जानवरों से हुआ है। प्राचीन काल में मनुष्य के जीवन का ढंग, उसका सामाजिक संगठन और उसकी विचारधारा, आदि आज

से भिन्न थी। भविष्य में भी, मनुष्य के जीवन का ढंग, उसका सामाजिक संगठन, उसकी विचारधारा, आदि आज से भिन्न होगी।

स्वयं मानवता और मानव समाज ऐतिहासिक विकास की एक प्रकार की क्रिया है। वे विकसित हो रहे हैं और बदल रहे हैं और, संघर्ष के दौरान में, उन्हें बराबर बदला जा सकता है और बदला गया भी है।

जब मानव समाज विकास की एक ऐतिहासिक मंज़िल तक पहुँच गया तो वर्ग समाज का उदय हुआ। उसके बाद, वर्ग समाज में, मनुष्यों का अस्तित्व किसी एक वर्ग के मनुष्यों की तरह रहा। मार्क्सवादी दर्शन के सिद्धान्तों के अनुसार, मनुष्यों की विचारधारा उनके सामाजिक अस्तित्व से निर्धारित होती है। इस तरह, वर्ग समाज में मनुष्यों की विचारधारा किसी सामाजिक वर्ग विशेष की विचारधारा का प्रतिनिधित्व करती है। वर्ग समाज में निरन्तर वर्ग संघर्ष होते रहते हैं। इस भांति, प्रकृति के विरुद्ध लगातार संघर्ष के दौरान में, और समाज के लगातार वर्ग संघर्ष के द्वारा, मनुष्य प्रकृति को बदलते हैं; समाज को बदलते हैं; और साथ ही साथ, अपनी विचारधारा को भी बदलते हैं।

एक बार मजदूरों से मार्क्स ने कहा था:

> " न सिर्फ़ मौजूदा सामाजिक सम्बंधों को बदलने के उद्देश्य से, बल्कि खुद अपने को भी बदलने तथा राजनीतिक शासन चलाने के लिए अपने को होशियार बनाने के उद्देश्य से भी तुम्हें पन्द्रह, बीस, या पचास वर्ष तक गृहयुद्ध और अन्तरराष्ट्रीय युद्धों की आग में से गुजरना पड़ेगा।"

इसका अर्थ हुआ कि केवल प्रकृति के विरुद्ध अपने संघर्ष के दौरान में ही नहीं, बल्कि लगातार सामाजिक संघर्ष में भी मनुष्य अपने को बदलते हैं। समाज को और खुद अपने को बदलने के लिए सर्वहारा वर्ग को भी सजग रूप से सामाजिक संघर्ष के एक लम्बे काल से गुजरना पड़ेगा।

इसलिए, मनुष्यों को मानना चाहिये कि उन्हें खुद को बदलने की जरूरत है और वे बदल सकते हैं। उन्हें अपने को ऐसे व्यक्ति न मानना चाहिए जो बदलते नहीं हैं, जो पूर्ण, पवित्र और सुधार से परे हैं। इसे (अपने को बदलने की बात को—अनु०) आवश्यक मानना कोई शर्म की बात नहीं है,

क्योंकि वह प्राकृतिक और सामाजिक विकास के अनिवार्य नियमों के अनुकूल है। अगर ऐसा न होता तब तो मनुष्य प्रगति ही न कर सकता।

हम कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर आधुनिक इतिहास के सबसे आगे बढ़े हुए क्रान्तिकारी हैं। समाज तथा दुनिया को बदलने की आज की हम सबसे लड़ाकू और प्रेरक शक्ति हैं। क्रान्तिकारी मौजूद हैं क्योंकि क्रान्ति-विरोधी अभी तक मौजूद हैं। इसलिए क्रान्ति-विरोधियों के विरुद्ध निरन्तर संघर्ष करना क्रान्तिकारियों के अस्तित्व और विकास की एक आवश्यक शर्त है। अगर वे इस संघर्ष को नहीं चलाते तो उन्हें क्रान्तिकारी नहीं कहा जा सकता और उसके अभाव में उन्नति और विकास करना तो उनके लिए और भी कठिन होगा। समाज को, दुनिया को और साथ ही साथ, खुद अपने को भी कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर क्रान्ति-विरोधियों के खिलाफ़ इस निरन्तर संघर्ष में ही बदलते हैं।

कम्युनिस्ट पार्टी का मेम्बर क्रान्ति-विरोध के खिलाफ़ विभिन्न क्षेत्रों में संघर्ष करके अपने को बदलता है। इसका अर्थ हुआ कि अपनी उन्नति करने और अपने क्रान्तिकारी गुणों और अपनी टेकनीक (दक्षता) को बढ़ाने के लिए निम्न दो चीज़ों का मेल आवश्यक होता है : अमली लड़ाई की अग्नि परीक्षा में अपने को इस्पाती बनाना और अपने विचारों का विकास करना। एक नौसिखुए व्यक्ति से एक ऐसे परिपक्व और खूब अनुभवी क्रान्तिकारी में परिवर्तित होने के लिए जो हर परिस्थिति का सामना कर सके, क्रान्तिकारी इस्पातीकरण और आत्म-सुधार की एक अत्यंत लम्बी क्रिया की अर्थात् स्व-सुधार की एक लम्बी क्रिया की आवश्यकता होती है। एक अपेक्षाकृत अनुभवहीन क्रान्तिकारी के लिए दुश्मन के बारे में, खुद अपने बारे में तथा सामाजिक विकास के नियमों और क्रान्ति के नियमों के बारे में वास्तविक रूप से गहरी समझदारी हासिल करना संभव नहीं होता क्योंकि वह पुराने समाज के ही अन्दर बड़ा हुआ है और स्वभावतः ही पुराने समाज की विभिन्न विचारधाराओं, विद्वेषों और आदतों के अवशेष अपने साथ लाया है, ऐसा इसलिए भी है कि अभी तक वह अनुभवहीन है, अभी तक लम्बे क्रान्तिकारी अमल की आँच से तपकर वह नहीं निकला है।

इस स्थिति को बदलने के लिए उसे चाहिए कि इतिहास के क्रान्तिकारी अनुभवों (अपने पुरखों के अमल) का अध्ययन करने के अलावा, वह

वर्तमान क्रान्तिकारी अमल में खुद भाग ले। इस क्रान्तिकारी अमल के दौरान में, अर्थात् विभिन्न क्रान्ति-विरोधी तत्वों के विरुद्ध संघर्ष के दौरान में, उसे चाहिये कि अपनी मनोगत सूझ-बूझ की शक्ति का विकास करे और अध्ययन तथा आत्मविकास के लिए अपनी कोशिशों को बढ़ाये। सिर्फ़ तभी अपने अनुभव से धीरे-धीरे वह सीख सकेगा और सामाजिक विकास के नियमों और क्रान्ति के नियमों को अधिक प्रगाढ़ रूप में समझ सकेगा। तभी वह दुश्मन को, और खुद अपने को समझ सकेगा; तथा अपने पुराने विचारों, आदतों और विद्वेषों की ग़लती को समझ सकेगा और उन्हें सुधार सकेगा। तभी वह अपनी चेतना और अपने क्रान्तिकारी गुणों के स्तर को ऊंचा उठा सकेगा और अपने क्रान्तिकारी तरीकों आदि को बेहतर बना सकेगा। इसलिए, अपने को बदलने के लिए तथा अपनी चेतना के धरातल को ऊंचा उठाने के लिए, एक क्रान्तिकारी को चाहिए कि न तो वह अपने को क्रान्तिकारी अमल से अलग पड़ने दे और न आत्मोन्नति के अपने मनोगत प्रयत्नों को ही छोड़ दे तथा अमल के (खुद अपने अमल के और दूसरों के अमल के) ज़रिए सीखे। इस आख़िरी बात के बिना, सब चीज़ों के बावजूद, किसी क्रान्तिकारी के लिए अपनी उन्नति कर सकना असंभव होगा।

एक उदाहरण देखिए: किसी एक क्रान्तिकारी जन संघर्ष में हिस्सा लेने के लिए कम्युनिस्ट पार्टी के कई मेम्बर एक साथ जाते हैं। वे लगभग एक ही प्रकार के क्रान्तिकारी अनुभव से गुज़रते हैं। लेकिन फिर भी, मुमकिन है कि अन्त में इन पार्टी मेम्बरों के ऊपर पड़ा असर एक दूसरे से बिलकुल अलहदा हो। कुछ बहुत तेज़ी से आगे आ सकते हैं और हो सकता है कि पहले के कुछ पिछड़े हुए मेम्बर दूसरों की बराबरी पर पहुँच जाएँ। कुछ बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ सकते हैं। और दूसरे, हो सकता है कि संघर्ष के दौरान में ढुलमुलाने लगें और क्रान्तिकारी अमल, आगे बढ़ने में उनकी मदद करने के बजाए, उन्हें और पीछे डाल दे। इस सबका कारण क्या है?

एक दूसरा उदाहरण देखिए: कम्युनिस्ट पार्टी के हमारे बहुत से मेम्बरों ने **लम्बे मार्च** (अभियान) में भाग लिया था। यह **मार्च** हमारे पार्टी मेम्बरों के लिए कड़ी परीक्षा थी। पार्टी मेम्बरों और आम जनता के व्यापक अंगों पर भी उसने अत्यंत प्रगतिशील और लाभकर प्रभाव डाला था। लेकिन, पार्टी मेम्बरों की एक बहुत ही छोटी संख्या के ऊपर उसका असर

बिल्कुल उल्टा ही पड़ा था। लम्बे मार्च और १० वर्ष के गृहयुद्ध के कठिन संघर्ष से गुज़रने के बाद उनके अन्दर इस कठिन संघर्ष का भय समा गया। उन्होंने पीछे हटने और भागने की कोशिश की। अन्त में, बाहर से लालच पाकर वे क्रान्तिकारी पाँतों को छोड़ गये। लम्बे मार्च में बहुत से पार्टी मेम्बरों ने भाग लिया था; फिर भी उन पर पड़ने वाला असर और उसका परिणाम बहुत भिन्न था। इस सबका कारण क्या है?

इसका कारण यह है कि इन पार्टी मेम्बरों के क्रान्तिकारी गुण जुदा-जुदा थे; क्रान्तिकारी अमल के दौरान में उनका विकास विभिन्न दिशाओं में हुआ था; और क्रान्तिकारी अमल के समय उन्होंने जो मनोगत प्रयत्न किये थे और आत्मविकास की उनकी जो मात्रा और तरीके थे, वे एक दूसरे से भिन्न थे। क्रान्तिकारियों के विभिन्न गुणों के कारण और उनके मनोगत प्रयत्नों और आत्मविकास की विभिन्नता के कारण बिलकुल भिन्न या सर्वथा विरोधी नतीजे तक निकल सकते हैं। ऐसी मिसालें आपके स्कूल में भी मिल सकती हैं। स्कूल में आप सबको एक ही तरह की शिक्षा और ट्रेनिंग मिलती है। लेकिन, आपके विभिन्न गुणों, अनुभवों, सांस्कृतिक धरातलों, मनोगत प्रयत्नों और आत्मविकास की मात्रा और तरीकों के कारण उसका परिणाम भिन्न भिन्न या बिल्कुल विरोधी भी हो सकता है। क्या आपने यह नहीं देखा कि कुछ बहुत थोड़े से लोग येनान के स्कूलों में शिक्षा और ट्रेनिंग पाने के बाद क्रान्ति से और दूर हट गये हैं? इसका भी कारण वही है। इसलिए, एक क्रान्तिकारी के लिए अपने को बदलने और बेहतर बनाने के वास्ते मनोगत प्रयत्न करना, आत्मविकास करना और क्रान्तिकारी संघर्ष के दौरान में शिक्षा ग्रहण करना एकदम जरूरी और अनिवार्य है।

क्रान्तिकारी संघर्ष के लम्बे वर्षों की अग्नि-परीक्षा से निकला हुआ हर क्रान्तिकारी एक बहुत अच्छा और अनुभवी क्रान्तिकारी नहीं बन सकता तो इसका मुख्य कारण यही है कि उसके खुद के प्रयत्नों और आत्मविकास की मात्रा नाकाफ़ी है। लेकिन उन सब लोगों ने जो बहुत अच्छे और अनुभवी क्रान्तिकारी बनने में सफल हुए हैं, निश्चय ही क्रान्तिकारी संघर्ष की अग्नि परीक्षा में और आत्मविकास के प्रयत्नों में लम्बे वर्ष बिताये होंगे। इसलिए, हमारी पार्टी के मेम्बर तमाम कठिनाइयों और मुसीबतों के बीच चलनेवाले आम जनता के क्रान्तिकारी संघर्ष की आँच में अपने को इस्पाती बना कर,

अपने आत्मविकास को दृढ़ बनाकर, नये को ग्रहण करने की अपनी शक्ति को अक्षुण्ण बनाये रख कर और सोचने की अपनी योग्यता को बढ़ा कर ही अपने को राजनीतिक रूप से दृढ़ व उच्च श्रेणी के क्रान्तिकारी बना सकते हैं।

कनफ्यूशियस ने कहा था:

"जब मैं पन्द्रह का था तो मेरा दिमाग़ सीखने की ओर प्रवृत्त था। तीस का होने पर मैं दृढ़ हो चुका था। चालीस की अवस्था में मेरे दिमाग में कोई संशय नहीं रह गये थे। पचास का होने पर मैं विधाता के विधान को जान गया था। साठ की उम्र में मेरे कान सच्चाई को सुनने के लिए सध गये थे। सत्तर वर्ष का होने के बाद जो ठीक है उसके विरोध में जाए बिना मैं अपने दिल की इच्छा के अनुसार चल सकता था।"

यहाँ पर कनफ्यूशियस अपने परिपक्व होने तथा आत्म-विकास की क्रिया बयान कर रहे थे। वे अपने-आपको जन्मजात "द्रष्टा" नहीं मानते थे।

मेन्शियस ने कहा था:

"विधाता जब किसी मनुष्य को महान जिम्मेदारी देनेवाला होता है तो उसके दिमाग़ की पहले वह कष्टों से अग्नि-परीक्षा करता है और उसके स्नायुओं और हड्डियों से मशक्कत करवाता है। उसके शरीर को वह भूखा मारता है और उससे भीषण ग़रीबी का सामना कराता है। वह उसकी समझ को झकझोर देता है। इन तमाम तरीकों से वह उस के दिमाग़ को चैतन्य बनाता है, उसकी प्रकृति को दृढ़ करता है और उसकी कमजोरियों को दूर करता है।"

मेन्शियस ने जो कुछ कहा है उसका भी सम्बंध परिपक्व बनने और आत्मविकास की उस क्रिया से ही है जिसमें से हर महान व्यक्ति को गुज़रना पड़ता है। कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों को तो चूंकि दुनिया को बदलने की अतुलनीय रूप से "महान जिम्मेदारी" को संभालना है, इसलिए उनके लिए तो इस्पातीकरण और आत्मविकास की इस क्रिया के बीच से गुज़रना और भी आवश्यक है।

कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों के आत्मविकास की क्रिया क्रान्तिकारी आत्मविकास की क्रिया है। अपने आत्मविकास की क्रिया को क्रान्तिकारी अमल से, या व्यापक मेहनतकश जनता के, विशेषतया सर्वहारा जनता के

अमली क्रान्तिकारी आन्दोलन से अपने को अलहदा करके हम नहीं चला सकते। हमारे आत्मविकास का एकमात्र उद्देश्य क्रान्तिकारी अमल की सहायता करना और जनता के अमली क्रान्तिकारी आन्दोलन का और कारगरता से संचालन करना है। हमारे आत्मविकास में तथा सामाजिक अमल से अलहदा दूसरी किस्मों के आदर्शवादी, दस्तूरी और निरपेक्ष आत्मविकास में यही अन्तर है। इस विषय पर आगे मैं थोड़ा और प्रकाश डालूंगा।

हमारे पार्टी मेम्बरों को न सिर्फ कठिन, संकटपूर्ण और यहाँ तक कि असफल क्रान्तिकारी अमल के दौरान में अपने को दृढ़ बनाना चाहिए तथा अपने आत्मविकास के प्रयत्नों को और बढ़ाना चाहिए; बल्कि अनुकूल, सफल और विजयी क्रान्तिकारी अमल के दौरान में भी उन्हें ऐसा ही करना चाहिए। कुछ पार्टी मेम्बर सफलता और विजय के उत्साह में अपना सन्तुलन नहीं कायम रख पाते और विजयों से उनका सर चकराने लगता है। विजय, सफलता और आम जनता की तारीफ़ से तथा उस थोड़ी बहुत इज्ज़त से जो आम जनता के बीच उन्हें हासिल हो गयी है, वे बेईमान, दम्भी, नौकरशाह और ढुलमुल, भ्रष्ट तथा पतित तक बन जाते हैं और इस तरह अपनी पुरानी क्रान्तिकारी भावना को पूर्ण रूप से खो देते हैं।

हमारी कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर ऐसे वैयक्तिक उदाहरण अक्सर मिलते रहते हैं। पार्टी के अन्दर इस तरह की घटनाओं की मौजूदगी हमारी कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों के लिए एक गंभीर चेतावनी होनी चाहिए, क्योंकि यह एक तरह का अनिवार्य नियम है। इस तरह की घटनाएँ पुरानी पीढ़ियों के क्रान्तिकारियों में भी मिलती हैं। लेकिन इस तरह की घटनाएँ हमारी पार्टी के अन्दर हर्गिज़ बर्दाश्त नहीं की जाएँगी। क्रान्ति की सफलता और विजय तथा स्वयं अपनी सफलता और विजय के पहले तक पुरानी पीढ़ियों के क्रान्तिकारी प्रगतिशील और उत्पीड़ित जनता की माँगों का प्रतिनिधित्व कर लेते थे और अपने क्रान्तिकारी गुणों को क़ायम रखे रहते थे। लेकिन ज्योंही क्रान्ति को, और खुद उनको, सफलता और विजय हासिल हो जाती थी वे अक्सर भ्रष्ट, नौकरशाह और पतित हो जाते थे; और इस तरह अपने क्रांतिकारी गुणों और अपने प्रगतिशील रूप को खो देते थे तथा क्रांति और सामाजिक विकास के मार्ग का रोड़ा बन जाते थे।

हम जानते हैं कि पिछले सौ वर्षों में, अथवा अपेक्षाकृत हाल के पिछले

पचास वर्षों में, चीन में ऐसे बहुत से क्रान्तिकारी हुए हैं जिन्होंने थोड़ी सी भी सफलता हासिल करते तथा किसी जिम्मेदार पद पर पहुँचते ही भ्रष्टता और पतन के चिन्ह दिखाने शुरू कर दिये हैं। इसका कारण पिछली पीढ़ियों के उन क्रान्तिकारियों का वर्ग आधार था। पिछले ज़माने के क्रान्तिकारी चूंकि शोषक वर्गों के प्रतिनिधि होते थे, इसलिए उनके लिए यह स्वाभाविक था कि उनकी क्रान्ति की विजय होते ही वे खुद शोषित जनता का उत्पीड़न करने लगते थे और इस तरह क्रान्ति और सामाजिक विकास की आगे प्रगति के मार्ग के रोड़े बन जाते थे। यह एक अनिवार्य नियम बन गया है कि पिछले ज़माने के क्रान्तिकारी, क्रान्ति के विजयी और सफल होते ही भ्रष्ट, नौकरशाह और पतित तक हो जाते थे और अपने क्रान्तिकारी गुणों को खो देते थे।

लेकिन हम कम्युनिस्टों के साथ न ऐसी बात हो सकती है, न होगी। चूँकि जिस शोषित सर्वहारा वर्ग का हम प्रतिनिधित्व करते हैं, वह किसी का शोषण नहीं करता, इसलिए वह क्रान्ति को ठीक उसके अन्त तक ले जा सकता है; सम्पूर्ण मानव जाति को पूर्णतया आज़ाद कर सकता है; और, अन्त में, मानव समाज में मौजूद भ्रष्टता, नौकरशाही तथा पतन के तमाम रूपों का अन्त कर सकता है। हर तरह की भ्रष्टता, नौकरशाही और पतन के खिलाफ़ निर्मम संघर्ष चलाने के उद्देश्य से वह सख्त संगठन और अनुशासन के ऊपर आधारित एक पार्टी और राजतंत्र का निर्माण कर सकता है; और पार्टी और राजतंत्र के अन्दर से उन तमाम तत्वों को (फिर ये तत्व कैसे ही " बड़े " क्यों न हों) जो अपने काम में भ्रष्ट तथा नौकरशाह और पतित हैं, वह बराबर बाहर करता रह सकता है ताकि पार्टी और राजतंत्र की पवित्रता क़ायम रखी जा सके।

सर्वहारा वर्ग की क्रान्तिकारी पार्टी की यह प्रमुख विशेषता पुराने ज़माने की किन्हीं भी क्रान्तिकारी पार्टियों में नहीं थी, न हो ही सकती थी। इसलिए, हमारे पार्टी मेम्बरों को इस प्रमुख विशेषता को साफ़ साफ़ समझ लेना चाहिये और इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिये कि क्रान्ति की सफलता और विजय के समय में तथा हमारी लोकप्रियता और अधिकार शक्ति की विराट बढ़ती के समय में भी हम अपने आत्मविकास को बढ़ाने के लिए और अपने सच्चे क्रान्तिकारी गुणों को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये विशेष रूप से प्रयत्नशील रहें ताकि एकदम अन्त में पहुँच कर हम पिछले ज़माने के उन क्रान्तिकारियों के मार्ग पर जाने से बच जाएँ जो सफलता प्राप्त करने के बाद पतित हो गये थे।

इस तरह से अपने को इस्पाती बनाना और अपना आत्मविकास करना हमारी पार्टी के हर मेम्बर के लिए जरूरी है, लेकिन गैर-सर्वहारा वर्ग से आये नये पार्टी मेम्बरों के लिए तो वह खास तौर से और भी जरूरी है। गैर-सर्वहारा वर्ग से आये नए पार्टी मेम्बरों के लिये वह खास तौर से ज़रूरी क्यों है? (१) ठीक इसीलिए कि ऐसे पार्टी मेम्बर गैर-सर्वहारा वर्ग से आये हैं। लेनिन ने कहा था कि मजदूर वर्ग से आये पार्टी मेम्बरों के अन्दर सर्वहारा वर्ग के स्वाभाविक गुण होते हैं। इससे नतीजा निकलता है कि दूसरे वर्गों से आये पार्टी मेम्बरों के अन्दर दूसरे वर्गों के स्वाभाविक गुण होते हैं। यद्यपि आज उन्होंने कम्युनिस्ट विचारधारा को अंगीकार कर लिया है, तथापि गैर-कम्युनिस्ट विचारधारा और आदतों के अवशेष कमोबेश मात्रा में अब भी उनके अन्दर बाकी हैं। (२) ठीक इसीलिए कि वे नये पार्टी मेम्बर हैं और अभी तक उनका अधिक इस्पातीकरण नहीं हुआ है। इसलिए, इसके पहले कि वे अच्छे क्रान्तिकारी बन सकें उन्हें क्रान्तिकारी संघर्ष में अपने को इस्पाती बनाना है तथा अपना आत्मविकास करना है।

तपाकर अपने को इस्पाती बनाना और अपना आत्मविकास करना हर पार्टी मेम्बर के लिए जरूरी है। वह चाहे गैर सर्वहारा वर्ग से आया नया पार्टी मेम्बर हो, चाहे पुराना मेम्बर हो, चाहे सर्वहारा वर्ग से आया मेम्बर हो। इसका कारण यह है कि हमारी कम्युनिस्ट पार्टी कहीं आसमान से नहीं टपक पड़ी है, बल्कि चीनी समाज के अन्दर से पैदा हुई है और हमारी पार्टी का प्रत्येक मेम्बर इसी गन्दे पुराने चीनी सामाज से आया है और अब भी इसी समाज में रह रहा है। इसलिए, हमारे पार्टी मेम्बर अपने साथ पुराने समाज की विचारधारा और आदतों के अवशेषों को भी कमोबेश मात्रा में अपने साथ लाये हैं और अब भी उन्हें पुराने समाज की गन्दी चीजों के सम्पर्क में निरन्तर रहना पड़ता है। सर्वहारा वर्ग के सबसे अगले दस्ते के रूप में अपनी शुद्धता को बनाये रखने और बढ़ाने के लिये तथा अपने सामाजिक गुणों और क्रान्तिकारी कौशल (टेकनीक) को और उच्चतर स्तर पर ले जाने के लिये हम सबके लिए अब भी जरूरी है कि अपने को इस्पाती बनाएँ और हर तरह से अपना आत्मविकास करें।

यही कारण है जिससे कि कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों को अपने आत्मविकास के लिये प्रयत्न करना चाहिये।

मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन के श्रेष्ठ शिष्य बनने की कोशिश करो!

कम्युनिस्ट पार्टी का मेम्बर होने के लिए तो सिर्फ़ उन्हीं शर्तों को पूरा करना पड़ता है जो पार्टी के विधान में दी गयी हैं। अर्थात, कोई भी आदमी जो पार्टी के कार्यक्रम और विधान को स्वीकार करता है, पार्टी मेम्बरी का चन्दा देता है और पार्टी के किसी एक संगठन के अन्दर दिये गये अपने कामों को अंजाम देता है, वह पार्टी का मेम्बर बन सकता है। ये कम से कम शर्तें हैं जो हर पार्टी मेम्बर को पूरी करनी चाहिए। इन शर्तों को पूरा किये बिना कोई पार्टी का मेम्बर नहीं बन सकता। लेकिन हमारी पार्टी के प्रत्येक सदस्य को केवल ये कम से कम योग्यताएँ ही नहीं रखनी चाहिए। उसे केवल इन कम से कम योग्यताओं से ही संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए और न अपने को उन्हीं तक सीमित रखना चाहिए; बल्कि उसे सतत प्रगति करने की ओर मार्क्सवाद-लेनिनवाद की अपनी चेतना और समझ को बढ़ाने की चेष्टा करनी चाहिए। पार्टी और क्रान्ति की तरफ़ भी यह एक कर्तव्य है जिससे किसी पार्टी मेम्बर को भागने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। इस कर्तव्य को सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) के नये विधान में भी हाल ही में शामिल कर दिया गया है। लेकिन, इस कर्तव्य को सन्तोषजनक रूप से पूरा करने के लिए हमारे पार्टी मेम्बरों को अपने को इस्पाती बनाने के तथा अपना आत्मविकास करने के प्रयत्नों को और तेज़ करना चाहिये।

इसलिए, अपने को इस्पाती बनाते और अपना आत्मविकास करते समय पार्टी मेम्बरों का लक्ष्य सिर्फ़ कम से कम योग्यताएँ हासिल करना नहीं, बल्कि अधिक से अधिक योग्यताएँ हासिल करना होना चाहिये। आज यह बताना कि ये अधिक से अधिक योग्यताएँ क्या हैं हमारे लिये बहुत मुश्किल है। लेकिन हमारे सामने मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन के शब्द और कार्य हैं, उनकी पूरी ज़िन्दगियों की सफलताएँ और गुण हैं जिन्हें हम अपना आदर्श और अपने आत्मविकास को परखने की कसौटी बना सकते हैं। आत्मविकास का मतलब अपने गुणों को हर रूप से उसी धरातल पर ऊँचा उठाना है जिस पर मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन थे। हमें उनके श्रेष्ठ शिष्य बनने की कोशिश करनी चाहिये। सर्वोच्च सोवियत के चुनाव के सम्बंध में दिये गये अपने भाषण में कॉ. स्तालिन ने कहा था :

"वोटरो, जनता को अपने प्रतिनिधियों से माँग करनी चाहिये कि वे अपने कर्तव्यों को पूरा करने के योग्य बनें; अपने काम में वे राजनीतिक कलाबाजों की सतह पर न उतर जायें; अपने पदों पर वे लेनिन की तरह के राजनीतिक कार्यकर्ता बने रहें; सार्वजनिक कार्यकर्ताओं के रूप में उनका दृष्टि-पथ उतना ही साफ़ और निश्चित हो जितना कि लेनिन का था; युद्ध के समय वे उतने ही निर्भय और जनता के दुश्मनों के प्रति उतने ही निर्मम हों जितने कि लेनिन थे; जब चीजें जटिल रूप लेने लगें और क्षितिज पर कोई खतरा मंडराने लगे तो भय से, भय के किसी भी चिन्ह से, वे उसी प्रकार मुक्त हों जिस प्रकार लेनिन थे; ऐसी जटिल समस्याओं पर निर्णय देते समय जिनके सम्बंध में व्यापक परिवर्तन करना तथा पक्ष और विपक्ष के तमाम तत्वों पर पूर्ण रूप से विचार करना आवश्यक है, वे उतने ही बुद्धिमान और दृढ़-मत हों जितने कि लेनिन थे; वे उतने ही सच्चे और ईमानदार हों जितने कि लेनिन थे; वे जनता को उसी तरह प्यार करें जिस तरह कि लेनिन करते थे।"

लेनिन से किस तरह सीखा जाय यह इस बात का सीधा-साधा वर्णन है, लेनिन के श्रेष्ठ शिष्य का यह एक चित्र है। कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों के आत्मविकास का उद्देश्य लेनिन से ठीक उसी तरह से सीखना है जिससे कि लेनिन का इसी प्रकार का शिष्य बना जा सके।

कुछ लोग कहते हैं कि मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन जैसी महान क्रांतिकारी प्रतिभाओं के महान गुणों को हासिल कर सकना असंभव है, और हमारे अपने गुणों को मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन के गुणों के धरातल तक उठा सकना भी असंभव है। वे मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन को कोई जन्मजात रहस्यमय प्राणी समझते हैं। क्या ऐसा सोचना सही है? मेरा ख़याल है, नहीं।

क्योंकि जब तक हमारे साथी सर्वहारा वर्ग की मुक्ति के लिये लड़ने वाले अगले दस्ते का काम सच्चाई, दृढ़ता, सजगता और सुसंगतता के साथ करते हैं, जब तक जीवन और दुनिया की तरफ़ उनका दृष्टिकोण सचमुच में कम्युनिस्ट दृष्टिकोण है और वे सर्वहारा वर्ग और आम जनता के आज के महान और प्रगाढ़ क्रान्तिकारी आन्दोलनों से क्षण भर के लिये भी अपने को

अलग नहीं करते तथा सीखने, तपाकर अपने को पक्का बनाने और अपना आत्मविकास करने के लिये जबरदस्त कोशिश करते रहते हैं, तब तक वे अपने गुणों को बढ़ाने में समर्थ होंगे, तथा उतने ही "स्पष्ट और निश्चित-मत," "युद्ध में उतने ही निर्भय और जनता के दुश्मनों के प्रति निर्मम," कठिनाइयों और खतरों के बीच "भय से और भय के चिन्हों से उतने ही मुक्त" और उतने ही "सच्चे और ईमानदार" हो सकेंगे जितने लेनिन थे। वे "जनता को उसी तरह प्यार कर सकेंगे" जिस तरह लेनिन करते थे। यह बात सही है कि आज हमारे साथियों में इतनी महान योग्यता और इतना व्यापक वैज्ञानिक ज्ञान नहीं है और न वैसा वातावरण है, और न सीखने की उनमें उतनी शक्ति है जितनी मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन में थी। यह बात भी सही है कि सर्वहारा क्रान्ति के सिद्धान्तों के अध्ययन में हमारे बहुत से साथी उतनी गहन विद्वता प्राप्त कर सकने की आशा नहीं कर सकते जितनी मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन ने की थी। लेकिन, इसके बावजूद, जटिल समस्याओं को हल करने के लिये और समस्याओं पर तमाम पहलुओं से विचार करने तथा पक्ष और विपक्ष के तमाम तर्कों को तौलने के लिये मार्क्सवादी-लेनिनवादी तरीके और दृष्टिकोण का उपयोग करने में वे भी अवश्य सफल हो सकेंगे। दूसरे शब्दों में इसका अर्थ हुआ कि जब तक डटकर अध्ययन करने, आत्मविकास करने और तपाकर अपने को पक्का इस्पाती बनाने के संकल्प पर हम क़ायम हैं, और जब तक आम जनता के क्रान्तिकारी आन्दोलन से अपने को हम अलग नहीं करते और मार्क्सवादी-लेनिनवादी पद्धति में पारंगत होने की कोशिश करते रहते हैं, तब तक अपने गुणों को लेनिन की तरह के राजनीतिज्ञों के गुणों के धरातल तक उठाने में हम अवश्य समर्थ होंगे। इसका अर्थ हुआ कि अपने काम और संघर्ष के दौरान में मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन की शैली का उपयोग हम कर सकते हैं, अर्थात राजनीतिक कलाबाजों की सतह पर गिरने से बचकर हम लेनिन की तरह के राजनीतिक कार्यकर्ता बने रह सकते हैं।

मेन्शियस ने कहा था: "हर आदमी **याओ** या **शुन** बन सकता है।"* इसका भी वही मतलब है। मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन ऐसे महान

---

* याओ और शुन प्राचीन चीनी इतिहास के प्रसिद्ध ऋषि हैं जो अपनी दया और विद्वता के लिए प्रख्यात हैं।

क्रान्तिकारियों के गुणों को देखकर हमें निराश न होना चाहिये और न आगे बढ़ने में हिचकिचाना चाहिये। ऐसा करने के माने तो एक "राजनीतिक कलाबाज," "एक ऐसी सड़ी लकड़ी जिससे कुछ नहीं किया जा सकता," और "एक कच्ची दीवार" * बन जाना है।

लेकिन मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन से सीखने के सम्बंध में अलग-अलग लोग अलग-अलग रवैया अख़्तियार करते हैं।

एक किस्म के लोग मार्क्सवाद–लेनिनवाद की तह तक जाए बिना ही मार्क्स और लेनिन से सीखने की कोशिश करते हैं और मार्क्सवाद-लेनिनवाद का केवल थोड़ा सा ऊपरी ज्ञान ही हासिल कर लेते हैं। यद्यपि मार्क्सवादी-लेनिनवादी साहित्य को वे बार-बार पढ़ते हैं और मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन के बहुत से बने बनाये सिद्धांतों और परिणामों को तोते की तरह रट लेते हैं, तिस पर भी ठोस और अमली समस्याओं को हल करने के लिये इन सिद्धांतों और परिणामों का एक पद्धति के रूप में इस्तेमाल वे नहीं कर पाते। इन सिद्धांतों और परिणामों को मंत्रों की तरह दोहराने से ही वे संतुष्ट हो जाते हैं। वे उन्हें लिख डालते हैं, और यंत्रवत् इस्तेमाल करते हैं। यद्यपि वे मार्क्सवाद के झण्डे के नीचे काम करते हैं और अपने को "सच्चे" मार्क्सवादी समझते हैं, लेकिन वे सच्चे मार्क्सवादी नहीं हैं, और उनके तरीके मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बिलकुल उल्टे हैं।

लेनिन की पचासवीं वर्षगाँठ के अवसर पर कॉ. स्तालिन ने एक लेख में लिखा था :

> "मार्क्सवादियों के दो दल हैं। दोनों मार्क्सवाद के झण्डे के नीचे काम करते हैं और अपने को 'सच्चे' मार्क्सवादी मानते हैं। इसके बावजूद, किसी भी तरह से वे एक ही नहीं हैं। और भी, उन के बीच एक पूरी खाई है, क्योंकि काम करने के उनके तरीक़े एक दूसरे के बिलकुल विरोधी हैं।

* 'कन्फ्यूशियन अनालेक्ट्स' की पुस्तक का ९ वां अध्याय : "दिन के समय जब त्साई यू सो रहा था, कन्फ्यूशियस ने कहा, 'सड़ी हुई लकड़ी पर नक्काशी नहीं की जा सकती; कीचड़ की दीवार पर कर्नी काम नहीं कर सकती। इस यू को झिड़कने से क्या फायदा'!"

"पहला दल आम तौर से अपने को मार्क्सवाद की बाहरी स्वीकृति, उसके एक रस्मी दावे तक ही सीमित रखता है। मार्क्सवाद के सारतत्व को समझने की अयोग्यता, या उसके लिये अनिच्छुक होने की वजह से; उसे वास्तविककता में बदल सकने की अयोग्यता, या उसके लिये अनिच्छुक होने की वजह से मार्क्सवाद के जीवित और क्रांतिकारी सिद्धांतों को वह निर्जीव और अर्थहीन सूत्रों में बदल देता है। अपने काम को वह अनुभव के ऊपर, अमली काम से मिली सीखों के ऊपर नहीं, बल्कि मार्क्स के उद्धरणों के ऊपर आधारित करता है। अपने परिणामों और आदेशों को वह प्रत्यक्ष वास्तविकताओं के विश्लेषण से नहीं, बल्कि उदाहरणों और समान ऐतिहासिक घटनाओं से निकालता है। कथनी और करनी में भेद ही इस दल की मुख्य व्याधा है।"

मार्क्स और लेनिन से सीखने के सम्बंध में एक यह दृष्टिकोण है।

एक ज़माने में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर इस तरह के लोगों की संख्या कम न थी। उनके सबसे ख़राब नुमाइन्दे ऊपर जैसे लोग बताये गये हैं, उनसे भी बदतर थे। सच में तो मार्क्सवाद--लेनिनवाद के "अध्ययन" करने का उनका कभी सच्चा इरादा ही नहीं था। मार्क्स और लेनिन के महान सर्वहारा चरित्र और उनके उच्चतम गुणों की तरफ़ उनका कोई ध्यान ही न था। वे सतही ढंग से मार्क्स और लेनिन की कुछ शैलियों की नकल करने की कोशिश करते थे। उन्होंने इधर-उधर से कुछ मार्क्सवादी लेनिनवादी शब्द सीख लिये थे। वे अपने को चीन का मार्क्स और लेनिन समझते थे और पार्टी के अन्दर मार्क्स और लेनिन बनने का दम्भ करते थे। उनका दुस्साहस यहां तक था कि उन्होंने पार्टी मेम्बरों से कहा कि हम उनकी भी उसी तरह इज्ज़त करें जिस तरह मार्क्स और लेनिन की करते हैं और "लीडरों के" रूप में उनका समर्थन करें और उनके प्रति भक्ति और वफ़ादारी दिखाएँ। उन्होंने अपने आपको स्वयं "लीडर" नियुक्त कर लिया। किन्हीं दूसरों द्वारा नामज़द किये जाने का इन्तज़ार किये बिना जिम्मेदार पदों पर वे आरूढ़ हो गये; दलपतियों की तरह पार्टी के अन्दर वे हुक्म चलाने लगे, हमारी पार्टी को सिखलाने की कोशिश करने लगे। पार्टी के अन्दर हर चीज़ का उन्होंने बेजा इस्तेमाल किया और जान-बूझ कर पार्टी मेम्बरों पर उन्होंने हमले किये, उन्हें सज़ा दी और उनके अधिकारों को कुचला। इस तरह के लोगों का मार्क्सवाद-लेनिनवाद के

"अध्ययन" करने का, अथवा मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सफलता के लिये संघर्ष करने का कोई इरादा नहीं था; बल्कि वे तो पार्टी के अन्दर घुस आये मौक़ापरस्त और कम्युनिज़्म के उद्देश्य के नाम पर दलाली करने वाले और उसके नाम को कलंकित करने वाले लोग थे। इसमें जरा भी संदेद नहीं है कि पार्टी के अन्दर ऐसे लोगों का हमारे पार्टी मेम्बरों द्वारा विरोध किया जाना चाहिये, उनका पर्दाफाश किया जाना चाहिये; और उन्हें निकाल बाहर किया जाना चाहिये। और हमारे पार्टी मेम्बरों ने उन्हें निकाल बाहर कर भी दिया है। लेकिन, क्या हम पूरे विश्वास के साथ कह सकते हैं कि पार्टी के अन्दर अब ऐसे कोई लोग नहीं हैं? नहीं, अभी हम ऐसा नहीं कह सकते।

दूसरी तरह के लोग पहली तरह के लोगों के बिलकुल उल्टे हैं। वे सबसे पहले अपने को मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन के शिष्य समझते हैं और उस सारतत्व, भावना तथा पद्धतियों में दक्षता हासिल करने की कोशिश करते हैं जिन्होंने मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन को वह बना दिया है जो वे हैं। मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन की महान व्यक्तिगत विशेषताओं को और सर्वहारा क्रान्तिकारियों के रूप में उनके गुणों को वे आदर की दृष्टि से देखते हैं और क्रान्तिकारी संघर्ष के दौरान में अत्यंत मेहनत से खुद अपने विकास के लिये वे प्रयत्न करते रहते हैं। यह देखने के लिये कि समस्याओं के बारे में तथा जनता के साथ व्यवहार करने का उनका ढंग और उनके अपने बर्ताव का रूप मार्क्सवाद-लेनिनवाद की भावना के अनुकूल है कि नहीं, वे अपनी परीक्षा करते रहते हैं। मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन की रचनाओं को वे भी बार-बार पढ़ते हैं। लेकिन जबरदस्त जोर वे जीवित वास्तविकताओं के विश्लेषण पर देते हैं। अपने काल और देश में सर्वहारा वर्ग के सम्मुख उपस्थित परिस्थिति के तमाम पहलुओं की ख़ास विशेषताओं पर वे गंभीरता से गौर करते हैं और तब खुद अपने नतीजे निकालते हैं। वे मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों और परिणामों को रट लेने से ही नहीं संतोष करते, बल्कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धांतों पर अटल रहने की कोशिश करते हैं, और मार्क्सवाद-लेनिनवाद के तरीक़ों में दक्षता हासिल करते हैं, और उनको व्यावहारिक रूप देते हैं ताकि तमाम क्रान्तिकारी संघर्षों का वे ज़ोर-शोर से संचालन कर सकें, मौजूदा परिस्थिति को बदल सकें और साथ ही साथ अपने को भी बदल सकें। उनका तमाम काम धाम और उनका संपूर्ण जीवन मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों से निर्देशित होता है और सर्वहारा वर्ग की विजय,

राष्ट्रीय आज़ादी, मनुष्य जाति की मुक्ति, कम्युनिज्म की सफलता ही उनका एकमात्र उद्देश्य होता है; इसके अलावा और कुछ नहीं।

कॉ. स्तालिन ने कहा है:

" दूसरी तरफ़, दूसरा दल मार्क्सवाद की बाहरी स्वीकृति को नहीं, बल्कि उसकी सफलता को, उसे वास्तविकता में बदलने को प्रमुख महत्व देता है। यह दल अपना ध्यान जिस मुख्य चीज़ पर केंद्रित करता है वह है मार्क्सवाद को परिस्थिति के अनुकूल अमली रूप देने के ढंगों और उपायों को निश्चित करना और परिस्थिति के बदल जाने पर इन ढंगों और उपायों को बदल देना। इस दल के सम्बंध में मार्क्स के इस कथन को पूर्ण रूप से लागू किया जा सकता है कि मार्क्सवादी केवल दुनिया की व्याख्या करके ही नहीं संतुष्ट हो सकते, बल्कि उन्हें आगे बढ़ना चाहिये और उसे बदल देना चाहिये। इस दल को बोल्शेविकों, कम्युनिस्टों का दल कहते हैं। "

मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन से सीखने के सम्बंध में यह दूसरा दृष्टिकोण है।

सिर्फ़ दूसरा दृष्टिकोण ही सही है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद के अध्ययन की तरफ़ केवल इस दृष्टिकोण को अपना कर ही कोई " शेर का ऐसा चित्र बनाने " की ग़लती से बच सकता है " जो कुत्ते की तरह दिखाई पड़े; " और केवल वही मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन की तरह का सर्वहारा, कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी बनने के लिये अपने गुणों को उन्नत कर सकता है।

जो लोग वास्तव में मेहनत से अपना विकास करने की कोशिश करते हैं और जो मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन के सच्चे शिष्य हैं वे मार्क्सवादी-लेनिनवादी दृष्टिकोण और तरीक़ों में दक्षता प्राप्त करने और क्रान्ति के समय सर्वहारा वर्ग के सम्मुख उपस्थित विभिन्न समस्याओं का हल उसी तरह से—जिस तरह से मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन ने निकाला था—निकालने की कोशिश करने के अलावा और किसी चीज़ पर विशेष ध्यान नहीं देते। इसके अलावा, वे ऐसी किसी चीज़ की पर्वाह नहीं करते कि पार्टी के अन्दर उनकी स्थिति और इज्ज़त ऊंची है या नीची। वे चीन के मार्क्स या लेनिन होने का कभी दावा नहीं करते; और न कभी यह मांग

करते हैं, और न इस भ्रम में रहते हैं कि लोग उनकी भी मार्क्स और लेनिन की तरह इज्जत करेंगे। वे अपने को इस चीज़ का अधिकारी नहीं समझते और जानते हैं कि इस तरह से सोचना मार्क्स और लेनिन के साथ विश्वासघात करना होगा और राजनीतिक कलाबाज़ों के सतह पर गिर जाना होगा। लेकिन ठीक इसी बात की वजह से और क्रान्तिकारी संघर्ष के सम्बंध में उनके साहस और उनकी अद्वितीय योग्यता के कारण उन्हें पार्टी के आम सदस्यों का स्वाभाविक आदर और समर्थन प्राप्त हो जाता है।

साथियो! निस्संदेह आत्मविकास के लिये मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्तालिन को अपना आदर्श मानकर आगे बढ़ना और उनके सबसे वफ़ादार और श्रेष्ठ शिष्य बनना आसान काम नहीं है। उसके लिये इस्पाती इच्छाशक्ति की और सर्वहारा वर्ग के उद्देश्य के कठिन संघर्ष में दृढ़ संकल्प की ज़रूरत होती है। उसके लिये मार्क्सवाद-लेनिनवाद के अध्ययन में, और आम जनता के क्रांतिकारी संघर्षों के द्वारा उसे अमली रूप देने के प्रयत्नों में सारा जीवन खपा देने की और अपने को हर प्रकार से दृढ़ और विकास-पूर्ण बनाने की ज़रूरत होती है।

आत्मविकास के पहलू और तरीक़े

साथियो! मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन के सबसे वफ़ादार और अच्छे शिष्य बनने के लिये आवश्यक है कि सर्वहारा वर्ग और आम जनता के लम्बे और महान क्रांतिकारी संघर्ष के दौरान में हम अपना हर पहलू से विकास करें। उसके लिए आवश्यक है कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों को हम जानें और इन सिद्धान्तों को अमल में लागू करना सीखें; क्रान्तिकारी रणनीति और कार्यनीति को सीखें; अध्ययन करना और विभिन्न समस्याओं को मार्क्सवाद-लेनिनवाद के दृष्टिकोण और तरीक़ों से हल करना सीखें; अपनी विचारधारा और नैतिक चरित्र को उन्नत बनाएँ; पार्टी एकता, पार्टी के अन्दरूनी संघर्ष और अनुशासन का अपने को अभ्यस्त बना लें; सख़्त काम करने और काम की शैली के सम्बंध में अपना विकास करें; विभिन्न तरह के लोगों से व्यवहार करने और आम जनता के साथ सम्बंध बनाए रखने का कौशल हासिल करें; और हर प्रकार के वैज्ञानिक ज्ञान आदि की जानकारी प्राप्त करें। हम सब कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर हैं, इसलिये हम सबको मिलकर

आत्मविकास करना है। लेकिन आज हमारे पार्टी मेम्बरों के बीच काफी बड़े अन्तर हैं। राजनीतिक चेतना के धरातल के सम्बंध में, काम के सम्बंध में, स्थिति के सम्बंध में, सांस्कृतिक स्तर के सम्बंध में, संघर्ष के तजुर्बे और सामाजिक उत्पत्ति के सम्बंध में हमारे अंदर काफी बड़ा अंतर है। इसलिये आम आत्मविकास के अलावा पार्टी के विभिन्न दलों और विभिन्न साथियों के लिये विशेष रूप में अपना विकास करने की भी ज़रूरत है।

इसलिये, आत्मविकास के अलग-अलग तरीक़े और रूप होने चाहिये। उदाहरण के लिये, हमारे बहुत से साथी अपने रोज़ाना के काम और विचारों पर नियंत्रण रखने के लिये डायरी रखते हैं, अथवा कागज़ के छोटे इश्तहारों पर अपनी व्यक्तिगत कमज़ोरियाँ और जो कुछ वे करना चाहते हैं उसे लिख लेते हैं और अपने काम करने, या रहने की जगहों पर उन लोगों की तस्वीरों के साथ जिनकी वे इज्ज़त करते हैं, उन्हें चिपका देते हैं और साथियों से कहते हैं कि वे उनकी आलोचना और देखभाल करें। प्राचीन चीन में आत्मविकास के बहुत से ढंग थे। उदाहरण के लिये, **सैंग जे** * था जो कहता था: "मैं अपने ऊपर दिन में तीन बार विचार करता हूँ।" **ओड्स की पुस्तक में** लिखा है कि आदमी को अपना आत्मविकास उसी तरह से करना चाहिये "जिस तरह कि एक जौहरी काटता, रेतता, पच्चीकारी करता और चमकाता है।" दूसरा ढंग "अपने को आत्म-विचार के द्वारा जाँचने का" और व्यक्तिगत व्यवहार के वास्ते रोज़ाना याद दिलाते रहने के लिये "अपनी मेज़ के दाहिने बाजू पर, या अपने हाथ पर कुछ सिद्धांतों को लिख लेने" का था। कन्फ्यूशियन मत के चीनी विद्वानों ने अपने शरीर और दिमाग़ का विकास करने के कई तरीक़े रखे थे। हर धर्म के आत्मविकास के अपने विभिन्न तरीक़े और रूप होते हैं। "**महान शिक्षा**" * * नाम की पुस्तक में बतायी गयी "चीज़ों की जाँच-पड़ताल, ज्ञान का विस्तार, विचारों की सच्चाई, हृदय का शुद्धिकरण, व्यक्तित्व का विकास, परिवार का नियंत्रण, राज्य की सुव्यवस्था और संपूर्ण साम्राज्य में शान्ति की

* कन्फ्यूशियस का एक शिष्य।

* * "महान शिक्षा" को कन्फ़्यूशियन मत की ऐसी पुस्तक माना जाता है जिसे पढ़कर साधारण व्यक्ति गुणों को हासिल करने की ओर आगे बढ़ सकता है।

स्थापना " का भी यही मतलब है। इस सबसे स्पष्ट है कि अपनी प्रगति करने के लिये आदमी को आत्मविकास और अध्ययन के लिये गंभीर सक्रिय प्रयत्न करने चाहिये। लेकिन इनमें से बहुत से तरीक़ों और रूपों को हम नहीं अपना सकते, क्योंकि उनमें से अधिकांश आदर्शवादी, रूपवादी, निरपेक्ष, और सामाजिक अमल से अलग हैं। ये विद्वान और धार्मिक विश्वास रखने वाले लोग मनोगत पहलक़दमी के महत्व को बढ़ा-चढ़ा कर कहते हैं। वे सोचते हैं कि जब तक वे अपने आम 'नेक इरादों' पर डटे हुए हैं और खामोशी से प्रार्थना करते रहते हैं, तब तक सामाजिक और क्रान्तिकारी अमल से दूर रहने पर भी वे मौजूदा परिस्थितियों को बदलने में समर्थ होंगे और समाज को तथा स्वयं अपने को वे बदल लेंगे। निस्संदेह ऐसा सोचना मूर्खतापूर्ण है। हम इस तरह से अपना विकास नहीं कर सकते। हम भौतिकवादी हैं और हमारे आत्मविकास को अमल से अलग नहीं किया जा सकता।

हमारे लिये जो चीज़ महत्व की है वह यह कि विभिन्न प्रकार के लोगों के तत्कालीन क्रांतिकारी संघर्षों और इन संघर्षों के विभिन्न रूपों से किन्हीं भी हालतों में हम अपने को अलग न कर लें; और, इसके अलावा, ऐतिहासिक क्रांतिकारी अनुभवों से हम सदा परिणाम निकालें और नम्रतापूर्वक उनसे सीखें और अमल में उनका इस्तेमाल करें। इसका मतलब हुआ कि अतीत काल के क्रांतिकारी अमल के अनुभवों, वर्तमान ठोस परिस्थितियों तथा नवीनतम अनुभवों के आधार पर अपना आत्मविकास स्वयं अपने अमल के दौरान में हमें करना चाहिये और इसी से अपने को इस्पाती बनाना चाहिये। हमारे आत्मविकास करने और पक्का बनने का उद्देश्य क्रांतिकारी अमल के अलावा और कुछ नहीं है। इसका मतलब हुआ कि हमें मार्क्सवाद-लेनिनवाद के दृष्टिकोण, उसके तरीक़े, और उसकी भावना को समझने का विनम्रतापूर्वक प्रयत्न करना चाहिये और सीखना चाहिये कि मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन लोगों के साथ किस तरह से बर्ताव करते थे। और इन चीज़ों को समझ लेने के बाद उन्हें फ़ौरन खुद अपने अमल में; खुद अपने जीवनों, शब्दों, कृतियों और कार्य में हमें लागू करना चाहिये। इसके अलावा, उन पर हमें अटल रहना चाहिये और अपनी विचारधारा की हर उस चीज़ को जो उनके खिलाफ़ जाती है, सुधारना चाहिये और शुद्ध करना चाहिये तथा अपने सर्वहारा और कम्युनिस्ट गुणों और विचारधारा को हर तरह से सबल बनाना चाहिये। अर्थात् अपने साथियों और जनता की सम्मतियों और आलोचनाओं को हमें

विनम्रता-पूर्वक सुनना चाहिये। अपने जीवन और काम की अमली समस्याओं का ध्यानपूर्वक अध्ययन करना चाहिये तथा अपने अनुभवों और उन सबकों का जो हमने सीखे हैं ध्यानपूर्वक सार निकालना चाहिये ताकि अपने काम की दिशा हम खुद निश्चित कर सकें। इसके अतिरिक्त इन सब चीज़ों के आधार पर हमें जाँचना चाहिये कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद की हमारी राय सही है या नहीं, और मार्क्सवाद-लेनिनवाद के तरीके का हमने सही-सही इस्तेमाल किया है या नहीं, खुद अपनी ग़लतियों और कमज़ोरियों का पता लगाकर उन्हें हमने सुधारा है या नहीं। साथ ही साथ, इस बात का भी पता हमें लगाना चाहिये कि खूब समझे-बूझे नये अनुभवों के आधार पर मार्क्सवाद-लेनिनवाद के किन्हीं ख़ास परिणामों को किस रूप में और पूर्ण, संपन्न तथा विकसित करने की आवश्यकता है। अर्थात हमें मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सार्वभौमिक सत्य का क्रान्ति के ठोस अमल के साथ मेल करना चाहिये।

हम कम्युनिस्ट पार्टी मेम्बरों के आत्मविकास के यही तरीके होने चाहिये। अर्थात, अपना विकास करने के लिए हमें मार्क्सवाद-लेनिनवाद के तरीक़ों का इस्तेमाल करना चाहिए। इस तरह से आत्म-विकास करना दूसरे तरीक़ों द्वारा आत्मविकास करने से बिल्कुल भिन्न है। दूसरे तरीक़े आदर्शवादी हैं और सामाजिक अमल से दूर हैं।

यहाँ पर, आत्मविकास करने और अपने को तपाकर इस्पाती बनाने के सिलसिले में कही जाने वाली कुछ व्यर्थ की बातों और यांत्रिकता का विरोध करना आवश्यक है।

सबसे पहले तो हमें पुराने समाज की शिक्षा और दीक्षा की सबसे बड़ी बुराई का — सिद्धांतों और व्यवहार के अलगाव का — विरोध करना चाहिये और इस बुराई को दृढ़ता-पूर्वक दूर करना चाहिये। पुराने समाज में शिक्षा और अध्ययन के दौरान में बहुत से लोग सोचते थे कि जो कुछ उन्होंने सीखा है, उस पर अमल करना अनावश्यक अथवा असंभव है। प्राचीन ऋषि-मुनियों की रचनाओं को बारम्बार पढ़ने के बावजूद वे ऐसी हरकतें करते थे जिन्हें करने में वे ऋषि-मुनि भी हज़ार बार हिचकिचाते। अपने द्वारा लिखी या कही गयी हर चीज़ में सचाई और नैतिकता की नेक सीखें देने के बावजूद उनका व्यवहार हर काम में पक्के डाकुओं और वेश्याओं जैसा होता था। कुछ "उच्च अफ़सरों" ने ऑर्डर निकाल

दिया था कि **चारों पुस्तकों** और **पाँचों ग्रंथों** * **का** अध्ययन किया जाए। लेकिन अपने रोजमर्रा के शासन कार्य में निर्ममता-पूर्वक लोगों की वे लूट-खसोट करते थे, भ्रष्टता और हत्याओं का बाज़ार गर्म करते थे और हर काम में सच्चाई और नैतिकता का गला घोंटते थे। कुछ लोगों ने **जनता के तीन सिद्धान्तों** को बार-बार घोंटा और वे **डॉ. सन यात-सेन के वसीयतनामे** को जबानी सुना सकते थे। इसके बावजूद उन्होंने जनता का उत्पीड़न किया, उन राष्ट्रों का जो हमारे साथ समानता का व्यवहार करते थे विरोध किया, और देश के दुश्मन के साथ समझौता करने या उसके सम्मुख आत्मसमर्पण करने तक की हद तक वे नीचे गिर गये। एक बार एक पुराने सम्प्रदाय के एक विद्वान ने मुझसे खुद कहा था कि कनफ्यूशियस की जिस एकमात्र उक्ति पर वह अमल कर सकता है वह यह है: "उसके लिये बढ़िया से बढ़िया खाना भी अत्यधिक बढ़िया नहीं हो सकता; क़ीमा कभी भी ज़रूरत से ज़्यादा बारीक नहीं हो सकता।" इसके बाद उसने कहा कि कनफ्यूशियस की बाकी तमाम शिक्षाओं पर न वह अमल कर सकता है, न उन पर अमल करने की बात उसने कभी सोची ही है। तब फिर शिक्षा कार्य और ऋषि-मुनियों की शिक्षाओं के अध्ययन के कार्य को क्यों वे जारी रखना चाहते हैं? दिखाने के लिये उनका इस्तेमाल करने के अलावा इसमें उनके निम्न उद्देश्य हैं:

(१) शोषितों को उत्पीड़ित करने के लिए इन शिक्षाओं का इस्तेमाल करना और सच्चाई और नैतिकता के नाम पर सांस्कृतिक रूप से पिछड़े हुए लोगों को धोखा देना और उनका दमन करना; (२) उनके ज़रिए और अच्छी सरकारी नौकरियाँ हासिल करना, रुपया कमाना और शोहरत हासिल करना तथा अपने मां-बाप का नाम उजागर करना। इन उद्देश्यों के अलावा, उनके काम-काज ऋषियों की शिक्षाओं से किसी प्रकार बंधते नहीं थे। पुराने समाज के जिन ऋषियों-विद्वानों की ये "विद्वान" और "पण्डित" "पूजा" करते थे उनकी तरफ़ उनका यही रवैया था और वे उनको इसी तरह मानते थे। निस्संदेह मार्क्सवाद-लेनिनवाद तथा अपने प्राचीन विद्वानों से विरासत में पायी हुई उत्तम और उपयोगी शिक्षाओं के अध्ययन के सम्बंध में हम

---

* दर्शन, इतिहास, कविता आदि की कन्फ्यूशियन मत की ९ प्राचीन चीनी पुस्तकें।

कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर इस तरह का रवैया नहीं अख़्तियार कर सकते। हम जो कुछ कहते हैं हमें उसी पर अमल करना चाहिए। हम ईमानदार और सच्चे हैं और हम अपने को, जनता को, या अपने पूर्व-पुरुषों को धोखा नहीं दे सकते। हम कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों की यही प्रमुख विशेषता और, साथ ही साथ, एक महान् गुण है।

साथियो! क्या यह संभव नहीं है कि पुराने समाज की बद-विरासत अब भी हमको थोड़ा-बहुत प्रभावित करती है? वह ज़रूर हमको प्रभावित करती है। निस्संदेह आप विद्यार्थियों में यहाँ कोई ऐसा नहीं है जो मार्क्सवाद का अध्ययन उच्च सरकारी नौकरियाँ हासिल करने, रुपया कमाने, या शोषितों का उत्पीड़न करने के लिये करता है। आप मार्क्सवाद का अध्ययन मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण की व्यवस्था का अन्त करने के लिये करते हैं। फिर भी, मैं इस बात की गारंटी नहीं कर सकता कि आपने जो कुछ सीखा है आप उसीके मुताबिक अमल करते हैं। क्या आपमें ऐसे कोई नहीं हैं जो इस तरह से सोचते हों? अर्थात जिनके विचार, शब्द, कार्य और जीवन मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों से निर्देशित न होते हों और जो जिन सिद्धान्तों को आपने सीखा है उनको व्यवहार में न लाते हों? फिर क्या आपमें ऐसे कोई नहीं हैं जो यह सोचते हों कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के अध्ययन और गंभीर सिद्धान्तों के अध्ययन का उद्देश्य तरक़्क़ी पाना, अपनी शान बघारना और अपने को मशहूर बनाना है? मेरे पास इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि आपमें से कोई ऐसा नहीं है जो इस तरह से सोचता हो। लेकिन इस तरह का सोचना मार्क्सवाद से मेल नहीं खाता और उसके मानी होते हैं कि मार्क्सवादी सिद्धान्तों और मार्क्सवादी अमल के बीच अन्तर है। सिद्धान्तों के अध्ययन के सम्बंध में हमें कोई आपत्ति नहीं है। इसके अलावा, हमें सिद्धान्तों का अध्ययन अवश्य करना चाहिये। लेकिन जो कुछ हमने सीखा है उसको हमें अमल में लाना चाहिये। हमारे अध्ययन का एकमात्र उद्देश्य यही है कि हमने जो कुछ सीखा है उसको अमल में लायें। पार्टी और क्रान्ति की विजय के लिये ही हम अध्ययन करते हैं।

उदाहरण के लिये, आप बहुत बार नारा लगाते हैं कि "सिद्धांतों और अमल का मेल करो।" लेकिन आपने जो सिद्धांत सीखे हैं उनका खुद अपने अमल से क्या आपने मेल कराया है? क्या आप लोगों में अब भी ऐसे कुछ लोग नहीं हैं जिनका अमल मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों से पूर्णतया

भिन्न है ? ऐसा लगता है कि आप लोगों में अब भी ऐसे लोग हैं जो सिद्धान्तों और अमल के मेल को निम्न प्रकार से समझते हैं : वे चाहते हैं कि जो साथी बाहर काम करते हैं वे उनके पास स्कूल में आयें और अपने अनुभवों की रिपोर्ट दें जिससे कि आप देख सकें कि दूसरे लोग किस तरह सिद्धान्तों और अमल का मेल करते हैं। निस्संदेह यह सिद्धान्तों और अमल का मेल है, लेकिन यह उनका है, आपका नहीं। मेरा ख़याल है कि आप जब नारा लगाते हैं तो उसका मतलब यह होना चाहिये कि जिन सिद्धान्तों को आप सीखते हैं उनका खुद अपने अमल से आप मेल करें। इस बात को अगर आप इस ढंग से नहीं समझते तो आपके नारा लगाने से क्या फायदा ? मैं एक दूसरा उदाहरण दूंगा। अपने को तपाकर पक्का बनाने के बारे में आपने बहुत से नारे लगाए हैं। लेकिन क्या आपमें ऐसे कुछ लोग नहीं हैं जो यह जाहिर कर चुके हैं कि पक्के होने से अभी वे बहुत दूर हैं; अथवा जो यह दिखा चुके हैं कि जब असली परीक्षा की घड़ी आयी, जब उन्हें निराशा हुई, या जब उनकी आलोचना की गयी, या उन्हें सज़ा दी गयी, उनके ऊपर पब्लिक की राय का दबाव पड़ा और जनता के विशाल बहुमत ने सही या ग़लत ढंग से उनके कामों पर नजर रखी तो वे खड़े न रह सके। वे भूल गये कि कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर को दृढ़ इच्छाशक्ति और स्पष्ट दृष्टिकोण आदि रखना चाहिये। वे पस्तहिम्मत और किं-कर्तव्य विमूढ़ हो गये। क्या ये अपने को इस्पाती बनाने और आत्मविकास करने के सम्बंध में खोखली बातों के उदाहरण नहीं हैं ?

सच बात तो यह है कि स्कूल में आपको जो ट्रेनिंग मिलती है और आप जो अध्ययन करते हैं वे भी इस्पाती बनाने और आत्मविकास करने के रूप हैं। स्कूल में ट्रेनिंग देकर और पढ़ाकर हम आपको उपयोगी कार्यकर्ता और पार्टी-वर्कर बनाने की कोशिश कर रहे हैं। आपको सिर्फ़ कुछ सूक्ष्म "सिद्धांत" और मार्क्सवादी-लेनिनवादी शब्दावली और सूत्र नहीं सिखा रहे हैं। इसके अलावा, हम चाहते हैं कि आप खुद अपना विकास करें और अपने को तपाकर निखारें ताकि आप ऐसे कार्यकर्ता बन सकें जो सही ढंग से सोचते हैं, दृढ़ इच्छाशक्ति रखते हैं, और सब प्रकार की जटिल समस्याओं को अमली ढंग से हल कर लेते हैं। लेकिन, मैंने अक्सर यह कहते सुना है कि स्कूल में पढ़ना अपने को पक्का बनाने का तरीक़ा नहीं है और अगर कोई अपने को पक्का बनाना चाहता है और अपना विकास करना चाहता है तो उसे चाहिए कि स्कूल छोड़ दे और अमली काम करे। साथियो ! अपने को पक्का

बनाने और अपना विकास करने का काम सारी जिन्दगी का और बहुमुखी काम है। उनकी जरूरत (इस्पातीकरण व आत्मविकास की—अनु.) हर जगह, हर समय पर और सब समस्याओं के सम्बंध में होती है। हम यह नहीं कह सकते कि अपने को पक्का बनाने और अपना विकास करने के काम को हम सिर्फ कुछ खास समयों पर, कुछ खास जगहों पर, कुछ खास मसलों के सम्बंध में ही कर सकते हैं; दूसरे समयों पर, दूसरी जगहों पर, और दूसरी समस्याओं के सम्बंध में नहीं कर सकते; गोकि हम इस बात से इनकार नहीं करते कि कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों को मुख्यतया आम जनता के अमली संघर्ष में ही अपने को पक्का बनाना चाहिये और अपना विकास करना चाहिये।

इसका मतलब हुआ कि आत्मविकास की समस्या के सम्बंध में आदर्शवाद, व्यर्थ की बकवास तथा यांत्रिकता का हम विरोध करते हैं। अर्थात, तपने की क्रिया का सामना करने की हममें शक्ति होनी चाहिये। स्कूल में, जनता के बीच, और पार्टी के अन्दर और बाहर दोनों जगहों के संघर्षों में अपने को हमें पक्का बनाना चाहिये। विजय और पराजय दोनों तरह की हालतों में, सभी परिस्थितियों में हमें अध्ययन करना चाहिये और अपना विकास करना चाहिये।

मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्तों के अध्ययन तथा पार्टी मेम्बरों के विचारधारात्मक विकास के बीच सम्बंध

हमारे पार्टी मेम्बरों के अन्दर सोचने का यह तरीक़ा तुलनात्मक रूप से काफ़ी प्रचलित है कि दृढ़ और शुद्ध सर्वहारा कम्युनिस्ट दृष्टिकोण का, कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर की मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों और तरीके की समझदारी और दक्षता से कोई सम्बंध नहीं है। वे सोचते हैं कि यद्यपि उनका वर्ग दृष्टिकोण बहुत पक्का नहीं है और उनकी विचारधारा बहुत शुद्ध नहीं है (उनके अन्दर दूसरे वर्गों की विचारधारा के अवशेष अब भी बाक़ी हैं, और वे अब भी स्वार्थी हैं और भौतिक सुख-संपदा की इच्छा रखते हैं, इत्यादि), तिस पर भी वे मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धांतों और तरीक़े को पूर्ण रूप से समझ सकते हैं और उनमें दक्षता हासिल कर सकते हैं। कुछ साथी सोचते हैं कि केवल अपनी बुद्धि, योग्यता और अध्ययन के द्वारा मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धांतों और तरीक़ों में पूर्ण रूप से पारंगत हुआ जा सकता है। साथियो! सोचने का यह ढंग ग़लत है।

सोवियत दार्शनिक मितिन की निम्न राय बिलकुल सही है :

"समझ की गहराई के अन्तरों को समझने के लिये वर्ग-व्याख्या की जरूरत है। उदाहरण के लिये, वर्तमान काल में, पूंजीवाद के पतन के युग के काल में, पूंजीपति वर्ग का कोई विचारक कितना भी प्रतिभाशाली क्यों न हो, किन्तु उसकी सृजनात्मक क्षमता, विकास के नियमों के अन्दर गहरे तक पैठने की उसकी योग्यता उसके वर्ग स्वरूप से, उस वर्ग के दकियानूसीपन से जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है, 'सीमित' है। भविष्य को देख सकने की पूंजीपति वर्ग की अक्षमता पूंजीवादी सिद्धान्तकारों द्वारा सामाजिक विकास की वास्तविकता की समझ की सीमाओं को निर्धारित करती है, उसे संकुचित बना देती है और उसकी गहराई को कम कर देती है। जो वर्ग इतिहास के रंग-मंच से जा रहे हैं उनके सिद्धान्तकार, वे चाहे कितने ही प्रतिभाशाली क्यों न हों, वास्तव में प्रगाढ़ वैज्ञानिक परिणाम निकलाने और आविष्कार करने की स्थिति में नहीं हैं। इस मार्क्सवादी सत्य को विज्ञान और दर्शन के विकास के संपूर्ण इतिहास ने सच्चा साबित कर दिया है।"

(**द्वंद्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद,**
भाग १, रूसी संस्करण, पृष्ठ २८५, मास्को, १९३४)

मार्क्सवाद-लेनिनवाद सर्वहारा क्रान्ति का विज्ञान है। पूर्ण रूप से उसे वे ही समझ सकते हैं और उसमें पारंगत हो सकते हैं जो पूर्ण रूप से सर्वहारा दृष्टिकोण को अपनाते हैं और जो सर्वहारा वर्ग के आदर्शों को खुद अपना आदर्श मानते हैं। अगर किसी में सर्वहारा वर्ग के दृढ़ दृष्टिकोण और शुद्ध आदर्शों की कमी है तो केवल अपनी बुद्धि और कठिन अध्ययन के द्वारा सर्वहारा वर्ग के मार्क्सवादी विज्ञान को पूर्ण रूप से समझ सकना और उसमें पारंगत हो सकना उसके लिये असंभव है। यह भी एक स्पष्ट सत्य है। इसलिये मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों और तरीके का आज अध्ययन करते समय जरूरी है कि हमारा अध्ययन विचारधारात्मक विकास करने और अपने को पक्का बनाने की क्रिया के साथ-साथ चले; क्योंकि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों और तरीकों के अभाव में हमारे विचारों और कार्यों का निर्देशन करने के लिये हमारे पास कोई चीज नहीं होगी और हमारा विचारधारात्मक विकास भी असंभव होगा। ये दोनों एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं और उन्हें जुदा नहीं किया जा सकता।

अक्सर मज़दूर वर्ग से आये कुछ ऐसे श्रेष्ठ पार्टी मेम्बरों को हमने देखा है जो मार्क्सवाद लेनिनवाद के सिद्धान्तों का, उन लोगों की अपेक्षा जो सिद्धान्तों का विशेष अध्ययन कर रहे हैं, कम ज्ञान रखते हैं। उनसे अगर मार्क्सवादी-लेनिनवादी सूत्रों को या मार्क्सवादी-लेनिनवादी पुस्तकों के उद्धरणों को सुनाने के लिये कहा जाए तो वे अवश्य इतने योग्य साबित न होंगे। लेकिन जब मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों के अध्ययन की बात आती है तो देखा जाता है कि अगर उन्हें ऐसे शब्दों में बताया जाय जिन्हें वे समझते हैं तो उन पार्टी मेम्बरों की अपेक्षा जो विद्यार्थी वर्ग से आये हैं, उनकी दिलचस्पी ज़्यादा गहरी और उनकी समझ अधिक प्रगाढ़ होती है। उदाहरण के लिये, अतिरिक्त मूल्य के सिद्धान्त वाले **कैपीटल** (पूंजी-अनु.) के अध्याय को समझने में कुछ पार्टी मेम्बरों को बहुत कठिनाई होती है; लेकिन मजदूर वर्ग से आये मेम्बरों के लिये वह इतना कठिन नहीं होता क्योंकि उत्पादन की क्रिया में मज़दूरी और काम के घण्टों का हिसाब पूँजीपति कैसे करते हैं, वे किस तरह मुनाफ़ा काटते हैं और किस तरह से पुनर्उत्पादन, इत्यादि को वे बढ़ाते हैं, इन्हें मजदूर-भली भांति समझते हैं। इसलिये अक्सर ऐसा होता है कि मार्क्स के अतिरिक्त मूल्य के सिद्धान्तों को दूसरे पार्टी मेम्बरों की अपेक्षा वे अधिक गहराई से समझते हैं। ख़ास तौर से विभिन्न अमली समस्याओं को देखने और हल करने के सिलसिले में दूसरों की अपेक्षा वे बहुधा ज़्यादा ठीक, ज़्यादा सही और मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों के ज़्यादा करीब होते हैं। ऐसा क्यों होता है? ऐसा इसलिये होता है कि वे दृढ़, शुद्ध, सर्वहारा कम्युनिस्ट दृष्टिकोण और आदर्श रखते हैं; चीज़ों की तरफ़ उनका दृष्टिकोण वस्तुगत होता है; और उनके दिमाग़ों में पहले के बने-बनाए किसी प्रकार के विचार, निजी समस्याओं या अपवित्र बातों के सम्बंध में कोई चिन्ताएँ, नहीं होतीं। इसलिये चीज़ों की सच्चाई को वे फौरन देख लेते हैं और बिना किसी हिचकिचाहट, या कठिनाई के सच्चाई की वे साहस-पूर्वक रक्षा करते हैं।

हम कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों के बीच अगर अब भी ऐसे कुछ लोग हैं जिनका वर्ग दृष्टिकोण बहुत स्पष्ट और दृढ़ नहीं है, जिनकी विचारधारा सही और विशुद्ध नहीं है, जिनके अन्दर दूसरे वर्गों और पुराने समाज की विभिन्न तरह की विचारधाराओं, आदतों और विद्वेषों के अवशेष अब भी किसी मात्रा में बाकी हैं और जो अब भी व्यक्तिगत स्वार्थों और निजी मतलबों के शिकार हैं और सब प्रकार की भौतिक सुख-समृद्धि की इच्छाएँ और स्वार्थी तमन्नाएँ

रखते हैं तो यह निश्चय है कि जब वे मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धांतों और तरीके का अध्ययन करेंगे तो मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धांतों और परिणामों की उनकी तमाम चीजों से टक्कर होगी। उस हालत में या तो वे अपनी इन चीजों पर काबू करने की कोशिश करेंगे, या अपने विद्वेषों के अनुकूल बनाने के लिये मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों और परिणामों को तोड़ने-मरोड़ने की कोशिश करेंगे और इस तरह से मार्क्सवाद-लेनिनवाद को समझने से वंचित रह जायेंगे। मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सारतत्व तक पैठने में, मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सारतत्व को — जिसका कि एक विशिष्ट वर्ग स्वरूप है — ग्रहण करने में, और इस सारतत्व को अपना एक अस्त्र बनाने में वे असमर्थ होंगे; क्योंकि इस तरह के अस्त्र का उनके पहले की वर्ग विचारधारा से कोई सम्बंध नहीं है।

और भी, सर्वहारा क्रान्ति के दौरान में जब उन्हें विभिन्न अमली समस्याओं को हल करना पड़ेगा तो मार्क्सवाद-लेनिनवाद के आधार पर निकाला गया इन समस्याओं का हल अक्सर उनकी आदतों और विद्वेषों से मेल नहीं खायगा और वह उनके निजी स्वार्थों के विरुद्ध होगा। ऐसी परिस्थितियों में उनका क्षुद्र, कमजोर, हिचकिचाहट-भरा और अस्थिर रूप सामने आ जाएगा। वे समस्याओं को उचित रूप से, ठीक-ठीक, और वस्तुगत ढंग से हल करने में, या बिना किसी कठिनाई के सत्य को परखने में, या सत्य की साहस-पूर्वक रक्षा करने में असमर्थ होंगे। जानकर या अनजाने में वे सत्य को छिपाने या तोड़ने-मरोड़ने तक की कोशिश कर सकते हैं। साथियो! ऐसे उदाहरण बहुत कम, या अनोखे नहीं हैं, बल्कि आम तौर से मिलते रहते हैं।

इस तरह हम कह सकते हैं कि अगर किसी कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर का दृष्टिकोण स्पष्ट, दृढ़, सही और शुद्ध नहीं है और वह सर्वहारा वर्ग की विचारधारा नहीं रख सकता तो मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों और तरीकों को पूर्ण रूप से समझना और उनमें पारंगत होना और खुद अपने क्रान्तिकारी संघर्ष में एक अस्त्र के रूप में उसका इस्तेमाल कर सकना उसके लिए असंभव होगा।

इसलिये कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों के आत्मविकास में प्रमुख और प्रथम स्थान विचारधारात्मक विकास का होना चाहिये जो कि दूसरे हर तरह के विकास का आधार है। इसके बारे में मैं आगे बात करूंगा।

अध्याय : दो

पार्टी मेम्बरों का सैद्धान्तिक आत्मविकास

साथियो ! कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों के विचारधारात्मक विकास की समस्या के सम्बंध में बात करते समय मैं अपनी पार्टी के कुछ मेम्बरों की विचारधारा में प्रगट हुई चन्द दृश्य चीजों को आधार बनाने की कोशिश करूंगा। इस सम्बंध में पार्टी मेम्बरों की एकदम बुनियादी विचारधारा की बात मैं करूँगा।

आखिरकार, विचारधारात्मक विकास का मतलब क्या है ? मेरा खयाल है कि मुख्यतया वह हमारे दिमागों में सर्वहारा वर्ग की विचारधारा और दूसरी विचारधाराओं के बीच एक संघर्ष है। एक तरफ़ जीवन के सम्बंध में कम्युनिस्ट दृष्टिकोण तथा कम्युनिस्टों के विश्व दृष्टिकोण के और दूसरी तरफ़ जीवन के सम्बंध में दूसरे तमाम दृष्टिकोणों तथा दूसरे विश्व दृष्टिकोणों के बीच हमारे दिमागों में वह एक संघर्ष है। वह पार्टी मेम्बरों के व्यक्तिगत हितों और उद्देश्यों और पार्टी तथा जनता के हितों और उद्देश्यों की दो कल्पनाओं के बीच संघर्ष है।

मेरा खयाल है कि यह किसी समाज के अन्दर मौजूद विभिन्न वर्गों की आर्थिक और राजनीतिक माँगों को प्रतिबिम्बित करनेवाले विरोधी विचारों का संघर्ष है। जहाँ तक हमारे पार्टी मेम्बरों की विचारधारा का सम्बंध है, तो इस संघर्ष का परिणाम होना चाहिये कि उनके दिमाग की दूसरी विचारधाराओं पर सर्वहारा विचारधारा की विजय हो और दूसरी विचारधाराएँ निर्मूल हो

जाएँ; और जीवन के सम्बंध में तमाम दूसरे दृष्टिकोणों और विश्व दृष्टिकोणों पर जीवन सम्बंधी कम्युनिस्ट दृष्टिकोण और कम्युनिस्ट विश्व दृष्टिकोण की विजय हो और वे तमाम (ग़ैर-कम्युनिस्ट दृष्टिकोण–अनु०) निर्मूल हो जाएँ; पार्टी मेम्बरों के व्यक्तिगत हितों और उद्देश्यों के ख़याल पर पार्टी के, क्रान्ति के, तथा सर्वहारा वर्ग और मनुष्य जाति की मुक्ति के सामान्य हितों और उद्देश्यों के ख़याल की विजय हो और वह (व्यक्तिगत ख़याल—अनु०) निर्मूल हो जाये। अगर उसका परिणाम इससे भिन्न हो तो उसका मतलब होगा कि पहले बताई गई चीज़ों ने बाद में बताई गई चीज़ों पर विजय प्राप्त कर ली है और तब वह पार्टी मेम्बर पिछड़ जाएगा और कम्युनिस्ट पार्टी मेम्बर की योग्यता से भी वह हाथ धो बैठेगा। हम पार्टी मेम्बरों के लिये यह परिणाम भयानक और सत्यानाशी होगा।

पार्टी में और पार्टी के बाहर दोनों जगहों पर, तमाम विचारधारात्मक, राजनीतिक और आर्थिक संघर्षों के दौरान में ही अपने विचारों को हम कम्युनिस्ट पक्का बनाते हैं और क्रान्ति की वास्तविकताओं को समझने लगते हैं। साथ ही साथ, क्रांतिकारी अमल से पाए हुए अनुभवों का हमें बराबर सारांश निकालते रहना चाहिये और उनको ग्रहण करते रहना चाहिये तथा यह देखने के लिये कि हमारे खुद के विचार मार्क्सवाद-लेनिनवाद के तथा सर्वहारा वर्ग की मुक्ति के संघर्ष के हितों के पूर्णतया अनुकूल हैं या नहीं, हमें उनकी जाँच करते रहना चाहिये। इस तरह के अध्ययन, आत्मचिंतन और आत्मपरीक्षण के क्रम में अपने तमाम ग़लत विचारों को ख़तम कर देने और कम्युनिज़म के हितों के विरुद्ध जानेवाले हलके से हलके विचार को भी विकसित होने के पहले ही निर्मूल कर देने को ही हम विचारधारात्मक आत्मविकास कहते हैं। यह भी एक प्रकार से विचारधारात्मक रूप में अपने को पक्का बनाना है।

साथियो! जैसा कि आप जानते हैं मनुष्य के तमाम कार्यों का निर्देशन उसकी विचारधारा से होता है। और भी, अपने विचारों और कार्यों के आम निर्देशक के रूप में हर मनुष्य का जीवन के सम्बंध में और दुनिया के सम्बंध में अपना एक दृष्टिकोण होता है। इसलिये, अपने विचारधारात्मक विकास के लिये प्रयत्न करते समय हम कम्युनिस्टों को सबसे पहले जीवन के सम्बंध में और दुनिया के सम्बंध में अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से निश्चित कर लेना चाहिये क्योंकि जीवन के सम्बंध में हमारे दृष्टिकोण और हमारे विश्व दृष्टिकोण से हमारे तमाम विचारों और कार्यों का ताल्लुक है।

इसे समझना जरूरी है कि कम्युनिज़्म का उद्देश्य मनुष्य जाति के इतिहास का सबसे महान और सबसे कठिन उद्देश्य है

हम कम्युनिस्टों के जीवन के प्रति दृष्टिकोण और विश्व दृष्टिकोण को सर्वहारा वर्ग की विचारधारा की पद्धति का प्रतिनिधित्व करना चाहिये। जीवन के प्रति और विश्व के प्रति वही कम्युनिस्ट दृष्टिकोण है और वही हम कम्युनिस्टों की कार्य-पद्धति है। इस विषय पर मार्क्सवादी-लेनिनवादी साहित्य में और खास तौर से दर्शन पर लिखी गयी मार्क्स और लेनिन की पुस्तकों में काफ़ी विस्तार से विचार किया गया है और चूँकि उसके बारे में आप बहुत कुछ सीख चुके हैं इसलिये उसके बारे में आज मैं कोई बात नहीं करूँगा। यहाँ पर, संक्षिप्त में, मैं सिर्फ़ यही बताऊंगा कि अपने खुद के उद्देश्य को हमें किस तरह समझना चाहिये। आखिरकार, कम्युनिज़्म का उद्देश्य क्या है और हम कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर अपने उद्देश्य को किस तरह आगे बढ़ायें?

हम कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों का सबसे बुनियादी और आम कर्त्तव्य क्या है? जैसा हर कोई जानता है कि यह कर्त्तव्य है कम्युनिज़्म की स्थापना करना, वर्तमान दुनिया को कम्युनिस्ट दुनिया में बदल देना। कम्युनिस्ट दुनिया अच्छी है या नहीं? हम सब जानते हैं कि वह बहुत अच्छी है। ऐसी दुनिया में न शोषक होंगे, न उत्पीड़क, न जमींदार, न पूंजीपति, न साम्राज्य-वादी, न फासिस्ट। उसमें उत्पीड़ित और शोषित लोग न होंगे; अंधकार, अज्ञान, पिछड़ापन, आदि नहीं होंगे। ऐसे समाज में तमाम मानव प्राणी निःस्वार्थी और समझदार कम्युनिस्ट बन जाएँगे जिनकी संस्कृति और योग्यता का स्तर बहुत ऊँचा होगा। मनुष्य-जाति में पारस्परिक सहायता और प्रेम की भावना व्याप्त होगी। आपसी धोखा-धड़ी, आपसी मनमुटाव, एक दूसरे की मारकाट और युद्ध, आदि जैसी तर्कहीन चीज़ों की उस दुनिया कोई जगह नहीं होगी। ऐसा समाज निस्संदेह मनुष्य जाति के इतिहास में सबसे उत्तम, सबसे सुंदर और सबसे उन्नत समाज होगा। कौन कहेगा कि ऐसा समाज अच्छा नहीं? यहाँ पर प्रश्न उठता है—क्या कम्युनिस्ट समाज की स्थापना की जा सकती है? हमारा जवाब है—हाँ। इस सम्बंध में मार्क्सवाद–लेनिनवाद के पूरे सिद्धान्तों में एक वैज्ञानिक व्याख्या दी गई है जिससे कि इसके बारे में किसी प्रकार के सन्देह की गुंजाइश नहीं रह जाती। वे हमें बताते हैं कि मनुष्य-जाति के श्रेणी संघर्ष के अंतिम परिणाम

के रूप में ऐसे समाज की स्थापना होना अवश्यम्भावी है। सोवियत संघ में समाजवाद की विजय ने भी हमें उसका एक प्रत्यक्ष प्रमाण दे दिया है। इसलिये हमारा कर्तव्य है कि इस कम्युनिस्ट समाज की, जिसका कि क़ायम होना मनुष्य-जाति के इतिहास में अवश्यम्भावी है, हम जल्दी से जल्दी स्थापना करें।

यह एक पहलू है। यह हमारा आदर्श है।

लेकिन हमें दूसरे पहलू को भी समझना चाहिये। वह यह है कि इस बात के बावजूद कि कम्युनिज़्म की स्थापना की जा सकती है और होगी, उसके खिलाफ़ अब भी ज़बर्दस्त दुश्मन खड़े हुए हैं। कम्युनिज़्म की स्थापना हो सके इसके पहले इन दुश्मनों को पूर्ण और अंतिम रूप में हर प्रकार से हराना ज़रूरी है। इस भांति, कम्युनिज़्म का उद्देश्य एक लम्बे, कटु, कठिन किन्तु विजयी संघर्ष की क्रिया है। ऐसे संघर्ष के बिना कम्युनिज़्म की स्थापना नहीं हो सकती। निस्संदेह यह संघर्ष, जैसा कि कुछ लोग कहते हैं, एक "आकस्मिक" सामाजिक घटना, या कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे कि कुछ कम्युनिस्टों ने जो कि "स्वभाव से ही विद्रोही होते हैं," पैदा कर दिया है। इसके विपरीत, एक वर्ग समाज के विकास के दौरान में वह एक अनिवार्य घटना है। वह ऐसा वर्ग संघर्ष है जिससे बचा नहीं जा सकता। कम्युनिस्ट पार्टी का जन्म होना, संघर्ष में कम्युनिस्टों का हिस्सा लेना तथा संघर्ष का उनके द्वारा संचालन किया जाना भी अनिवार्य घटनाएँ हैं जो सामाजिक विकास के नियमों के अनुकूल हैं। साम्राज्यवादियों, फासिस्टों, पूँजीपतियों और ज़मींदारों ने, संक्षेप में, शोषकों ने मानव जाति के विशाल बहुमत का उत्पीड़न और शोषण चूँकि इस हद तक किया है कि उत्पीड़ित और शोषित लोगों का जिन्दा रहना भी मुश्किल हो गया है, इसलिए इस उत्पीड़न और शोषण का विरोध करने के उद्देश्य से एक होने के सिवा उनके लिए और कोई चारा नहीं है; वरना न वे जिन्दा रह सकते हैं, और न अपना विकास कर सकते हैं। इसलिए यह संघर्ष पूर्णतया एक स्वाभाविक और अटल घटना है। एक तरफ़ तो हमें इस चीज़ को समझ लेना चाहिए कि कम्युनिज़्म का उद्देश्य मानव जाति के इतिहास का महानतम उद्देश्य है क्योंकि अन्त में कम्युनिज़्म वर्गों का अन्त कर देगा, संपूर्ण मानव-जाति को मुक्त कर देगा और मानव समाज को सुख-समृद्धि के ऐसे शिखरों पर पहुँचा देगा जिसका मानव जाति के इतिहास में कोई उदाहरण नहीं मिलता। दूसरी तरफ़, हमें यह भी समझ लेना चाहिए कि कम्युनिज़्म का उद्देश्य मानव जाति के इतिहास में सबसे कठिन उद्देश्य है। क्योंकि कम्युनिज़्म

को एक अत्यंत शक्तिशाली दुश्मन पर—जनता के बीच अपने तमाम प्रभावों, परम्पराओं और रीति-रिवाज़ों, आदि के साथ जमे हुए शोषक वर्गों पर—विजय प्राप्त करनी है।

सर्वहारा वर्ग और शोषित वर्गों पर और उत्पीड़ित जनता के व्यापक अंगों पर भरोसा करते हुए तथा आम जनता के क्रान्तिकारी संघर्ष के संचालन के और समाज को कम्युनिज़्म के महान लक्ष्य की ओर बढ़ाने के कार्य में मार्क्सवाद-लेनिनवाद की रणनीति और कार्यनीति का इस्तेमाल करते हुए, अन्त में, कम्युनिस्ट पार्टी अवश्य विजयी होगी। क्योंकि मानव जाति के सामाजिक विकास की ऐतिहासिक क्रिया कम्युनिस्ट समाज की ही ओर बढ़ रही है; क्योंकि विश्व सर्वहारा वर्ग तथा शोषित और उत्पीड़ित जनता के समुदाय में ऐसी महान क्रान्तिकारी शक्तियाँ छिपी हुई हैं कि गोलबंद, एक और संगठित हो जाने पर वे शोषक वर्गों तथा पतनोन्मुख पूंजीवाद की तमाम प्रतिक्रियावादी शक्तियों को तमाम दुनिया में हरा सकती हैं; और क्योंकि कम्युनिस्ट पार्टी और सर्वहारा वर्ग ऐसी शक्तियाँ हैं जो उठ रही हैं और विकसित हो रही हैं। "केवल वही चीज़ जो उठ रही है और विकसित हो रही है, अजेय है" (**सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बो.) का इतिहास**)। इस बात को चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के पूरे इतिहास से और अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट और मज़दूर वर्ग के आन्दोलन के पूरे इतिहास से पूर्णतया साबित किया जा सकता है।

जहाँ तक वर्तमान परिस्थिति की बात है तो पृथ्वी के छठे भाग पर—सोवियत संघ में—कम्युनिज़्म एक महान विजय प्राप्त कर चुका है। दुनिया के तमाम देशों में कम्युनिस्ट आन्दोलन बहुत तेज़ी से बढ़ रहे हैं और विकसित हो रहे हैं। मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों से लैस जंगजू कम्युनिस्ट पार्टियों की तमाम देशों में स्थापना हो चुकी है और विश्व सर्वहारा वर्ग तथा शोषित, उत्पीड़ित जनता की शक्ति को तेज़ी के साथ निरंतर संघर्षों में संगठित और संयुक्त किया जा रहा है। इसलिए, कम्युनिज़्म का उद्देश्य तमाम दुनिया में एक शक्तिशाली और अजेय शक्ति बन गया है। इसमें रत्ती भर भी संदेह नहीं है कि यह शक्ति बढ़ती और विकसित होती जाएगी और अन्तिम और पूर्ण विजय हासिल करेगी। लेकिन, इसके बावजूद, अन्तरराष्ट्रीय प्रतिक्रियावादी ताक़तों तथा शोषक वर्गों की शक्ति अब भी हमारी शक्ति से ज़्यादा है और

फिलहाल बहुत मानों में, अब भी हम पर वे हावी हैं। इसलिए उनको हराने के पहले हमें संघर्ष के एक लम्बे, कटु, चक्करदार और कठिन मार्ग से गुज़रना होगा।

चूँकि शोषक वर्गों ने मनुष्य जाति के ऊपर हज़ारों वर्षों तक शासन किया है इसलिए उन्होंने न सिर्फ़ दुनिया की हर चीज़ पर कब्ज़ा करके अपने को अत्यन्त शक्तिशाली बना लिया है, बल्कि उन्होंने समाज के शोषित वर्गों और आम लोगों के समुदाय पर भी बहुत खराब असर डाल दिया है। मानव समाज के अन्दर तरह-तरह का पिछड़ापन, अज्ञान, खुदगर्जी, आपसी धोखा-धड़ी, आपसी विरोध, एक दूसरे की मार-काट, आदि तमाम चीज़ों के लिये यही असर ज़िम्मेदार है। वर्ग समाज में, खास तौर से माल-उत्पादन की अर्थ व्यवस्था के समाज में और पूँजीवादी समाज में, इन चीज़ों का होना अनिवार्य है। अपने वर्ग स्वार्थों और वर्ग शासन के लिए शोषक वर्गों द्वारा पैदा की गई ये अनिवार्य चीज़ें हैं; क्योंकि शोषित वर्ग और औपनिवेशिक देशों की जनता अगर पिछड़ी हुई, अज्ञान, बिखरी हुई तथा फूट की शिकार न हो तो शोषकों के रूप में अपनी स्थिति बनाये रखना शोषक वर्ग के लिये असंभव होगा। इसलिये, विजय हासिल करने के लिए न सिर्फ शोषक वर्गों के ख़िलाफ़ बल्कि जनता के अन्दर शोषक वर्गों के लम्बे असर के ख़िलाफ़ भी, आम जनता में फैली पिछड़ी हुई विचारधारा और उसके असर के ख़िलाफ़ भी हमें तीव्र संघर्ष चलाना चाहिए ताकि हम उसकी चेतना को ऊँचा कर सकें और शोषक वर्गों को हराने के लिए शोषित वर्ग को एकजूट कर सकें। कम्युनिज़्म के उद्देश्य के संघर्ष में यही वह कठिनाई है जिसका हमें सामना करना है।

साथियो! अगर तमाम आम जनता सचेत होती, संयुक्त होती और शोषक वर्गों के प्रभावों तथा पिछड़ेपन से मुक्त होती, जैसा कि कुछ लोग कहते हैं, तो फिर क्रान्ति के मार्ग में कठिनाइयां ही क्या रह जातीं? शोषक वर्गों के इस प्रकार के प्रभाव न सिर्फ़ क्रान्ति के बहुत पहले से मौजूद हैं, बल्कि क्रान्ति की विजय और शोषित वर्गों द्वारा राजनीतिक सत्ता के स्थानों से शोषकों को लात मार कर निकाल दिए जाने के बहुत–बहुत बाद तक भी वे मौजूद रहेंगे। ज़रा रूक कर सोचिए तो, संपूर्ण मानव जाति को मुक्त करने और बदलने के लिए, शोषक वर्गों को और जनता के अन्दर उनके प्रभावों को अन्तिम रूप से खतम करने के लिए; करोड़ों छोटे-छोटे पूंजीवादी उत्पादकों को सुधारने के

लिए; वर्गों को आखिर में खतम करने के लिए; और उस मनुष्य जाति को—जो हजारों वर्षों से पुराने रीति-रिवाजों, परम्पराओं और पिछड़ी हुई चीजों के साथ वर्ग समाज में (ऐसे समाज में जिसमें कि मानव जाति ऐसे वर्गों और राष्ट्रों में बँटी हुई है जो एक दूसरे से लड़ते और एक दूसरे को मारते हैं और इस तरह खुदगर्जी, आपसी धोखाधड़ी और आपसी विरोध के विचारों और रिवाजों की सृष्टि करते हैं) रहती आई है—क़दम-बक़दम ऊँचा उठाने के लिए और उसे उच्च संस्कृति और कौशल (टेकनीक) से सम्पन्न समझदार, स्वार्थहीन, कम्युनिस्ट मानवता के स्तर पर पहुँचाने के लिए कितने जटिल और कठिन काम तथा संघर्ष करने होंगे ?

लेनिन ने कहा था :

"वर्गों के खात्मे का मतलब केवल जमींदारों और पूंजीपतियों को मार भगाना नहीं है—इस काम को तो हमने अपेक्षाकृत आसानी से पूर कर लिया है—उसका मतलब माल के छोटे उत्पादकों का भी खात्मा करना है। और उन्हें न मारकर भगाया जा सकता है, न कुचला जा सकता है। उनके साथ हमें हिल-मिल कर रहना चाहिये। उन्हें एक बहुत लम्बे, धीमे और सावधानी से किये गये संगठनात्मक काम के जरिये बदला और फिर से शिक्षित किया जा सकता है (और किया जाना चाहिये)। सर्वहारा वर्ग को हर तरफ़ से वे एक ऐसे निम्न -पूंजीवादी वातावरण से घेरे रहते हैं जो सर्वहारा वर्ग के अन्दर घुस जाता है और उसे भ्रष्ट करता है और बार बार निम्न-पूंजीवादी कच्चेपन, फूट, व्यक्तिवाद और कभी खुशी और कभी निराशा की मनःस्थिति के गढ़े में घसीटता रहता है। इस चीज का मुक़ाबला करने के लिये, इस बात के लिये कि सर्वहारा वर्ग की संगठनात्मक भूमिका (और यही उसकी मुख्य भूमिका है) सही-सही, सफलतापूर्वक और विजयपूर्वक पूरी की जा सके, सर्वहारा वर्ग की राजनीतिक पार्टी के अन्दर सख़्त से सख़्त केन्द्रीयता और अनुशासन की जरूरत है...लाखों और करोड़ों लोगों की आदत की शक्ति एक महा भयानक शक्ति है...। केंद्रीभूत बड़े पूंजीपति वर्ग को पराजित करना छोटे-छोटे करोड़ों मालिकों को 'पराजित' करने से हजार गुना अधिक आसान है। फिर भी, अपने आम रोजमर्रा के, अदृश्य, पकड़ में न आनेवाले, पस्तहिम्मत करनेवाले काम के द्वारा वे वही नतीजे

पैदा करते हैं जिनकी पूंजीपति वर्ग को जरूरत है और जो पूंजीपति वर्ग को पुनर्स्थापित करने की प्रवृत्ति रखते हैं।..."

लेनिन आगे कहते हैं :

"... उस पूंजीपति वर्ग का, जिसका विरोध—उसका तख़्ता उलट जाने के बाद (चाहे ऐसा एक ही देश में हुआ हो)—दस गुना बढ़ जाता है, और जिसकी ताक़त सिर्फ़ अन्तरराष्ट्रीय पूंजी में, पूंजीपति वर्ग के अन्तरराष्ट्रीय सम्बंधों की शक्ति और स्थायीपने में ही नहीं, बल्कि आदत की शक्ति में भी, छोटे पैमाने पर होनेवाले उत्पादन की शक्ति में भी निहित है। क्योंकि, दुर्भाग्य से, छोटे पैमाने पर उत्पादन अब भी दुनिया में बहुत-बहुत फैला हुआ है और छोटे पैमाने का उत्पादन लगातार, हर दिन, हर घण्टे, अपने आप, और सामूहिक पैमाने पर पूंजीवाद को और पूंजीपति वर्ग को पैदा करता रहता है। इन सब कारणों से सर्वहारा वर्ग की डिक्टेटरशिप ज़रूरी है; और एक लम्बे, सख़्त, और भयानक जीवन-मरण के युद्ध के बिना, एक ऐसे युद्ध के बिना जिसके लिये लगन, अनुशासन, दृढ़ता, अपराजेयता और संकल्प की एकता की ज़रूरत है, पूंजीपति वर्ग के ऊपर विजय प्राप्त कर सकना असंभव है।"

यह बात लेनिन ने सोवियत संघ में अक्तूबर क्रान्ति की विजय के दो साल बाद लिखी थी (यह सबसे कठिन काम अब सोवियत संघ में पूरा भी हो चुका है)। इसलिये, क्रान्ति की विजय के बाद भी सर्वहारा वर्ग को अत्यंत कठिन कार्य करना है, क्योंकि हमारी क्रान्ति इतिहास की तमाम दूसरी क्रान्तियों से भिन्न है। उदाहरण के लिये, पूंजीवादी क्रांति को आम तौर पर राज्यशक्ति पर क़ब्ज़ा करके पूरा कर लिया जाता है। लेकिन सर्वहारा वर्ग के लिये राजनीतिक आज़ादी और विजय के माने सिर्फ़ क्रान्ति की शुरुआत होते हैं। राजनीतिक विजय हासिल कर लेने के बाद भी उसके सामने विशाल काम होते हैं।

लेनिन ने यह भी कहा था :

"पूंजीवादी क्रान्ति के सामने सिर्फ़ एक ही काम होता है—पुराने समाज की तमाम जंज़ीरों को तोड़ना, फेंकना और ख़तम कर देना। कोई भी पूंजीवादी क्रान्ति जो इस काम को पूरा कर लेती है, वह जो सब उसे करना चाहिये कर देती है ; क्योंकि पूंजीवादी क्रान्ति पूंजीवाद

के विकास को शक्ति पहुँचाती है। समाजवादी क्रान्ति की बिल्कुल ही दूसरी स्थिति है। वह इतिहास के मोड़ के परिणाम स्वरूप समाजवादी क्रान्ति के मार्ग पर चलने के लिये मजबूर हुई है, देश जितना ही पिछड़ा हुआ होता है, पुराने पूंजीवादी सम्बंधों से निकल कर समाजवादी सम्बंधों की स्थापना करना उसके लिये उतना ही अधिक मुश्किल होगा। इस सम्बंध में, नष्ट करने के कार्य के साथ एक और नया तथा अनुपम रूप से कठिन कार्य जुड़ जाता है—संगठन का कार्य।"

इसलिये क्रांति की विजय के बाद भी सर्वहारा वर्ग को कठिन कार्य करने होते हैं। इसलिये कम्युनिज़्म के उद्देश्य की तुलना, जैसी कि कहावत है, "सौ बरस के महान कार्य से" की जा सकती है, उसे "एक बारगी में पूरा नहीं किया जा सकता।" अन्त में, कम्युनिस्ट समाज की स्थापना हो सकने के पहले सर्वहारा वर्ग को विभिन्न देशों में विकास की विभिन्न मंज़िलों से गुज़रना होगा और विभिन्न दुश्मनों को हराना होगा। उदाहरण के लिये, चीन अब भी पूंजीवादी क़िस्म की जनवादी क्रांति की मंज़िल में है और उसके दुश्मन हैं—साम्राज्यवाद, जो चीन पर आक्रमण करता है; और सामंती ताक़तें, जो साम्राज्यवाद से मिली हुई हैं। इसके पहले कि पूंजीवादी क़िस्म की क्रांति पूरी हो सके इन दुश्मनों को हराना होगा। मौजूदा मंज़िल में छोटे उत्पादकों की व्यापक आबादी अब भी क्रांति की एक महान प्रेरक शक्ति है। इसके पहले कि हमारा देश, क्रमशः संक्रमण के द्वारा, अन्त में कम्युनिस्ट समाज की अवस्था में पहुँच सके उसे समाजवादी पुनर्निर्माण के एक लम्बे काल से गुज़रना होगा।

साथियो! कम्युनिज़्म की स्थापना करना हमारा सबसे बुनियादी कर्त्तव्य है। इसलिये कम्युनिज़्म के उद्देश्य के रास्ते में आने वाली ऊपर बताई गयी विभिन्न कठिनाइयों का मुक़ाबला करना हम कम्युनिस्टों का स्वाभाविक रूप से एक आवश्यक कर्त्तव्य है।

ठीक इसीलिये कि कम्युनिज़्म का उद्देश्य इतना महान और कठिन उद्देश्य है; अभी भी ऐसे बहुत से लोग मौजूद हैं (यहाँ पर हम उनकी बात कर रहे हैं जो सच्चाई की भावना रखते हैं और सत्य की खोज करते हैं) जो कम्युनिज़्म के बारे में संदेह करते हैं, या चूंकि कम्युनिज़्म की स्थापना की सम्भावना में उनका विश्वास नहीं रहा, वे कम्युनिज़्म के उद्देश्य को त्याग देते हैं। वे इस बात में विश्वास नहीं करते कि मनुष्य जाति का विकास करके और बदल कर उसे

एक अत्यंत पवित्र कम्युनिस्ट मनुष्य जाति का रूप दिया जा सकता है और इस तरह की कठिनाइयों को हल किया जा सकता है। अथवा चूंकि ऐसी कठिनाइयों की उन्होंने कल्पना नहीं की थी इसलिये ज्योंही उनके सामने कठिनाइयाँ आती हैं— वे हताश, निराश और यहां तक कि ढुलमुल हो जाते हैं।

हम कम्युनिस्टों में मनुष्य जाति का सबसे अधिक साहस और क्रान्तिकारी संकल्प होना चाहिये। मानव इतिहास के इस अनुपम रूप से महान और कठिन कार्य को—कम्युनिज़म की स्थापना के कार्य को—पूरा करने का बीड़ा उठाने के सम्बंध में पार्टी के हर मेम्बर को खुशी से और गंभीरता पूर्वक स्वयं अपना मत निश्चित करना चाहिये। कम्युनिज़म के उद्देश्य के मार्ग में खड़ी कठिनाइयों को हम साफ़-साफ़ देखते हैं, लेकिन हम उनसे ज़रा भी भयभीत नहीं होते, क्योंकि हम इस चीज़ को भी साफ़-साफ़ समझते हैं कि क्रान्ति में अगणित करोड़ों लोगों को लाने के क्रम में इन कठिनाइयों पर निश्चित रूप से विजय प्राप्त की जा सकती है। हम साफ़-साफ़ समझते हैं कि कम्युनिज़म का उद्देश्य " सौ बरस का महान कार्य है।" ऐतिहासिक विकास ने हमारे कन्धों पर जिस महान कर्तव्य की ज़िम्मेदारी रखी है उसे हमें पूरा करना चाहिये। हमें महान आम जनता का समर्थन प्राप्त है। कम्युनिज़म के उद्देश्य के बहुत बड़े भाग को हमें अपनी ही पीढ़ी में पूरा कर लेना चाहिये और इस कार्य को अन्तिम रूप से पूरा करने की ज़िम्मेदारी आनेवाली पीढ़ियों पर छोड़ देना चाहिये। साथियो! हम कम्युनिस्टों को जो कल्पना और साहस प्राप्त है, उसका जोड़ मनुष्य जाति के इतिहास के प्राचीन वीरों में भी कहीं नहीं मिलता। इस दृष्टि से अपने ऊपर अभिमान करने का हमारे पास पूरा कारण है।

मुझे पश्चिमी योरप के उस विद्वान पूंजीवादी जीवनी-लेखक की याद आती है जिसने सोवियत संघ की यात्रा की थी और कॉ. स्तालिन से पूछा था कि लेनिन की रूस के पीटर महान से तुलना करने के बारे में उनकी क्या राय है। इस जीवनी-लेखक के कथनानुसार, कॉ. स्तालिन ने जवाब दिया कि लेनिन की तुलना एक विशाल सागर के जल से की जा सकती है जबकि पीटर महान सागर की केवल एक बूँद था। साथियो! इतिहास में उनके स्थान की दृष्टि से सर्वहारा वर्ग के कम्युनिस्ट उद्देश्य के एक नेता और सामन्ती-पूँजीवादी वर्ग के उद्देश्य के एक नेता के बीच यही फ़र्क है। इस तुलना से हम समझ सकते हैं कि कम्युनिज़म की सफलता और मनुष्य-जाति की मुक्ति के उद्देश्य के लिये लड़ने

वाला नेता कितना महान होता है और मुट्ठी भर शोषकों और मुफ़्तख़ोरों के उद्देश्य के लिये लड़नेवाला नेता कितना तुच्छ होता है ।

कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों के सामने महानतम आदर्श हैं, संघर्ष का सबसे बड़ा उद्देश्य है; और " ठोस तथ्यों के अन्दर से सत्य को खोजने की " उनमें सबसे व्यवहारिक भावना होती है और वे व्यावहारिक काम भी करते हैं। हम कम्युनिस्टों की ये ही विशेषताएँ हैं ।

साथियो ! अगर आपके सामने सिर्फ़ महान और उच्च आदर्श ही हैं, लेकिन " ठोस तथ्यों के अन्दर से सत्य को खोजने की " भावना आप में नहीं है और यदि आप सच्चे मन से व्यावहारिक कार्य नहीं करते तो आप कम्युनिस्ट पार्टी के अच्छे मेम्बर नहीं हैं । आप सिर्फ़ एक स्वप्न-द्रष्टा, एक बकवासी, या पुराने किस्म के पण्डित हो सकते हैं। इसके विपरीत, अगर आप सिर्फ व्यावहारिक कार्य करते हैं, लेकिन कम्युनिज़्म के महान और उच्च आदर्श नहीं रखते तो आप अच्छे कम्युनिस्ट नहीं हैं, केवल चलते हुए पद-लोलुपतावादी हैं । कम्युनिस्ट पार्टी का अच्छा मेम्बर वह है जो कम्युनिज़्म के महान और उच्च आदर्शों के साथ-साथ व्यावहारिक काम भी करता है और ठोस तथ्यों के अन्दर से सत्य को खोजने का भावना रखता है ।

कम्युनिस्ट आदर्श सुन्दर है जबकि मौजूदा पूंजीवादी दुनिया बदसूरत है । ठीक इसीलिये कि वह बदसूरत है लोगों का विशाल बहुमत उसे बदलना चाहता है और उसे बदलेगा । दुनिया को बदलते समय हम अपने को वास्तविकता से अलहदा नहीं कर सकते, न वास्तविकता को हम अनदेखा कर सकते हैं; न हम वास्तविकता से दूर ही भाग सकते हैं और न बदसूरत वास्तविकता के सामने घुटने टेक सकते हैं । हमें अपने को वास्तविकता के अनुकूल बनाना चाहिये, वास्तविकता को समझना चाहिये, वास्तविकता में रहने और विकास करने की कोशिश करना चाहिये, बदसूरत वास्तविकता के ख़िलाफ़ संघर्ष करना चाहिये और अपने आदर्शों को हासिल करने के लिये वास्तविकता को बदलना चाहिये । इसलिए, हम कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों को चाहिए कि दुनिया को बदलने के महान कम्युनिस्ट कार्य को ऐसे ही लोगों से शुरू करें जो हमारे घनिष्ठ सम्पर्क में हैं; और ऐसे ही काम से शुरू कर दें जिसमें हम तुरन्त ही हाथ लगा सकते हैं । यहाँ मुझे कुछ उन गलतियों की आलोचना करनी होगी जिन्हें चन्द

नौजवान साथी बहुत अक़्सर करते हैं। ये ग़लतियाँ हैं: वास्तविकता से भागने की, या उसे नज़रअन्दाज़ करने की उनकी कोशिशें। यह बहुत अच्छा है कि उनके आदर्श उच्च हैं। लेकिन वे अक़्सर शिकायत करते हैं कि यह जगह अच्छी नहीं है, वह जगह ख़राब है; इस तरह का काम अच्छा नहीं है, उस तरह का काम ख़राब है। सारे समय वे किसी आदर्श स्थान और काम की ही तलाश करते रहते हैं ताकि वे "दुनिया" को आसानी से "बदल दें।" लेकिन उनकी कल्पना की दुनिया को छोड़कर और कहीं ऐसे स्थानों और काम का अस्तित्व नहीं है।

कम्युनिज़्म के उद्देश्य के बारे में, जो कि हमारी सारी ज़िन्दगी का काम है, यही मेरी समझ है। जीवन की तरफ़ हमारे दृष्टिकोण और हमारे विश्व दृष्टिकोण का भी यह सबसे महत्वपूर्ण अंग है। हमारी सारी ज़िन्दगी के काम इसीके लिए हैं, और किसी चीज़ के लिए नहीं।

पार्टी मेम्बर के व्यक्तिगत हितों को बिना-शर्त पार्टी हितों के आधीन होना चाहिए

जीवन के प्रति अपना कम्युनिस्ट दृष्टिकोण और कम्युनिस्ट विश्व दृष्टिकोण साफ़-साफ़ क़ायम करने के अलावा कम्युनिस्टों को अपने व्यक्तिगत हितों और पार्टी हितों के बीच भी सही सम्बंध क़ायम करना चाहिये। मार्क्सवाद-लेनिनवाद का सिद्धान्त है कि व्यक्तिगत हितों को पार्टी हितों के, आंशिक हितों को पूर्ण हितों के, अस्थायी हितों को दूर तक के हितों के और एक राष्ट्र के हितों को तमाम दुनिया के हितों के मातहत बनाना चाहिये।

कम्युनिस्ट पार्टी सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाली राजनीतिक पार्टी है। सर्वहारा वर्ग के उद्धार के हितों के सिवा पार्टी का अपना और कोई हित या उद्देश्य नहीं है। किन्तु, सर्वहारा वर्ग का पूर्ण उद्धार सम्पूर्ण मानव जाति का भी उद्धार होगा; क्योंकि अगर सर्वहारा वर्ग तमाम मेहनतकश लोगों और तमाम राष्ट्रों का उद्धार करने में असफल होता है, अर्थात् अगर वह सम्पूर्ण मानव जाति का उद्धार करने में असफल होता है, तो वह अपना भी उद्धार नहीं कर सकेगा। इसलिए, सर्वहारा वर्ग का कर्तव्य हो जाता है कि आज़ादी की तथा अपने जीवन के रहन-सहन के मान और सांस्कृतिक और राजनीतिक धरातल को ऊँचा उठाने की उनकी लड़ाई में तमाम मेहनतकशों, तमाम दबे-कुचले

देशों और क़ौमों की वह सच्ची मदद करे और उनका नेतृत्व करे। इसलिये, सर्वहारा वर्ग के उद्धार के हित तथा सम्पूर्ण मानव-जाति और तमाम दबे-कुचले देशों के उद्धार के हित एक और अभिन्न हैं। इसलिये, कम्युनिस्ट पार्टी के हित भी वही हैं जो सर्वहारा वर्ग तथा सम्पूर्ण मानव-जाति के उद्धार के हित हैं। कम्युनिज़्म और सामाजिक विकास के भी हित वही हैं। इसलिये, पार्टी मेम्बरों के व्यक्तिगत हितों को पार्टी के हितों के मातहत बनाने का मतलब है कि उन्हें वर्ग और राष्ट्रीय आज़ादी के हितों के तथा कम्युनिज़्म और सामाजिक विकास के हितों के मातहत बनाया जाय।

कम्युनिस्ट पार्टी का मेम्बर अपने व्यक्तिगत हितों को, तमाम परिस्थितियों में पूर्णतया और बिना किसी शर्त के, पार्टी हितों के मातहत बना सकता है या नहीं—पार्टी के प्रति, क्रान्ति के प्रति और कम्युनिस्ट उद्देश्य के प्रति उसकी वफ़ादारी को परखने की यही कसौटी है। चूँकि कम्युनिज़्म की स्थापना सर्वहारा वर्ग तथा कम्युनिस्ट पार्टी पर निर्भर करती है, इसलिए अगर सर्वहारा वर्ग तथा कम्युनिस्ट पार्टी के हितों को नुक़सान पहुँचेगा तो कम्युनिज़्म की स्थापना कभी नहीं हो सकेगी।

हर समय और हर सवाल के सम्बंध में कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर को पूरी पार्टी के हितों का ध्यान रखना चाहिए और पार्टी के हितों को अपनी व्यक्तिगत समस्याओं और हितों से ऊपर रखना चाहिए। पार्टी के हित सबसे ऊपर हैं—हमारे पार्टी मेम्बरों का यही सबसे बड़ा सिद्धान्त है। प्रत्येक पार्टी मेम्बर को इस धारणा को अपनी विचारधारा में मज़बूती से जमा लेना चाहिए। यही वह चीज़ है जिसको हमने अक़्सर 'पार्टी भावना', 'पार्टी धारणा' या 'संगठनात्मक धारणा' की संज्ञा दी है। अपने दिमाग़ में सबसे ऊपर हमें पार्टी और पार्टी के हितों को ही रखना चाहिए, व्यक्तिगत क़िस्म के विचारों को नहीं। हमें गारण्टी करना चाहिए कि हमारे व्यक्तिगत हित पार्टी के हितों से मेल खाएँ या मिलकर उन्हींके साथ एक हो जाएँ। इस भांति हमारे व्यक्तिगत हितों का पार्टी के हितों से जब कभी विरोध होगा तो अपने हितों को पार्टी के हितों के हम मातहत बना सकेंगे और बिना किसी हिचकिचाहट अथवा उदासीनता के अपने व्यक्तिगत हितों को कुर्बान कर देंगे। पार्टी के उद्देश्य के लिये, वर्ग तथा राष्ट्रीय मुक्ति के लिये और मनुष्य जाति के उद्धार के लिये बिना किसी हिचकिचाहट के बल्कि खुशी की भावना

से, अपने व्यक्तिगत हितों को और यहां तक कि अपने जीवन को भी न्यौछावर कर देना कम्युनिस्ट नैतिकता का सर्वोच्च स्वरूप है। किसी पार्टी मेम्बर के सिद्धान्त का यह सर्वोच्च स्वरूप है। यही पार्टी मेम्बर की सर्वहारा विचारधारा की विशुद्धता का प्रकाश्य रूप है।

पार्टी में, पार्टी के हितों से स्वतंत्र कोई व्यक्तिगत उद्देश्य हमारे मेम्बरों को नहीं रखना चाहिये। हमारी पार्टी के मेम्बरों के व्यक्तिगत उद्देश्य पार्टी के उद्देश्यों का केवल एक अंग हो सकते हैं। उदाहरण के लिये, हमारे पार्टी के मेम्बर मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्तों का अध्ययन करना चाहते हैं, अपनी योग्यता को बढ़ाना चाहते हैं, आम जनता के क्रांतिकारी विजयी संघर्ष का नेतृत्व करना चाहते हैं और विभिन्न तरह के क्रांतिकारी संगठन क़ायम करना चाहते हैं, आदि, आदि। अगर ये सब उनके व्यक्तिगत उद्देश्य हैं तो वे पार्टी के उद्देश्यों के ही एक अंग हैं, क्योंकि वे पार्टी के भी हित में हैं। और निस्संदेह ऐसे पार्टी मेम्बरों और कार्यकर्ताओं की पार्टी को बड़ी संख्या में ज़रूरत है। लेकिन, इसके अलावा, हमारी पार्टी के मेम्बरों को व्यक्तिगत पद, व्यक्तिगत वीरता आदि, आदि के अपने कोई स्वतंत्र उद्देश्य नहीं रखने चाहिये। अगर वे ऐसे उद्देश्य रखते हैं तो मुमकिन है कि पार्टी के हितों से वे इतनी दूर चले जाएँ कि पार्टी के अन्दर अवसरवादी बन जाएँ।

अगर एक पार्टी मेम्बर अपनी विचारधारा में केवल पार्टी और कम्युनिज़्म के हितों और उद्देश्यों को ही अपने सामने रखता है, अगर पार्टी के हितों से स्वतंत्र उसका कोई व्यक्तिगत उद्देश्य और स्वार्थ नहीं हैं, और अगर वास्तव में वह निष्पक्ष और निस्वार्थी है तो उसमें निम्न गुण होंगे :—

(१) उसकी कम्युनिस्ट नैतिकता उच्च प्रकार की होगी। क्योंकि उसका दृष्टिकोण सख्त है इसलिये वह 'लोगों से प्रेम और घृणा दोनों कर सकता है।' अपने तमाम साथियों, क्रांतिकारियों और मेहनतकश लोगों के प्रति वह वफ़ादारी और गहरी मुहब्बत दिखा सकता है; बिना किसी शर्त के उनकी सहायता कर सकता है; उनके साथ समानता का व्यवहार कर सकता है और अपने खुद के हितों के लिये उनमें से किसी को भी कभी वह कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकता। उनके साथ 'सच्चाई और क्षमा की' भावना से वह बरताव कर सकता है और 'अपने को दूसरों की जगह पर रख सकता है।' दूसरों की समस्याओं को वह उनके दृष्टिकोण से समझ सकता है और उनके साथ सहानुभूति दिखा सकता है। 'दूसरों

के साथ ऐसी कोई चीज़ वह कभी नहीं करेगा जिसे कि वह दूसरों से अपने साथ न करवाना चाहे।' मानव जाति के सबसे भयानक शत्रुओं के साथ वह अत्यंत दृढ़ता के साथ निबट सकता है; और पार्टी, वर्ग और मानव जाति के उद्धार के हितों की रक्षा के लिये दुश्मन के ख़िलाफ़ वह एक सुसंगत संघर्ष चला सकता है। जैसी कि चीनी कहावत है: 'दुनिया के चिन्तित होने से बहुत पहले से वह चिन्ता करेगा और तमाम दुनिया के खुशी मना लेने के बाद वह खुशी मनायेगा।' चाहे पार्टी के अन्दर हो, चाहे जनता के बीच, मुश्किलें झेलने के समय वह सबसे आगे होगा और आनन्द मनाने में सबसे पीछे। वह इस बात की कभी पर्वाह नहीं करता कि उसकी हालत दूसरों से अच्छी है या बुरी, लेकिन इस बात की वह ज़रूर पर्वाह करता है कि क्रांतिकारी कार्य को उसने दूसरों से ज़्यादा किया है या नहीं और वह ज़्यादा सख्ती से लड़ा है या नहीं। मुसीबत के समय वह साहस के साथ और बिना पीछे हटे हुए डटा रहेगा और कठिनाइयों के सामने महान ज़िम्मेदारी का सबूत देगा। इसलिये, धन-दौलत या पद-प्रतिष्ठा की भ्रष्टता का मुक़ाबला करने में तथा ग़रीबी और निम्न स्थिति के बावजूद ढुलमुलाने की प्रवृत्तियों का मुक़ाबला करने में वह अधिक से अधिक दृढ़ता और नैतिक साहस दिखा सकेगा और धमकियों या ताक़त के सामने घुटने टेकने से वह इनकार करेगा।

(२) उसमें अत्यधिक साहस होगा। चूँकि वह स्वार्थ-परायणता की भावना से बिलकुल मुक्त है और कभी 'कोई चीज़ अपनी आत्मा के ख़िलाफ़' उसने नहीं की है, इसलिये अपनी ग़लतियों और कमज़ोरियों को वह खोलकर रख सकता है और उसी तरह साहसपूर्वक उनको दुरुस्त कर सकता है जिस तरह कि थोड़ी देर के ग्रहण के बाद सूरज और चांद चमकते हुए और पूर्ण रूप से बाहर निकल आते हैं। वह "साहसी है क्योंकि उसका उद्देश्य न्यायपूर्ण" है। सच्चाई से वह कभी नहीं डरता। सत्य की वह साहपूर्वक रक्षा करता है, दूसरों को सत्य बताता है और सत्य के लिये लड़ता है। ऐसा करना चाहे उसके लिये अस्थायी रूप से नुक़सानदेह हो, सत्य की रक्षा के लिये उसे विभिन्न प्रकार के हमले सहने पड़ें, जनता के विशाल बहुमत के विरोध और दुत्कार के कारण अस्थायी रूप से चाहे वह अलहदा पड़ जाए (गौरवशाली अलहदगी में पड़ जाए), और इस कारण चाहे उसका जीवन भी ख़तरे में पड़ जाए, लेकिन फिर भी वह ज्वार का सामना करेगा और सत्य की रक्षा करेगा

तथा बाढ़ के साथ बहना कभी भी गवारा नहीं करेगा। जहां तक उसका खुद का सम्बंध है, उसे किसी का कोई डर नहीं है।

(३) मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों और तरीक़ों का ज्ञान हासिल करने, समस्याओं को समझने और परिस्थिति के असली स्वरूप को तीव्रता से और ठीक-ठीक परखने में वह भली भांति सफल होगा। चूंकि उसका वर्ग दृष्टिकोण दृढ़ और स्पष्ट है, इसलिये ऐसी तमाम व्यक्तिगत चिन्ताओं और व्यक्तिगत इच्छाओं से वह मुक्त है जो चीज़ों को देखने की और सत्य को समझने की उसकी दृष्टि को धुंधला या विकृत कर दें। उसका दृष्टिकोण वस्तुगत होता है। तमाम सिद्धांतों, सत्यों व असत्यों की परीक्षा वह क्रांतिकारी अमल के दरम्यान करता है और वह व्यक्तियों का लिहाज़ नहीं करता।

(४) उसमें सबसे सच्चा, सबसे स्पष्ट भाषी और सबसे सुखी मनुष्य बनने की भी योग्यता होगी। चूंकि वह कोई स्वार्थी इच्छाएँ नहीं रखता और चूँकि ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसे पार्टी से वह छिपाना चाहता है, इसलिए जैसा कि चीनी कहावत बताती है : 'ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसे दूसरों से बताने में वह डरता हो।' पार्टी और क्रांति के अलावा उसके निजी कोई ऐसे नुक़सान या फ़ायदे या कोई और चीज़ें नहीं हैं जिनके बारे में उसे चिन्ता हो। 'अकेला रहने पर भी वह अपनी देखभाल कर सकता है।' स्वतंत्र रूप से और बिना किसी की देखभाल में काम करते समय भी, जब वह हर तरह की ग़लत चीज़ें कर सकता है, वह ग़लत चीजें न करने की कोशिश करता है। उसके काम की जाँच-पड़ताल चाहे जितने साल बाद भी की जाय वह किसी प्रकार से भी पार्टी हितों के ख़िलाफ नहीं निकलेगा। दूसरों की आलोचना से वह नहीं डरता और साहस और सच्चाई से दूसरों की आलोचना कर सकता है। यही कारण है जिससे वह सच्चा, स्पष्ट-भाषी और सुखी हो सकता है।

(५) उसमें आत्म-सम्मान और निजी आदर की उच्चतम भावना होगी। पार्टी और क्रान्ति के हितों के लिये वह अधिक से अधिक उदार और अधिक से अधिक सहनशील हो सकता है और हमेशा समझौता करने लिये तैयार हो सकता है। ज़रूरत पड़ने पर बिना किसी प्रकार दुःखी हुए या बिना किसी के ख़िलाफ़ शिकायत करते हुए वह हर तरह के अपमान और अन्याय को भी सहन कर लेगा। चूँकि उसका खुदका कोई उद्देश्य या इरादा नहीं है, इसलिये

उसे दूसरों की चापलूसी करने की ज़रूरत नहीं है और न वह यही चाहता है कि दूसरे उसकी चापलूसी करें। किसी से उसे अपने लिये मेहरबानी की भीख माँगने की ज़रूरत नहीं है, इसलिये दूसरों की मदद के लिये किसी के सामने अपने को नीचा बनाने की भी उसे कोई आवश्यकता नहीं है। पार्टी और क्रांति के हितों के लिये वह खुद अपनी भी देखभाल कर सकता है, अपने जीवन और स्वास्थ की हिफ़ाज़त कर सकता है, अपने सैद्धांतिक स्तर को ऊँचा उठा सकता है और अपनी योग्यता को बढ़ा सकता है। लेकिन अगर पार्टी और क्रांति के किन्हीं महत्वपूर्ण उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये उसे अपमानों को सहना पड़े, भारी बोझों को सम्हालना और ऐसा काम करना पड़े जिसके करने की उसे इच्छा नहीं है, तो भी बिना किसी हिचकिचाहट के कठिन से कठिन और महत्वपूर्ण कार्य करने को वह तैयार हो जायगा और उसे दूसरे पर नहीं डालेगा।

कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों में मानव जाति के महानतम और उच्चतम गुण होने चाहिये। उसमें पार्टी और सर्वहारा वर्ग का पक्का और स्पष्ट दृष्टिकोण भी (अर्थात पार्टी भावना और वर्ग चरित्र) होना चाहिये। हमारी नैतिकता सिर्फ़ इसीलिये सर्वोच्च है कि वह कम्युनिज़्म और सर्वहारा वर्ग की नैतिकता है। ऐसी नैतिकता का निर्माण व्यक्तियों या मुट्ठीभर शोषकों के हितों की रक्षा करने के पिछड़े हुए आधार पर नहीं होता। इसके विपरीत, उसका निर्माण सर्वहारा वर्ग के, संपूर्ण मानव जाति के अन्तिम उद्धार के, दुनिया को विनाश से बचाने तथा एक सुखमय और सुन्दर कम्युनिस्ट दुनिया की रचना करने के हितों के प्रगतिशील आधार पर होता है। किसी व्यक्ति या थोड़े से लोगों के हितों के लिये कुर्बानी करना किसी कम्युनिस्ट के लिये सबसे अनुचित और अशोभनीय चीज़ है। लेकिन अगर पार्टी के लिये, वर्ग और राष्ट्रीय आज़ादी के लिये, अर्थात मनुष्य जाति के उद्धार के लिये, सामाजिक विकास के लिये, और मानव जाति के विशाल बहुमत के करोड़ों लोगों के हितों के लिये, कुर्बानी करने की ज़रूरत हो तो कम्युनिस्ट पार्टी के अगणित मेम्बर मौत का भी सामना करने में ज़रा भी न हिचकिचाएँगे और हर प्रकार की कुर्बानी करने के लिये तैयार होंगे। कम्युनिस्ट पार्टी के अधिकांश मेम्बरों के लिये 'किसी उच्च उद्देश्य के लिये अपने जीवन की बलि चढ़ा देने' या ज़रूरत पड़ने पर 'न्याय के लिये मर जाने' की बात एक साधारण बात होगी। इसका कारण यह नहीं

है कि वे कल्पना लोक में रहते हैं, या प्रशंसा और प्रसिद्धि के भूखे हैं; बल्कि उसका कारण सामाजिक विकास की उनकी वैज्ञानिक समझ तथा उनकी चेतना है। इसीलिये हमारी नैतिकता सबसे उच्च और सबसे वैज्ञानिक है। इसके अलावा, हम इस बात को नहीं मानते कि वर्ग-समाज में तथाकथित इससे उच्चतर, अधिक वैज्ञानिक, 'वर्गों से ऊपर' और कोई आम नैतिकता होती है। उसकी बात सिर्फ धोखे की बकवास है। इस तथाकथित 'नैतिकता' का निर्माण वास्तव में मुट्ठीभर शोषकों के हितों की रक्षा के आधार पर होता है। इस "नैतिकता" की कल्पना का रूप हमेशा आदर्शवादी रहा है। केवल हम कम्युनिस्ट ही नैतिकता का निर्माण ऐतिहासिक भौतिकवाद के वैज्ञानिक आधार पर करते हैं और यह भी केवल हम कम्युनिस्ट ही हैं जो नैतिकता का निर्माण खुले तौर पर सर्वहारा वर्ग और मानव-जाति के उद्धार के संघर्ष के हितों के भौतिक आधार पर करते हैं।

कम्युनिस्ट पार्टी न सिर्फ वैयक्तिक पार्टी मेम्बरों के हितों की नुमायंदगी करती है, बल्कि तमाम मजदूरों और मनुष्य जाति के उद्धार के दूर तक के हितों की भी वह नुमायंदगी करती है। पार्टी के हित न सिर्फ वैयक्तिक पार्टी मेम्बरों के हितों के स्पष्टतम रूप हैं, बल्कि तमाम मजदूरों और मनुष्य जाति के उद्धार का भी वे स्पष्टतम रूप हैं। सर्वहारा वर्ग के हितों और मनुष्य जाति के उद्धार के हितों के अलावा कम्युनिस्ट पार्टी के और कोई हित और उद्देश्य नहीं हैं। इसलिये कम्युनिस्ट पार्टी को मेम्बरों के एक संघ की तरह का एक ऐसा संकुचित, छोटा गुट नहीं मानना चाहिये जो केवल अपने मेम्बरों के निजी हितों की पूर्ति के लिये कोशिश करता है। जो कोई ऐसा विचार रखता है वह कम्युनिस्ट नहीं है।

बेशक, पार्टी मेम्बर के व्यक्तिगत हित और उसका व्यक्तिगत विकास भी होता है। किन्हीं मौकों पर इन व्यक्तिगत हितों का पार्टी के हितों से विरोध हो सकता है या वे उनके ख़िलाफ़ हो सकते हैं। ऐसा होने पर पार्टी मेम्बर को अपने व्यक्तिगत हितों को बिना किसी शर्त के कुर्बान कर देना होता है। अपने व्यक्तिगत हितों के लिये (किसी भी रूप में, या बहाने से) उसे पार्टी के हितों को कुर्बान नहीं करना चाहिये। चूंकि पार्टी मेम्बर का व्यक्तिगत हित और उसका विकास पार्टी के हितों और विकास में शामिल है, इसलिये पार्टी और वर्ग की सफलता और विजय पार्टी मेम्बर की भी सफलता और विजय

होती है। अस्तु, केवल पार्टी के विकास में, उसकी सफलता और विजय के लिये संघर्ष में ही पार्टी मेम्बर अपने विकास की आशा कर सकता है। अपने व्यक्तिगत विकास की कोशिश करने के लिये वह अपने को पार्टी के विकास से अलहदा नहीं कर सकता। संक्षेप में, पार्टी के विकास, उसकी सफलता और विजय के संघर्ष के दौरान में ही कोई पार्टी मेम्बर अपना विकास कर सकता है। इसके बिना वह अपना विकास क़तई नहीं कर सकता। इसलिये पार्टी मेम्बर के व्यक्तिगत हितों को पार्टी के हितों और विकास के साथ पूर्णतया एक कर देना चाहिये और ऐसा किया जा सकता है।

हमारी पार्टी का मेम्बर केवल एक साधारण व्यक्ति नहीं रह जाता। वह सर्वहारा वर्ग का एक सजग, आगे बढ़ा हुआ योद्धा है। उसे केवल अपने व्यक्तिगत हितों की ही नुमायंदगी नहीं करनी चाहिये। उसे अपने को सर्वहारा वर्ग के हितों और विचारधारा का सजग, जीवित प्रतिनिधि प्रमाणित करना चाहिये। चूंकि वह सर्वहारा वर्ग का एक प्रतिनिधि बन चुका है, इसलिये उसके व्यक्तिगत हितों की पार्टी और सर्वहारा वर्ग के हितों से कभी टक्कर नहीं होनी चाहिये। जहाँ तक पार्टी के कार्यकर्ताओं और नेताओं का सम्बंध है, तो उनके लिये यह और भी ज़रूरी है कि वे पार्टी और सर्वहारा वर्ग के आम हितों के जीवित प्रतिनिधि बन जाएँ और अपने व्यक्तिगत हितों और उद्देश्यों को पार्टी और सर्वहारा वर्ग के आम हितों और उद्देश्यों के साथ पूर्णतया मिला दें। चीन में आज जैसी परिस्थिति है उसमें केवल सर्वहारा वर्ग ही राष्ट्रीय आज़ादी के हितों का सर्वोत्तम प्रतिनिधित्व कर सकता है। यही कारण है कि हमारे पार्टी मेम्बर संपूर्ण राष्ट्र के हितों के सर्वोत्तम प्रतिनिधि साबित हुए हैं।

यह समस्या का एक पहलू है जिसकी ओर पार्टी मेम्बरों को ध्यान देना चाहिये। लेकिन उसका एक दूसरा पहलू भी है।

यद्यपि पार्टी के आम हितों में पार्टी मेम्बर के व्यक्तिगत हित शामिल हैं तथापि उनमें उसके तमाम हित नहीं शामिल हो सकते। पार्टी मेम्बर के व्यक्तित्व को ख़तम नहीं किया जा सकता, और न किया जाना चाहिये। किसी भी हालत में एक पार्टी मेम्बर की कुछ व्यक्तिगत समस्याएँ भी हल करने की होंगी। इसके अलावा, इस बात की भी ज़रूरत है कि अपने व्यक्तित्व और अपनी विशेष योग्यता के अनुसार वह अपना विकास करे। इसलिये पार्टी अपने मेम्बरों को इस बात की इजाज़त देती है कि अपने वैयक्तिक और

पारिवारिक जीवन का वे निर्माण करें और अपने व्यक्तित्वों और विशेष योग्यताओं का उस हद तक विकास करें जिस हद तक कि वे पार्टी हितों के खिलाफ़ नहीं जातीं। इसके अलावा, हर संभव हालत में, उसके व्यक्तित्व और उसकी विशेष योग्यता का विकास करने में स्वयं अपने ही हित में, पार्टी हर मेम्बर को मदद देगी; उसे उसके योग्य काम और काम करने की उचित परिस्थितियां देगी; तथा हर संभव तरह से वह उसको उत्साह भी दिलायेगी। इसी तरह, हर संभव हालत में हर पार्टी मेम्बर के व्यक्तिगत ज़रूरी हितों की पार्टी देखभाल करेगी और उनकी हिफ़ाज़त करेगी। उदाहरण के लिये शिक्षा हासिल करने और अध्ययन करने का अवसर पार्टी उसे देगी, उसकी घरेलू और स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याओं को हल करने में सहायता देगी; और अगर आवश्यक हुआ तो साथियों को बचाने के लिये पार्टी के कुछ काम को भी वह कम कर देगी; इत्यादि। लेकिन इन तमाम क़दमों का सिर्फ़ एक ही उद्देश्य है—संपूर्ण पार्टी के हितों की हिफाज़त करना, क्योंकि अगर पार्टी अपने मेम्बरों को रहने, काम करने और शिक्षा ग्रहण करने की कम से कम ऐसी आवश्यक परिस्थितियों की भी व्यवस्था नहीं कर सकती, जिससे कि वे उत्साह-पूर्वक और चिन्ताओं से मुक्त होकर काम कर सकें तो पार्टी के काम पूरे नहीं हो सकते। पार्टी मेम्बरों की समस्याओं को हल करते समय पार्टी के ज़िम्मेदार नेताओं को इस बात का ध्यान रखना चाहिये। यह समस्या का दूसरा पहलू है।

इस सब का सार यही है कि हर पार्टी मेम्बर को बिना किसी हिच-किचाहट के अपने को पार्टी हितों के आधीन रखना चाहिये। उसे अपने साथ सख्ती बरतनी चाहिये, उसका दृष्टिकोण सार्वजनिक होना चाहिये। और उसे अपने कोई व्यक्तिगत उद्देश्य या स्वार्थ नहीं रखने चाहिये। तमाम सवालों के सम्बंध में उसे सिर्फ़ अपना ही ख़याल नहीं रखना चाहिये। पार्टी से उसे बहुत ज्यादा व्यक्तिगत माँगें नहीं करनी चाहिये, न तरक्की न देने या उसकी प्रशंसा न करने के लिये पार्टी को उसे दोष ही देना चाहिये। इसके अलावा, पार्टी मेम्बरों को, तमाम परिस्थितियों में, अध्ययन करने और अपने को बेहतर बनाने की, साहसपूर्वक संघर्ष करने और अपनी चेतना को निरन्तर बढ़ाने तथा मार्क्सवाद-लेनिनवाद की अपनी समझ के स्तर को ऊँचा करने की पूरी शक्ति से कोशिश करनी चाहिए ताकि पार्टी और क्रान्ति को वे और ज़्यादा मदद पहुंचा सकें। पार्टी मेम्बरों की समस्याओं को हल करते समय पार्टी और

उसके नेताओं को पार्टी मेम्बरों के काम करने रहने, और शिक्षा ग्रहण करने की हालतों का ध्यान रखना चाहिये जिससे कि सर्वहारा वर्ग के क्रान्तिकारी उद्देश्य के लिए पार्टी का बेहतर काम करने, अपना विकास करने और अपनी चेतना के स्तर को अधिक से अधिक ऊँचा उठाने में उनकी मदद की जा सके। उन साथियों की तरफ़ खास तौर से बहुत ज़्यादा ध्यान दिया जाना चाहिये जो वास्तव में अपने साथ ग़लती बरतते हैं और सार्वजनिक सेवा का दृष्टिकोण रखते हैं। केवल इसी तरह से, अर्थात, दोनों पहलुओं पर ध्यान देकर और उनको मिलाकर ही पार्टी का सबसे अधिक फ़ायदा किया जा सकता है।

पार्टी में विभिन्न प्रकार की ग़लत विचारधाराओं के उदाहरण

साथियो! अपने पार्टी मेम्बरों और कार्यकर्ताओं का मूल्यांकन करने के लिए अगर हम अपनी कसौटी जीवन के प्रति कम्युनिस्ट दृष्टिकोण और विश्व दृष्टिकोण को, कम्युनिज़्म के उद्देश्य के बारे में अपनी समझ को और पार्टी के हितों और पार्टी मेम्बरों के हितों के बीच सही सम्बंध कायम करने की बात को बताएँ तो हम देखेंगे कि एक तरफ़ तो ऐसे बहुत से पार्टी मेम्बर और कार्यकर्ता हैं जो इस कसौटी पर खरे उतरते हैं और दूसरे पार्टी मेम्बरों के लिये आदर्श का काम कर सकते हैं; और, दूसरी तरफ़, ऐसे भी कुछ पार्टी मेम्बर और कार्यकर्ता हैं जो अभी तक इस कसौटी पर खरे नहीं उतरते और कमो-बेश मात्रा में अब भी विभिन्न प्रकार की ग़लत विचार-धाराएँ रखते हैं। यहाँ पर उन ग़लत विचारधाराओं का मैं खुले तौर पर एक आम ढंग से जिक्र करूंगा जिससे कि आत्मविकास करते समय हमारे साथी उनकी तरफ ध्यान रख सकें।

पार्टी में साथियों के बीच बुनियादी तौर से कौन सी ग़लत विचारधाराएँ फैली हुई हैं? उनकी सूची मोटे तौर पर निम्न प्रकार से बनाई जा सकती है:

सर्व प्रथम, जो लोग हमारी पार्टी में शामिल हुए हैं वे न सिर्फ़ विभिन्न सामाजिक स्तरों से आते हैं, बल्कि अपने साथ विभिन्न उद्देश्य और प्रेरणायें भी लाते हैं। इस बात के बावजूद कि अधिकांश मेम्बर पार्टी में कम्युनिज़्म की स्थापना के वास्ते लड़ने के लिये, सर्वहारा वर्ग और मानव-जाति के उद्धार के महान लक्ष्य के वास्ते लड़ने के लिये पार्टी में शामिल हुए हैं, फिर भी ऐसे कुछ

दूसरे मेम्बर हैं, जो पार्टी में दूसरे कारणों, या उद्देश्यों को लेकर शामिल हुए हैं। उदाहरण के लिये, कुछ किसान साथी 'स्थानीय अत्याचारियों को मारने और जमीन का बँटवारा करने' को ही—जिसे कि हमने अतीत काल में किया था—कम्युनिज़्म समझते थे। जब वे पार्टी में शामिल हुए तो वास्तविक कम्युनिज़्म का मतलब इससे ज़्यादा वे और कुछ नहीं समझते थे। वर्तमान काल में काफी लोग पार्टी में मुख्यतया जापान के खिलाफ़ कम्युनिस्टों के दृढ़ विरोध और जापान-विरोधी राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे की वजह से शामिल हो गये हैं। दूसरे कुछ लोग पार्टी में इसलिये शामिल हो गये हैं कि उन्हें समाज में दूसरा कोई रास्ता नहीं मिलता था—उनके पास न कोई व्यापार था, न नौकरी, न कोई ऐसा स्कूल जिसमें वे जा सकते थे; अथवा वे अपने परिवारों से, या जबरदस्ती की गई शादियों से छुटकारा पाना चाहते थे। कुछ लोग पार्टी में इसलिये आए हैं कि वे पार्टी की इज़्ज़त करते थे, या वे यह समझते थे, यद्यपि केवल अस्पष्ट रूप में ही, कि कम्युनिस्ट पार्टी चीन को बचा सकती है। और अन्त में ऐसे भी कुछ व्यक्ति हैं जो पार्टी में इसलिये आए हैं कि उन्हें ख़याल था कि कम्युनिस्ट टैक्स घटा देंगे, अथवा वे उम्मीद करते थे कि भविष्य में वे प्रभावशाली व्यक्ति बन जाएँगे अथवा जिन्हें उनके सम्बंधी या मित्र पार्टी में ले आये हैं, इत्यादि। यह सर्वथा स्वाभाविक है कि ऐसे साथियों में जीवन के प्रति स्पष्ट और निश्चित कम्युनिस्ट दृष्टिकोण और विश्व दृष्टिकोण का अभाव हो, कम्युनिस्ट उद्देश्य की महानता और कठिनाइयों को समझने में वे असमर्थ हों, और दृढ़ सर्वहारा वर्ग के रुख को अपना सकने में वे असमर्थ हों। इसलिये यह भी बिलकुल स्वाभाविक है कि खास मोड़ों के समय, किन्हीं परिस्थितियों में, उनमें से कुछ ढुलमुलाने लगें या बदल जाएँ। अपने साथ पार्टी में तमाम किस्मों और रंगों की विचारधाराएँ वे लाये हैं। इसलिए, उनकी शिक्षा, उनका तप कर पक्का बनना और आत्मविकास करना अत्यंत महत्व की चीजें हैं। वरना वे सर्वहारा वर्ग के आगे बढ़े हुये योद्धा हर्गिज़ नहीं बन सकेंगे।

लेकिन, इसके बावजूद, यह कोई गंभीर समस्या नहीं है। कुछ लोग कम्युनिस्ट पार्टी पर भरोसा करने लगते हैं, पार्टी में अपना मार्ग ढूंढने के लिये आते हैं और पार्टी की नीतियों का समर्थन करते हैं—यह सब आखिरकार, ग़लत चीज़ तो नहीं मानी जा सकती। पार्टी के पास आने में उन्होंने

कोई ग़लती नहीं की है। अवसरवादी तत्वों, दुश्मन के भेदियों और ग़द्दारों को छोड़कर ऐसे सब लोगों का हम स्वागत करते हैं। पार्टी के कार्यक्रम और विधान को उन्हें मंजूर करना और मानना चाहिये। जहाँ तक आगे अध्ययन करने और कम्युनिज़्म तथा पार्टी के कार्यक्रम और विधान को समझने की बात है तो उसे वे पार्टी में शामिल होने के बाद कर सकते हैं। इसके अलावा, अपने अध्ययन के आधार पर संघर्ष के दौरान में वे अपने को और इस्पाती तथा विकसित बना सकते हैं, और वे अपने को बहुत अच्छे कम्युनिस्ट बना सकते हैं।

सच बात तो यह है कि बहुत लोगों से यह मांग करना कि पार्टी में शामिल होने से पहले ही वे कम्युनिज़्म तथा पार्टी के कार्यक्रम और विधान को पूरी गहराई से समझ लें, असंभव है। यही कारण है कि इस बात की शर्त लगाने के बजाय कि पार्टी में शामिल होने से पहले लोग पार्टी के कार्यक्रम और विधान को पूर्ण रूप से समझ लें हम उनसे सिर्फ़ इस बात की माँग करते हैं कि पार्टी के कार्यक्रम और विधान को वे मंजूर करें। यद्यपि ऐसे लोग कम्युनिज़्म को अभी तक पूरे तौर से नहीं समझते, तथापि वर्तमान कम्युनिस्ट आन्दोलन और वर्तमान क्रान्तिकारी आन्दोलन में वे, सक्रिय योद्धा बन सकते हैं। इसके अलावा, क्रान्तिकारी संघर्ष के लम्बे क्रम में गहरे अध्ययन और आत्मविकास के द्वारा वे उत्तम और सचेत कम्युनिस्ट बन सकते हैं। फिर, हमारे पार्टी विधान में इस बात की भी व्यवस्था की गई है कि कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों को पार्टी से अलग होने की भी आज़ादी होगी (पार्टी में शामिल होने की आज़ादी नहीं है)। अगर किसी मेम्बर को कम्युनिज़्म में पूर्ण विश्वास नहीं है, यदि वह पार्टी के सख़्त जीवन को सह सकने में असमर्थ है, या किसी और कारण से वह पार्टी से अलग होना चाहता है, तो अलग होने की उसे पूरी आज़ादी है। जब तक कि वह पार्टी के भेदों को नहीं खोलता, कम्युनिज़्म का विरोध नहीं करता, पार्टी के खिलाफ़ द्रोह-पूर्ण कार्रवाइयाँ नहीं करता, तब तक पार्टी किसी भी मेम्बर को अलग हो जाने की इजाज़त देती है और उसे छोड़ देती है। लेकिन जहाँ उन अवसरवादियों और ग़द्दारों का सवाल आता है जो चालाकी से पार्टी में घुस आए हैं, तो स्वाभाविक है कि उन्हें हम निकाल बाहर करेंगे। इस तरह हमारी पार्टी की विशुद्धता को क़ायम रखा जा सकता है।

दूसरे, कुछ पार्टी मेम्बरों की विचारधारा पर अब भी अपेक्षाकृत जबर्दस्त व्यक्तिवाद और खुदग़र्ज़ी की छाप है।

इस तरह का व्यक्तिवाद निम्न रूपों में प्रगट होता है: कुछ लोग, जब वे तरह-तरह की ठोस समस्याओं को हल करने बैठते हैं तो अपने व्यक्तिगत हितों को पार्टी के हितों से ऊपर रखते हैं; अथवा वे हमेशा अपने व्यक्तिगत फायदे और नुक़सान के बारे में चिन्ता करते रहते हैं, अपने व्यक्तिगत हितों को तौलते रहते हैं; या वे पद देने में पक्षपात करते हैं और पार्टी के काम का फ़ायदा उठाकर अपने किन्हीं निजी हितों को आगे बढ़ाते हैं। अथवा सिद्धान्त के या पार्टी हितों के प्रश्न के बहाने दूसरे साथियों से अपनी व्यक्तिगत शिकायतों के कारण वे बदला लेने की कोशिश करते हैं।

जब तनख़ाओं, सुविधाओं और निजी जीवन से सम्बंध रखनेवाली दूसरी चीज़ों का सवाल आता है तो वे हमेशा दूसरों से आगे बढ़ जाना चाहते हैं। वे अपनी तुलना सबसे अच्छे कार्यकर्ताओं से करते हैं और उनके साथ होड़ करते हैं और 'अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये हर साधन का इस्तेमाल करते हैं,' और इन चीज़ों के बारे में शेखी बघारते हैं। लेकिन जब काम का सवाल आता है तो वे अपनी तुलना अपने से कम योग्य लोगों से करते हैं। जब कठिनाइयां आती हैं तो वे उनसे बचने की कोशिश करते हैं। ख़तरे के मौक़ों पर वे भागने की कोशिश करते हैं। अर्दलियों की बात होती है तो वे हमेशा ज़्यादा चाहते हैं। रहने के क्वार्टरों का सवाल होता है तो वे हमेशा सबसे अच्छे क्वार्टर चाहते हैं। वे शान दिखाना चाहते हैं और पार्टी को मिली हुई इज़्ज़त में हाथ बँटाना चाहते हैं। तमाम अच्छी चीज़ों पर वे एकाधिकार क़ायम करने की कोशिश करते हैं, लेकिन जिस चीज़ में कोई गड़बड़ी हो तो उसकी ज़िम्मेदारी संभालने में वे ज़रा भी हाथ नहीं लगाएँगे।

साथियो! ऐसे लोग भी हमारी पार्टी में हैं। उनके दिमाग़ शोषक वर्गों की विचारधारा से भरे हुए हैं। 'हर आदमी अपनी देखभाल करे और सबसे फिसड्डी को शैतान ले जाए,' 'मनुष्य एक स्वार्थी पशु है,' 'दुनिया में सच्चे निस्वार्थी व्यक्ति जैसी कोई चीज़ नहीं है, और यदि है तो फिर इस तरह का व्यक्ति गधा या मूर्ख है,' जैसे मुहावरों तक में वे विश्वास करते हैं। अपनी खुदग़र्ज़ी और व्यक्तिवादिता को उचित ठहराने के लिये वे शोषक वर्गों के ऐसे तमाम मुहावरों का इस्तेमाल करते हैं।

इस तरह की खुदग़र्ज़ व्यक्तिवादिता बहुधा पार्टी के अन्दर सिद्धांतहीन झगड़ों, गुटबाजी, संकीर्णतावाद और विभागवाद, आदि की गलतियों के रूप में प्रगट होती है। वह ऐसे कामों के रूप में प्रगट होती है जो पार्टी अनुशासन की अवहेलना करते हैं या जान-बूझ कर उसे कमज़ोर बनाते हैं। अधिकांश सिद्धांत-हीन झगड़े व्यक्तिगत स्वार्थों से पैदा होते हैं। गुटबाज़ी और संकीर्णता-वाद अक्सर व्यक्ति अथवा अल्पमत के हितों को पार्टी के हितों से ऊपर रखते हैं। इस तरह के लोग सिद्धांत-विहीन गुटबाज़ी के संघर्षों के दौरान में अक्सर जान-बूझ कर पार्टी के संगठन और अनुशासन को कमज़ोर बनाते हैं, किन्हीं व्यक्तियों पर सिद्धांत-विहीन ढंग से या जान-बूझ कर हमला करते हैं और किन्हीं लोगों के साथ एक दूसरे को रुष्ट न करने के, एक दूसरे को बचाने के और एक दूसरे के सामने शेखी बघारने और एक दूसरे की तारीफ़ करने के उद्देश्य से सिद्धांत-विहीन ढंग से मित्रता क़ायम करते हैं।

जहाँ तक पार्टी के अन्दर विभागवाद की बात है तो वह इस तरह के व्यक्तिवाद से भिन्न है। मुख्यतया विभागवाद की भावना इसलिये पैदा हो जाती है कि एक कॉमरेड केवल आंशिक हितों को देखता है, काम के केवल अपने भाग को देखता है, पूरी स्थिति को नहीं देखता और दूसरों के काम को नहीं देखता। इसलिये वह केवल काम के अपने हिस्से के हितों को इस हद तक देखने की ग़लती करता है कि दूसरों के मार्ग का रोड़ा बन जाता है। राजनीतिक दृष्टि से बात की जाए तो यह संघवाद से मिलती-जुलती चीज़ है। जो साथी विभागवाद की ग़लती करते हैं उनके बारे में यह ज़रूरी नहीं है कि उनके उद्देश्य या उनका दृष्टिकोण बहुत बुरा हो। निस्संदेह, इसकी तुलना व्यक्तिवाद से नहीं की जा सकती। फिर भी व्यक्तिवादी दृष्टिकोण रखनेवाले लोग अक्सर विभागवादी ग़लती करते हैं।

तीसरे, घमंड, वैयक्तिक वीरता, दिखावे, आदि की प्रवृत्तियाँ पार्टी के अनेकों साथियों की विचारधारा में कम या अधिक मात्रा में अब भी मौजूद हैं।

ऐसे विचार रखनेवाले लोगों के सामने सबसे पहले पार्टी के अन्दर अपनी स्थिति का ख़याल होता है। वे दिखावा करना चाहते हैं और चाहते हैं कि दूसरे लोग उनकी चापलूसी करें और उनके गुण बखाने। वे नेता बनने की महत्वाकांक्षा रखते हैं। वे अपनी क़ाबिलियत का फ़ायदा उठाते हैं और श्रेय लेना, अपनी शान बघारना और हर चीज़ को अपने हाथ में रखना पसन्द करते

हैं। दूसरों के प्रति वे असहिष्णु होते हैं। घमंड उनमें कूट-कूट कर भरा होता है। सख़्त मेहनत में लगना वे पसन्द नहीं करते और टेकनीकल काम करने के लिये वे राजी नहीं होते। वे घमंडी होते हैं। जब कोई छोटी सफलता प्राप्त कर लेते हैं तो वे अत्यधिक गुस्ताख़ और उदण्ड बन जाते हैं जैसे कि दुनिया में उनकी तरह और कोई न हो। अपनी चमक-दमक से वे दूसरों को दबाने की कोशिश करते हैं और दूसरों के साथ समानता, विनम्रता और शराफत का बर्ताव वे नहीं कर सकते। उन्हें अपने ऊपर घमंड होता है और वे दूसरों को लेक्चर देना, सिखाना और उन पर हुक्म चलाना पसन्द करते हैं। वे हमेशा दूसरों से ऊपर चढ़ने की कोशिश करते हैं। वे दूसरों के आदेश नहीं मानते, दूसरों से और ख़ास तौर से आम जनता से विनम्रतापूर्वक सीखने के वे ख़िलाफ़ होते हैं; न वे दूसरों की आलोचना को मानते हैं। उनकी 'तरक्की की जाए' तो उन्हें अच्छा लगता है, लेकिन अपनी 'तनज़ुली' को वे नहीं सह सकते। वे केवल 'अच्छे मौसम में' काम कर सकते हैं, 'ख़राब में' नहीं। आक्रमणों या अन्यायों को वे नहीं सह सकते, और न वे अपने को परिस्थितियों के अनुकूल ही बना सकते हैं। वे 'ऐसे महान आदमी नहीं हैं जो जब ज़रूरत हो तो आगे आ सकें और जब पीछे रहना जरूरी हो तो पीछे रहें।' अभी तक अपने अन्दर घुसी हुई 'प्रसिद्धि की इच्छा' से वे मुक्त नहीं हो सके हैं और वे अपने को कम्युनिस्ट मार्ग के 'महान व्यक्ति' और 'वीर' बनाने की कोशिश करते रहते हैं। ऐसी इच्छाओं की पूर्ति के लिये वे किन्हीं भी उपायों का इस्तेमाल करने में संकोच नहीं करते। लेकिन जब उनके उद्देश्य पूरे नहीं होते, जब उन्हें निराशा का, या साथियों की ओर से उदासीन व्यवहार का सामना करना पड़ता है तो उनके विचलित हो जाने का ख़तरा पैदा हो जाता है। पार्टी के इतिहास में इस तरह से विचलित होकर मेम्बरों द्वारा पार्टी को छोड़ जाने के कम उदाहरण नहीं हैं। ऐसे लोगों के दिमागों में शोषक वर्गों की विचारधारा के अवशेष मौजूद हैं। वे कम्युनिज़्म की महानता को नहीं समझते और न उनका दृष्टिकोण एक कम्युनिस्ट के दृष्टिकोण की तरह व्यापक है।

कम्युनिस्टों को अपने सम्बंध में ढिलाई न रखनी चाहिये और न घमंड करना चाहिये। माना कि कुछ साथी बहुत होशियार हैं और उन्होंने कुछ काम बहुत अच्छी तरह किया है और बड़ी सफलताएँ हासिल की हैं। उदाहरण के लिये, हमारे फौजी अफ़सरों ने हज़ारों हज़ार आदमियों का नेतृत्व किया है और

विजय हासिल की है, या हमारी पार्टी के और जन-कार्य के नेताओं ने विभिन्न स्थानों पर अपने काम के द्वारा अत्यधिक अनुकूल स्थिति पैदा कर दी है। हो सकता है कि उनकी सफलताएं 'महान' हों, जिन पर वे गर्व कर सकते हैं, लेकिन कम्युनिज़्म के पूरे उद्देश्य के साथ तुलना करने पर आखिर ये सफलताएँ कितनी बड़ी रह जाती हैं ? उनकी सफलताएँ 'समुद्र में एक बूंद' के समान हैं। कम्युनिस्ट विश्व दृष्टिकोण रखनेवाले किसी व्यक्ति के लिये आखिर इसमें ऐसी कौन सी चीज़ है जिस पर कि वह वास्तव में अभिमान कर सके ?

जहाँ तक वैयक्तिक पार्टी मेम्बरों का सवाल है तो अपनी व्यक्तिगत स्थिति के लिये चिन्ता करना कैसे ठीक हो सकता है ? किसी आदमी की स्थिति एक सम्राट से ऊंची नहीं हो सकती। लेकिन अगर एक सम्राट की स्थिति की कम्युनिज़्म के उद्देश्य के योद्धा की स्थिति से तुलना की जाए तो वह कितनी बड़ी रह जाती है ? जैसा कि स्तालिन ने कहा है, वह 'समुद्र में केवल एक बूंद के बराबर' है। फिर चिन्ता करने लायक और शेखी बघारने लायक कौन सी चीज़ है ?

हाँ, हमारी पार्टी में, कम्युनिस्ट उद्देश्य के लिये हमें अगणित कम्युनिस्ट वीरों की और इज्जत की स्थिति रखनेवाले पार्टी मेम्बरों और जन-नेताओं की विशाल संख्या में ज़रूरत है। इस समय हमारे पास वास्तव में बहुत कम क्रांतिकारी वीर और प्रतिष्ठावान नेता हैं। हमें अब भी इस बात की ज़रूरत है कि बहुत अच्छे कम्युनिस्ट क्रांतिकारी वीरों और नेताओं की विशाल संख्या को हम तमाम क्षेत्रों में पक्का और विकासपूर्ण बनाएँ। हमारे उद्देश्य के लिये यह बहुत ही महत्वपूर्ण चीज़ है जिसकी किसी भी हालत में उपेक्षा नहीं की जा सकती। जो कोई इस चीज़ की ओर तिरस्कार की भावना दिखलाता है वह कम्युनिज़्म के उद्देश्य को कैसे आगे बढ़ाया जाए, इसे जरा भी नहीं समझता। इसलिये हमें चाहिये कि क्रांतिकारी उद्देश्य के सम्बंध में प्रगति करने के लिये हम अपने पार्टी मेम्बरों की इच्छा और महत्वाकांक्षा को और भी अधिक बढ़ाएँ। इस समय इस संबंध में हम काफ़ी नहीं कर रहे हैं। उदाहरण के लिये, यह बात, इस चीज़ से भी ज़ाहिर होती है कि कुछ पार्टी मेम्बर काफ़ी मेहनत से अध्ययन नहीं कर रहे हैं और राजनीति और सिद्धांतों में उनकी दिलचस्पी काफ़ी गहरी नहीं है।

इसलिये, वैयक्तिक वीरता और दिखावे का हम विरोध करते हैं, किन्तु अपने मेम्बरों में प्रगति के लिये इस तरह की महात्वाकांक्षा का हम कदापि विरोध नहीं करते—यह तो कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों का एक अत्यंत मूल्यवान गुण है। लेकिन प्रगति के लिये सर्वहारा वर्गीय और कम्युनिस्ट महत्वाकांक्षा, प्रगति के लिये व्यक्तिवादी महत्वाकांक्षा से बिलकुल भिन्न है। पहली सत्य की तलाश करती है, सत्य की रक्षा करती है, और इसके अलावा, सत्य के लिये अत्यंत कारगर रूप से संघर्ष करती है। उसके सामने असीमित विकास का एक भावीपथ-चित्र होता है और उसका रूप प्रगतिशील होता है। लेकिन, दूसरी प्रगतिशीलता—जहाँ तक व्यक्ति का सम्बंध है—अत्यंत सीमित है। इसके अलावा, उसका कोई भावीपथ-चित्र नहीं है; क्योंकि, अक्सर व्यक्ति के निजी हितों के खातिर, वह समझ-बूझ कर सत्य को काट देती है, ढक देती है, या तोड़-मरोड़ देती है। इसलिये हमारे साथियों को समझना चाहिये कि कम्युनिस्ट मार्ग के सच्चे नेता और वीर कभी भी व्यक्तिवादी और स्व निर्वाचित नहीं हो सकते। जो कोई खुद अपने आपको नेता नियुक्त करता है, या व्यक्तिगत रूप से नेता बनने की कोशिश करता है वह हमारी पार्टी में कभी नेता नहीं बन सकता। तमाम नेताओं ने, वे चाहे राष्ट्रीय हों चाहे स्थानीय, आम जनता के समर्थन के आधार पर सफलता प्राप्त की है। हमारी पार्टी के साधारण सदस्य अपने नेताओं के रूप में ऐसे लोगों का समर्थन नहीं करेंगे जो घमंडी हैं, जो वैयक्तिक वीरता, दिखावे और नेतृत्व लिये व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा और अहमन्यता की भावना के शिकार हैं। दूसरे मेम्बरों और जनता से इस बात की माँग करने का किसी पार्टी मेम्बर को अधिकार नहीं है कि नेता के रूप में वे उसका समर्थन करें, या उसकी लीडरी की हिफ़ाज़त करें। केवल ऐसे पार्टी मेम्बर ही पार्टी और आम जनता का विश्वास और समर्थन प्राप्त कर सकते हैं और इस प्रकार कम्युनिस्ट उद्देश्य के वीर और नेता बन सकते हैं जो जरा भी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा नहीं रखते, जो पार्टी के प्रति वफ़ादार हैं, जिनमें कम्युनिस्ट नैतिकता और कम्युनिस्ट गुण प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं, जिनमें मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धांतों और तरीक़ों पर अधिकार हासिल करने की योग्यता है, जिनमें अमली काम की काफ़ी योग्यता है, जो वास्तव में पार्टी-कार्य का संचालन कर सकते हैं, जो निरंतर और अत्यंत परिश्रम से अध्ययन करने और प्रगति करने की कोशिश करते हैं।

हमारे साथियों को इस चीज़ को भी समझना चाहिए कि एक पार्टी मेम्बर—चाहे वह नेता या वीर हो, या कोई भी हो—कम्युनिस्ट उद्देश्य के काम का केवल एक भाग ही पूरा कर सकता है और केवल आंशिक जिम्मेवारी ही संभाल सकता है। कम्युनिस्ट उद्देश्य की प्राप्ति का कार्य एक सामूहिक कार्य है। उसके लिये लाखों अगणित लोगों को एक लम्बे अर्से तक काम करने की ज़रूरत है, उस पर कोई व्यक्ति अपना एकाधिकार नहीं कायम कर सकता। हमारे महान नेताओं, मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन ने भी कम्युनिस्ट उद्देश्य के कार्य के केवल एक अंश को ही पूरा किया है। उनके काम को पूरा करने के लिये अभी हमारे ऐसे करोड़ों लोगों के लगातार प्रयत्नों की ज़रूरत है। हम साधारण पार्टी मेम्बर भी कम्युनिज़म के उद्देश्य की पूर्ति के कार्य का एक अंश ही पूरा करते हैं और उसकी जिम्मेदारी के एक अंश को ही संभालते हैं। निस्संदेह हमारा अंश मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन या स्तालिन के अंश से बहुत छोटा है। फिर भी हम सबका एक-एक अंश है। यद्यपि एक महान अंश और एक छोटे अंश में अन्तर है, तथापि है तो वह अंश ही। इसलिये अगर हम काम के एक अंश को भी अच्छी तरह पूरा कर सकते हैं तो इसका मतलब होता है कि हमने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया है।

बेशक, हमें अपने काम के और बड़े अंश को करने की भरसक कोशिश करनी चाहिए। लेकिन अगर हम ऐसा नहीं कर सकते तो हम उसका छोटा अंश तो कर ही सकते हैं। जहाँ तक हमारी व्यक्तिगत बात है, तो इसके बारे में चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं है। किसी भी हालत में, कम से कम इस बात की कोशिश तो हमें करनी ही चाहिए कि कम्युनिस्ट उद्देश्य की प्रगति के मार्ग में हम बाधक न बनें, और अपने कार्य का अंश—वह चाहे बड़ा हो, या छोटा—पूरा करें। अपने खुद के काम की तरफ हमारा यही रुख होना चाहिए। कुछ साथी हैं जो टेकनीकल काम करने के लिए राज़ी नहीं होते। वे सोचते हैं कि ऐसा करना अपने को छोटा बनाना है जिससे कि अगली पीढ़ियों में वे प्रसिद्ध न हो सकेंगे (वास्तव में एडीमन, और स्ताखानोव आदि की तरह वे प्रसिद्ध हो सकते हैं, जो टेकनीकल काम करने वालों के अन्दर से ही पैदा हुए थे) और वे अपनी प्रतिभा का विकास न कर सकेंगे। मालूम होता है कि वे सोचते हैं कि अगर वे इस तरह का काम करेंगे तो कम्युनिस्ट उद्देश्य को भारी नुक़सान पहुँचेगा। इसलिए, एक प्रकार से, अपनी

उन्नति करने की महात्त्वाकांक्षा को जिसे कि सब पार्टी मेम्बरों में होना चाहिए—वे खो देते हैं।

साथियो! सोचने का यह ढंग गलत हैं। टेक्नीकल काम हमारे पार्टी के काम में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इस तरह का काम करने वाले साथी भी कम्युनिज़्म के उद्देश्य के लिए उसी तरह अपना भाग अदा कर रहे हैं जिस तरह कि दूसरी किस्मों का काम करनेवाले साथी करते हैं। एक कम्युनिस्ट को चाहिए कि किसी भी काम को, जो उस वक्त महत्त्वपूर्ण हो, करे—चाहे वह काम उसे पसन्द हो या न हो, चाहे उससे लोकप्रियता मिलती हो या न मिलती हो। उदाहरण के लिए, रूसी क्रान्ति की विजय के बाद बहुत से कार्यकर्ताओं को—जो पार्टी का महत्त्वपूर्ण और राजनीतिक कार्य कर रहे थे—वहाँ से हटा कर नयी अर्थनीति को कार्यान्वित करने के लिए व्यापार-कला सीखने के काम में लगा दिया गया था; क्योंकि उस समय व्यापार को अच्छी तरह चलाकर ही कम्युनिस्ट पार्टी निजी पूंजी की व्यवस्था पर विजय हासिल कर सकती थी। गोकि व्यापार करना किसी भी पार्टी मेम्बर को पसन्द न था, तब भी उन सबने उसे किया था क्योंकि वह महत्त्वपूर्ण था। उनका ऐसा करना सही था। अगर वे ऐसा न करते तो ग़लत होता।

यहाँ पर, मैं फिर दोहरा दूं कि पार्टी मेम्बरों को काम देते समय पार्टी नेताओं को स्वाभाविक रूप से ही चाहिए कि वे अलग-अलग पार्टी मेम्बरों की विभिन्न परिस्थितियों का ख़याल रखें; वे इस बात को देखें कि उन्हें जो काम दिया जाता है वह उनके व्यक्तित्व के अनुकूल हो और उनके गुणों को विकसित करने में सहायता दे तथा अपनी उन्नति करने के लिये उन्हें उत्साहित करे। लेकिन, इन कारणों के आधार पर दिये गये काम को करने से किसी पार्टी मेम्बर को इनकार नहीं करना चाहिये।

चौथे, पार्टी में थोड़े से ऐसे साथियों की भी एक संख्या है जो शोषक वर्गों की विचारधारा को जोरों से प्रतिबिम्बित करते हैं। पार्टी मेम्बरों और पार्टी की अन्दरूनी समस्याओं पर विचार करते समय वे अक्सर ऐसे तरीक़ों का इस्तेमाल करते हैं जो कि दुश्मन के ख़िलाफ़ इस्तेमाल किये जाते हैं, क्योंकि उनके अन्दर पारस्परिक सहायता और मैत्री की महान, सच्ची, कम्युनिस्ट और सर्वहारावर्गीय भावना का बिल्कुल अभाव होता है।

इस तरह की विचारधारा रखने वाले लोग पार्टी के अन्दर अपने को ऊंचा उठाने और अपना विकास करने की कोशिश करते हैं, लेकिन इस उद्देश्य को वे दूसरों को नीचे दबाकर और उनके विकास को रोक कर हासिल करते हैं। वे दूसरों के माथे पर चढ़कर ऊपर उठना चाहते हैं और उन लोगों से जो उनसे अधिक योग्य होते हैं, वे ईर्षा करते हैं। अगर दूसरे लोग उनसे आगे बढ़ जाते हैं, उनकी बराबरी पर आ जाते हैं या उनके साथ हो जाते हैं तो वे नाखुश होते हैं। वे तब तक खुश नहीं होते जब तक कि दूसरों को नीचे, या अपने से पीछे रखने में वे सफल नहीं होते। दूसरों के मातहत होने के लिये वे राज़ी नहीं होते। दूसरों की कठिनाइयों का ख़याल किये बिना वे केवल खुद अपनी भलाई, खुद अपने विकास की पर्वाह करते हैं। जब वे दूसरे साथियों को मुश्किल में फँसा, नुक़सान पहुँचते, निराश होते, या हमलों का शिकार होते देखते हैं तो वे उनकी मुसीबत पर खुश होते हैं, छिपे-छिपे आनंद मनाते हैं। उनके लिये उनके दिल में ज़रा भी सहानुभूति नहीं होती। वे दूसरे साथियों को चोट पहुँचाने की साज़िश करने तक से, 'जब वे मुसीबत में हों तो उन पर और मुसीबत ढाने' तक से बाज़ नहीं आते; और दूसरे साथियों की कमज़ोरियों और कठिनाइयों का फ़ायदा उठाकर उन पर हमले करते हैं और उनकी प्रतिष्ठा को नष्ट करते हैं। पार्टी में भी, पार्टी संगठन की कमज़ोरियों का वे फ़ायदा उठाते हैं और अपने गैर-पार्टी उद्देश्यों को हासिल करने की और इस तरह की कमज़ोरियों को और बढ़ाकर निजी लाभ बटोरने की कोशिशें करते हैं। पार्टी के अन्दर अफवाहें फैलाना, पीठ पीछे दूसरों की बुराई करना और साथियों के आपसी सम्बंधों को बिगाड़ने के लिये चालें चलना उन्हें बहुत अच्छा लगता है। पार्टी के अन्दर होनेवाले तमाम सिद्धांत-हीन झगड़ों में हिस्सा लेना उन्हें अच्छा लगता है और तमाम 'बहसों' में वे अत्यधिक दिलचस्पी लेते हैं। खास तौर से जब पार्टी कठिनाइयों का सामना कर रही हो तो वे ऐसी बहसों को उसके अन्दर पैदा करने और बढ़ाने की कोशिश करते हैं।

संक्षेप में, वे पूरे मानों में कमीने होते हैं और ईमानदारी का उनमें ज़रा भी अंश नहीं होता। तो क्या यह कहना महज़ एक मज़ाक नहीं है कि ऐसे लोग मार्क्सवाद–लेनिनवाद के सिद्धांतों और तरीक़ों में पारंगत हो सकते हैं और सर्वहारा वर्ग की विचारधारा का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं? बिल्कुल साफ़

है कि उनकी विचारधारा पूर्णतया पतनोन्मुख, शोषक वर्गों की विचारधारा का प्रतिबिम्ब है, क्योंकि अपना विकास करने के लिये तमाम शोषक दूसरों के हितों पर इसी तरह कुठाराघात करते हैं। अपनी धन-दौलत को बढ़ाने के लिये, या किसी मंदी के समय अपने को दिवालिया होने से बचाने के लिये पूंजीपति अनेक छोटे छोटे पूंजीपतियों को खतम कर देते हैं और अनगिनत मज़दूरों को भूखों मरने के लिये मजबूर कर देते हैं। अपनी ज़मीन बढ़ाने के लिये ज़मींदार किसानों का शोषण करते हैं और बहुतों की ज़मीनों को हड़प लेते हैं। जर्मनी, इटली और जापान ऐसे फासिस्ट देशों ने अपने को बढ़ाने के लिये दूसरे देशों के विकास को रोक दिया था तथा आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया, अबीसीनिया, आदि पर क़ब्ज़ा कर लिया था और चीन पर आक्रमण किया था। दूसरों के हितों को नुक़सान पहुँचाना और दूसरों को दिवालिया बनाना शोषकों के विकास की ज़रूरी शर्तें हैं। उनके सुख का आधार दूसरों की तकलीफ़ें ही होती हैं।

इसलिये, शोषकों के अन्दर सच्ची दृढ़ एकता, सच्ची पारस्परिक सहायता और सच्ची मानवी सहानुभूति का मिलना असंभव है। शोषकों के लिये ज़रूरी है कि दूसरों के ख़िलाफ़ गद्दारी-भरी साज़िशें रचें और गुप्त हथकंडों का इस्तेमाल करें, क्योंकि दूसरों को मिटाने, या उन्हें दिवालिया बनाने से उनका लाभ होता है। तिस पर भी जनता के सामने उन्हें झूठ बोलना पड़ता है और बगुला-भगतों और 'न्याय के पुजारियों' का स्वांग रचना पड़ता है। पतन के काल में तमाम शोषकों के ये ही लक्षण होते हैं। लेकिन ऐसी चीज़ें हमारी पार्टी के अन्दर भी कुछ लोगों की विचारधारा में दिखाई देती हैं। शोषकों के लिये इस तरह की चीज़ें उनके 'उच्च' आचार-शास्त्र का आदर्श स्वरूप हो सकती हैं, लेकिन सर्वहारा वर्ग के लिये तो वे विश्वासघात का विष हैं।

अभी जो कुछ बयान किया गया है उससे सर्वहारा वर्ग बिल्कुल भिन्न है। सर्वहारा वर्ग दूसरों का शोषण नहीं करता, बल्कि दूसरों द्वारा शोषित होता है। मज़दूरों के हितों में, या मज़दूरों के और दूसरे तमाम उत्पीड़ित और शोषित मेहनतकश लोगों के हितों में कोई बुनियादी संघर्ष नहीं होते। अपना विकास करने के लिये और खुद अपनी मुक्ति प्राप्त करने के लिये न सिर्फ़ मज़दूरों के लिये दूसरे मज़दूरों, या मेहनतकश लोगों के हितों और विकास पर प्रहार करना अनावश्यक है, बल्कि उनके लिये ज़रूरी है कि वे दूसरे मज़दूरों और मेहनतकश लोगों के साथ एकता स्थापित करें। केवल तभी मज़दूर अपना विकास

कर सकेंगे, अपनी स्थिति को ऊँचा कर सकेंगे और अपने को मुक्त कर सकेंगे। सर्वहारा वर्ग की मुक्ति तभी संभव है जब उसके साथ-साथ तमाम मेहनतकश लोगों और संपूर्ण मानव जाति की मुक्ति हो। इक्के-दुक्के मजदूर को, या मजदूरों के एक हिस्से को अलग से मुक्त करना असंभव है। मानव जाति की मुक्ति के उद्देश्य को उसकी अन्तिम सीमा तक ले जाना चाहिये; बीच में रुकना, या समझौता कर लेना असंभव है। और मानव जाति की मुक्ति के माने संपूर्ण मानवता की आम और पूर्ण मुक्ति होना चाहिये।

सर्वहारा वर्ग की वस्तुगत स्थिति का प्रतिनिधित्व करने वाली जागृत मजदूरों की विचारधारा शोषकों की विचारधारा के बिल्कुल खिलाफ़ है। एक तरफ़ तो जनता के आम दुश्मनों से निबटते समय निस्संदेह उन्हें अत्यंत निर्मम उपायों का इस्तेमाल करना होता है; दूसरी तरफ़, खुद अपने भाइयों और साथियों के साथ व्यवहार करते समय वे ऐसे उपायों का प्रयोग कभी नहीं करते। इस तरह, दुश्मन की तरफ़ उनके रुख और उसके खिलाफ़ इस्तेमाल किये जाने वाले उपायों में और अपने दोस्तों और साथियों की तरफ़ उनके रुख तथा उनके साथ इस्तेमाल किये जानेवाले उपायों में वे साफ़-साफ़ भेद करते हैं। खुद अपने वर्ग-भाइयों तथा उन तमाम मेहनतकश लोगों के लिये जिनका शोषण और उत्पीड़न हो रहा है, उनके दिल में महान व सच्ची मित्रता, स्नेह और सहानुभूति की भावना होती है। खुद अपने भाइयों के साथ व्यवहार में वे पारस्परिक सहायता, दृढ़ मैत्री और सच्ची समानता की जबरदस्त भावना प्रदर्शित करते हैं। इस बात को मानने से वे पूर्ण रूप से इन्कार करते हैं कि खुद उनके भाइयों के बीच, या मानवता के अन्दर किसी को विशेष अधिकार प्राप्त हैं। न वे यह विचार ही रखते हैं कि उनके खुद के कोई विशेष अधिकार हैं। उनके लिये ऐसी चीज अविचारणीय और अपमानपूर्ण है। वे अपना विकास करना चाहते हैं और अपने को ऊंचा उठाना चाहते हैं; लेकिन वे यह जानते हैं कि साथ ही साथ उन्हें दूसरों का भी विकास करना चाहिए, संपूर्ण श्रमजीवी वर्ग की स्थिति ऊंची उठानी चाहिये। सिर्फ़ इसी तरह वे अपने को ऊंचा उठा सकते हैं। विचारधारा, राजनीति, या काम के सिलसिले में दूसरों से पीछे रहना उन्हें नापसन्द है और प्रगति के लिये प्रयत्न करने की उनके दिल में उच्च महात्वाकांक्षा है; लेकिन वे जानते हैं कि उन लोगों का, जो उन चीजों में उनसे अधिक कुशल हैं, उन्हें आदर और स्नेह करना चाहिये और उनकी

सहायता करनी चाहिये। ऐसे लोगों से वे बिना किसी प्रकार की ईर्षा के सीखने की कोशिश करते हैं। अपने खुद के वर्ग और दुनिया की तमाम श्रमजीवी जनता की दुखदाई और कठिन दशा के सम्बंध में उन्हें अत्यधिक चिन्ता होती है। उन्हें श्रमजीवी जनता के हर जगह चलनेवाले मुक्ति संघर्ष की और उसकी जीतों और हारों की फ़िक्र रहती है। वे जानते हैं कि श्रमजीवी जनता की हर जीत, या हार के माने—चाहे वह कहीं पर हो—खुद उनकी जीत या हार होते हैं। इसके अलावा, इस तरह की जीतों और हारों के सम्बंध में वे अत्यधिक सहानुभूति और चिन्ता प्रगट करते हैं।

वे सोचते हैं कि कहीं की भी श्रमजीवी जनता या तमाम उत्पीड़ित जनता की मुक्ति के संघर्ष के सम्बंध में उदासीनता का रुख अपनाना, या दूसरों की विपदाओं पर खुशी ज़ाहिर करना गुनाह होगा। खुद अपने साथियों और भाइयों को वे प्यार करते हैं। अपने साथियों और भाइयों की कमज़ोरियों और ग़लतियों को वे खुले तौर पर, साफ़-साफ़ और सच्चाई से बता देते हैं। (वास्तव में, यही प्यार का सच्चा रूप है।) सिद्धांत के मामले में अपने साथियों के सामने वे कभी घुटने नहीं टेकते, न उनके साथ समझौता करते हैं, न उनकी ग़लतियों और कमज़ोरियों को ही बढ़ावा देते हैं (ऐसा करना प्यार का सबूत न होगा); बल्कि इन कमज़ोरियों और ग़लतियों को दूर करने में हर तरह से उनकी मदद करते हैं। इन कमज़ोरियों और ग़लतियों का फ़ायदा उठा कर, या उन्हें बढ़ा कर वे अपने साथियों को किसी मुसीबत की, या एकदम निराशापूर्ण, स्थिति में नहीं ढकेलते।

अपने साथियों और भाइयों के साथ व्यवहार करते समय वे 'बुराई के बदले भलाई करते' हैं। दूसरे साथी अगर सिर्फ़ अपनी ग़लतियों को दुरुस्त करने के लिये राज़ी हो जाएँ तो उनको जवाब देने की उनके अन्दर ज़रा भी इच्छा नहीं होती। 'अपने से अधिक और दूसरों से कम की वे अपेक्षा करते हैं।' अपने साथ वे सख़्ती बरतते हैं और दूसरे साथियों के साथ वे मुलायमियत का व्यवहार करते हैं। लेकिन, सिद्धांत के प्रश्नों पर वे दृढ़ और सख़्त रुख रखते हैं और स्पष्टवादिता, सच्चाई और गंभीरता से पेश आते हैं। सिद्धांत के प्रश्नों पर वे समझौता नहीं करते। पार्टी के हितों को किसी भी रूप में नुक़सान पहुँचाने वाले आदमी को वे माफ़ नहीं करते, न वे किसी को

अकारण अपना अपमान करने देते हैं। ऐसे आदमी की तरफ़ खास तौर से उनके दिल में तिरस्कार होता है जो उनकी अत्यधिक प्रशंसा करता है, चापलूसी करता है, या सिद्धान्त-हीन ढंग से उनकी पूजा करता है। खुद अपने साथियों के अन्दर तमाम सिद्धान्त-हीन संघर्षों का वे विरोध करते हैं और साथ ही साथ अपने को ऐसे सिद्धान्त हीन झगड़ों में फँसने से बचाए रखते हैं। उनकी पीठ पीछे की जाने वाली गैर-ज़िम्मेदार और अनियमित टीका-टिप्पणियों से वे विचलित, या रुष्ट नहीं होते और न उसके कारण सिद्धांत के सवालों पर वे अपने दृष्टिकोण को अथवा अपने विचारपूर्ण और शान्त रुख को तिलांजलि ही देते हैं।

यह सब सर्वहारा वर्ग की विचारधारा है। हमारे हर पार्टी मेम्बर को उसी के अनुसार चलने तथा उसे ग्रहण करने और सीखने की कोशिश करनी चाहिए। हमारे महान नेताओं, मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन की सम्पूर्ण जिन्दगियाँ इसी विचारधारा का सर्वोच्च उदाहरण और ठोस मूर्त रूप हैं। वर्तमान समाज में ये ही चीजें मानवता की न्याय-प्रियता की प्रतीक हैं और इस न्याय-प्रियता को कम्युनिस्ट पार्टी ही प्रदर्शित करती है। इस तरह की न्याय-प्रियता को हमें बढ़ाना और बुलन्द करना चाहिए जिससे कि हर प्रकार की दुष्टता का अन्त किया जा सके।

पाँचवें, हमारी पार्टी तथा विभिन्न संगठनों में अब भी नौकरशाही-पन मौजूद है। इस विषय पर मैं बाद में भी बात करूँगा। संकुचित मनोवृत्ति रखने और पूरी परिस्थिति का ध्यान किये बिना छोटी-छोटी चीजों में उलझ जाने की कमजोरियां अब भी कुछ साथियों में मौजूद हैं। उनके अन्दर कम्युनिस्ट का महान साहस अथवा उसकी दूरदर्शिता नहीं है। बड़े-बड़े प्रश्नों की ओर से आँखें मूँदकर वे अपनी नाक के नीचे के छोटे-छोटे सवालों में उलझे हुए हैं। पार्टी और क्रान्ति की बुनियादी समस्याओं और अत्यंत महत्वपूर्ण घटनाओं में उन्हें अधिक दिलचस्पी नहीं है। इसके बजाय वे अक्सर सुई या डोरे के एक छोटे टुकड़े जैसे तुच्छ सवालों में, या महत्वहीन टीका-टिप्पणियों में उलझे रहते हैं। इन तुच्छ चीजों पर दूसरों के साथ गंभीरतापूर्वक और अन्त-हीन काल तक वे बहसें करेंगे और अनियंत्रित भावावेश से उनका गला रुँध जाएगा। छोटी भेंटों, या पक्षपातों की रिश्वत के जरिए उन्हें आसानी से दूसरे

लोग अपनी तरफ़ भी कर सकते हैं। ग्रामीण समाज के छोटे उत्पादक की कूप-मण्डूकता के तमाम लक्षण उनमें मौजूद हैं।

ऐसे भी कुछ व्यक्ति हैं जिनका कोई स्पष्ट और निश्चित दृष्टिकोण नहीं मालूम होता। उनके लिये यह भी सही हो सकता है और वह भी सही हो सकता है। गेंद को बल्ले के दोनों तरफ़ से वे खेलते हैं और हरेक को खुश करने की कोशिश करते हैं। जिस आदमी से वे नफरत करते हैं उसका सामना होने पर वे उसके साथ भी चल सकते हैं। आपकी पीठ पीछे वे आपकी बुराई करते हैं, लेकिन सामना होने पर वे आपकी तारीफ़ कर सकते हैं। एक आदमी से एक व्यक्ति के बारे में वे तारीफ़ कर सकते हैं और दूसरे आदमी से उसी व्यक्ति की वे बुराई कर सकते हैं। 'बोलते समय व्यक्तियों और परिस्थितियों के प्रति आदर दिखाना,' 'हवा के रुख के साथ बहना' और बिना किसी सिद्धांत के जीतने वाले का साथ देना—ये ही उनके लक्षण हैं। कभी-कभी तटस्थ बैठकर वे सिर्फ़ यह देखते हैं कि जीत किसकी होगी और फिर जीतनेवाले की तरफ़ मिल जाते हैं। ऐसे लोग जो 'न इधर हैं, न उधर हैं' बल्कि चमगादड़ की तरह 'दोनों तरफ' हैं, हमारी पार्टी में एकदम अज्ञात नहीं हैं। वे एक दलाल की विशेषताएँ रखते हैं।

इसके अलावा, कुछ ऐसे लोग हैं जो पुराने समाज के शोषक वर्गों द्वारा दिये गये लोभों के सामने टिक नहीं पाते। आसपास जब वे रंग-बिरंगी दुनिया, चमकता हुआ सोना और सुन्दर स्त्रियों को देखते हैं तो वे ढुलमुलाने लगते हैं। परिणाम-स्वरूप वे अपराध कर सकते हैं, या पार्टी और क्रांति के साथ ग़द्दारी तक कर सकते हैं।

फिर, मध्यम वर्ग के लोगों की विशेषताएँ—आवेश और असंगतता—तथा लफंगे मज़दूरों और दिवालिया किसानों के तोड़-फोड़ वाले रूप के भी चिन्ह पार्टी के कुछ साथियों की विचारधारा में पाये जाते हैं। इस सूची को और बढ़ाते जाने की हमें कोई ज़रूरत नहीं है।

सारांश यह है कि हम लोगों के अलावा, जो महान और संकल्पशाली सर्वहारा वर्ग की कम्युनिस्ट विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं, हमारी पार्टी में ऐसे भी कुछ साथी मौजूद हैं जिनके अन्दर कमोबेश मात्रा में, विभिन्न प्रकार की ग़ैर-सर्वहारावर्गीय विचारधाराएँ तथा पतनोन्मुख शोषक वर्गों की

विचारधारा के चिन्ह मिलते हैं। कभी-कभी पार्टी के अन्दर ऐसी विचारधारा छिपी हुई होती है, और कभी छोटी-मोटी इक्की-दुक्की दैनिक समस्याओं के अन्दर वह अपने को प्रकट करती है। कभी-कभी वह बढ़ जाती है और पार्टी के अन्दर सिद्धांत की विभिन्न समस्याओं के सम्बंध में, महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रश्नों तथा पार्टी के अन्दरूनी संघर्षों के रूप में व्यवस्थित रूप से अपनी असलियत ज़ाहिर करती है। पार्टी संगठन के किन्हीं इक्के-दुक्के अंगों, या हिस्सों पर इस तरह की ग़लत विचारधारा अधिकार क़ायम कर लेती है, या उन्हें अन्दर से ख़राब कर देती है। जब वह अपनी पराकाष्ठा तक पहुँच जाती है, जैसा कि उस ज़माने में हुआ था जब चेन तू-सुई, चांग कुआ-ताओ, आदि पार्टी के अन्दर सत्ता में थे, तो ऐसी ग़लत ग़ैर-सर्वहारावर्गीय विचारधारा क्षणिक रूप से पार्टी नेतृत्व के आधिकांश भाग पर, या उसके सबसे महत्वपूर्ण भाग पर नियंत्रण क़ायम कर लेती है। लेकिन साधारण समयों में इस तरह की विचारधारा सही सर्वहारावर्गीय विचारधारा के द्वारा पराजित हो जाती है। इस चीज़ का प्रमाण पार्टी के अन्दर के विचारधारात्मक संघर्ष में मिलता है।

यही बात कुछ पार्टी मेम्बरों के बारे में है। कभी-कभी उनकी ग़लत विचारधारा छिपी हुई और नियंत्रित रहती है। लेकिन कभी दूसरे समय वह इतनी बढ़ जाती है कि उनके कामों को नियंत्रित करने लगती है। यह चीज़ हमें एक ही व्यक्ति के अन्दर होनेवाले दो भिन्न विचारधाराओं के विरोधों और संघर्षों में देखने को मिलती है।

हमारे विचारधारात्मक विकास का मतलब है कि सचेत रूप से जीवन के प्रति और विश्व के प्रति सर्वहारावर्गीय और कम्युनिस्ट दृष्टिकोण को हम अपनाएँ; और व्यक्ति के विकास तथा वर्ग, राष्ट्र और मानव जाति के उद्धार के हितों के बीच के सम्बंध के बारे में सही समझ पैदा करें जिससे कि सब प्रकार की ग़लत और ग़ैर-सर्वहारावर्गीय विचारधाराओं को निकाला और निर्मूल किया जा सके।

पार्टी के अन्दर विभिन्न ग़लत विचारधाराओं की उत्पत्ति

साथियो ! कम्युनिस्ट पार्टी वर्तमान मानव समाज का सबसे उज्वल और सबसे प्रगतिशील अंग है। मानवता की सर्वश्रेष्ठ विचारधारा—मार्क्सवाद-

लेनिनवाद— इसी के अन्दर मौजूद है और प्रस्फुटित होती है। कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर दुनिया के सबसे सजग, प्रगतिशील और भरोसे के आदमी इकट्ठे हुए हैं। नैतिकता और न्यायप्रियता की वे सर्वोच्च भावना रखते हैं। तमाम अशुभ प्रभावों के विरुद्ध वे लगातार संघर्ष करते हैं और मानव समाज के उज्ज्वल भविष्य तथा उसकी अन्तिम मुक्ति के लिये प्रयत्न करते हैं। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी दुनिया की श्रेष्ठ पार्टियों में से है। मार्क्सवाद–लेनिनवाद के सिद्धांतों से वह अच्छी तरह लैस है। साथ ही साथ, उन अनेक प्रगतिशील विचारकों और प्रमुख महानुभावों की, जिन्होंने चीनी इतिहास के अतीत काल में महान सफलताएँ हासिल की हैं, सर्वोत्तम परंपराओं की उसने विरासत पाई है। चीनी समाज के सबसे प्रगतिशील और सबसे उज्ज्वल पहलू का वह समर्थन करती है। उसके संगठन में चीन के सबसे गौरवशाली पुरुष और स्त्रियाँ हैं। चीनी समाज के पुराने, अशुभ प्रभावों और परम्पराओं के विरुद्ध उसने लम्बा संघर्ष किया है। उसने बहुमूल्य अनुभव प्राप्त किये हैं और क्रांतिकारी संघर्ष के लम्बे काल में वह बहुत सी परीक्षाओं से गुज़र चुकी है। ये सब चीज़ें ऐसी हैं जिन पर हम कम्युनिस्ट अभिमान कर सकते हैं। इसके अलावा, हम पूरे विश्वास और अधिकार के साथ यह भी कह सकते हैं कि अन्तिम विजय और अन्तिम सफलता हम निश्चय ही हासिल करेंगे।

लेकिन, इस सबके बावजूद, हमारे संगठन में सब कुछ पूर्ण नहीं है। हमारा संगठन कमज़ोरियों या गलतियों से मुक्त नहीं है। हमारी पाँतें नामुनासिब लोगों और बिलकुल रद्दी लोगों से मुक्त नहीं हैं। और ऐसे नामुनासिब लोगों और रद्दी लोगों के लिये गंदे और नुक़सानदेह काम कर सकना और भी असंभव नहीं है। कहने का मतलब यह है कि हमारी उज्ज्वल पार्टी में अब भी अंधकारपूर्ण चीज़ें हैं, उसका एक अंधकारपूर्ण पहलू भी है। ये वे ही चीज़ें हैं जिन्हें मैं पहले गिना चुका हूँ।

एक बार परिवार में बदसूरत दामाद, या बहू को शामिल कर लेने के बाद उसे अतिथियों से मिलने से नहीं रोका जा सकता। अंधकारपूर्ण चीज़ों के सम्बंध में 'अगर अपनी कमज़ोरियों को सबके सामने न खोलने की' नीति को भी हम अपनायें, तो भी उन्हें छिपाना असम्भव होगा। आम जनता बराबर हमारी पार्टी के सम्पर्क में रहती है; हमारे हमदर्द हमसे मिलने आयेंगे;

दूसरे बहुत से लोग, युवक और युवतियाँ जो हमारा आदर करते हैं, यहाँ पर (येनान में—अनु०) आकर हमसे सीखने की, या हमारी पार्टी में शामिल होने की ख़्वाहिश रखते हैं। जब वे यहाँ आयेंगे तो हमारी तमाम प्रगतिशील, उज्ज्वल और खूबसूरत चीज़ों तथा परिवार के सदस्यों को देखने के अलावा वे हमारे बदसूरत दामाद, या उस बहू से भी मिलेंगे जो बहुत से लोगों के सामने या तो बेमतलब की बातें करेगी या अपनी मूर्खता प्रदर्शित करेगी। ऐसी हालत में हमारे कुछ मेहमान और नये पार्टी मेम्बर आश्चर्य करेंगे। वे इस तरह के प्रश्न पूछेंगे: कम्युनिस्ट पार्टी तो सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है न? कम्युनिस्ट लोग तो सबसे अच्छे पुरुष और स्त्री होते हैं न? फिर कम्युनिस्ट पार्टी में अब भी ऐसे बदसूरत व्यक्ति और बुरी चीज़ें क्यों हैं? क्या यह अचरज की बात नहीं है?

पार्टी में शामिल होने से पहले कुछ नौजवान साथी मौजूदा समाज से अत्यंत तीव्र रूप में असंतुष्ट थे और सोचते थे कि उससे निकलने का कोई मार्ग नहीं था। सिर्फ़ कम्युनिस्ट पार्टी में ही उन्हें आशा की उज्ज्वल रेखा दिखाई देती थी। वे सोचते थे कि पार्टी में शामिल होने के बाद सब कुछ संतोषजनक और आशापूर्ण हो जाएगा। लेकिन उसमें शामिल होने के बाद वे महसूस करने लगे कि पार्टी के अन्दर भी कुछ ग़लतियाँ, कमज़ोरियाँ और अंधकार-पूर्ण चीज़ें हैं। इसके अलावा, वास्तव में तो, उन्हें हर तरह से हम संतुष्ट नहीं कर सकते (क्योंकि हो सकता है कि जो चीज़ उन्हें संतोषजनक लगती हो वह कमोबेश मात्रा में पार्टी और क्रांति के हितों के अनुकूल न हो)। जो कुछ वे अब प्रत्यक्ष रूप से महसूस करते हैं वह उनके पुराने आदर्शों से पूर्णतया नहीं मिलता। तब वे सन्देह और आश्चर्य में पड़ जाते हैं और पूछते हैं: ‘ कम्युनिस्ट पार्टी में भी ऐसी चीज़ें क्यों?’ येनान आने और जापान-विरोधी विश्वविद्यालय में प्रवेश करने के पहले उनमें से कुछ लोग सोचते थे कि येनान और जापान-विरोधी विश्वविद्यालय उतने ही अच्छे होंगे जितने की उन्होंने कल्पना की थी। लेकिन जब वे आये और विश्वविद्यालय में दाख़िल होगये तो उन्होंने देखा कि सब कुछ संतोषजनक नहीं था। तब वे फिर आश्चर्य में पड़ गये और पूछना लगे: ‘ येनान और जापान-विरोधी विश्वविद्यालय में भी अभी तक ऐसी असंतोषजनक चीज़ें क्यों हैं?’ इन प्रश्नों का उत्तर न पाने के कारण कुछ लोग तो निराश और हताश तक हो गये।

इन प्रश्नों के सम्बंध में हमें अपनी जागरुकता को बढ़ाना चाहिए तथा अपने पार्टी मेम्बरों और कार्यकर्ताओं को हिदायतें देनी चाहिए कि नए पार्टी मेम्बरों और उन लोगों के साथ, जिनका हमारी तरफ झुकाव है, वे सावधानी से व्यवहार करें और उनके ऊपर प्रतिकूल प्रभाव न पड़ने दें। किन्तु, इसके अलावा भी, पार्टी के अन्दर और बाहर के साथियों को इस सम्बंध में जवाब देना आवश्यक है।

हमारी पार्टी के गौरवशाली संगठन के अन्दर क्यों अभी तक ऐसी बुरी चीजें हैं? मैं सोचता हूँ इसका कारण बिल्कुल सीधा है। वह यह है कि हमारी पार्टी कहीं आसमान से नहीं उतरी है; वह एक ऐसी पार्टी है जो मौजूदा चीनी समाज के अन्दर से पैदा हुई है। यद्यपि आम तौर से हमारे पार्टी मेम्बर सापेक्ष दृष्टि से चीन के सर्वश्रेष्ठ स्त्री-पुरुष, चीन के सर्वहारा वर्ग के सबसे आगे बढ़े हुए लोग हैं; लेकिन, वे चीनी समाज के प्रत्येक स्तर से आये हैं और अब भी उसी समाज में रह रहे हैं जो शोषकों के प्रभावों—खुदगर्जी, छल-छन्दों, नौकरशाही तथा हर प्रकार की गन्दी चीजों—से भरा हुआ है। हमारी पार्टी के अधिकांश श्रेष्ठ मेम्बरों पर इन चीजों का प्रभाव पड़ने की संभावना नहीं है। लेकिन पार्टी के अन्दर दूसरे कुछ ऐसे मेम्बरों का होना जो अपने साथ समाज की गन्दी चीजों को कमोबेश मात्रा में लाते हैं, या उनको प्रतिबिंबित करते हैं, क्या इतने बड़े अचरज की बात है? एक ऐसे व्यक्ति के ऊपर, जो कीचड़ में से निकल कर आया हो और जो बराबर कीचड़ के संपर्क में रहता हो, कीचड़ के धब्बे का होना क्या कोई बहुत अचरज की बात है? इसमें ज़रा भी अचरज नहीं है। यह तो स्वाभाविक बात है। वास्तव में बहुत अचरज की बात तो तब होती जब कम्युनिस्ट पार्टी में उस तरह की गन्दी चीजें बिल्कुल न होतीं। इस गन्दे समाज के लिये गन्दगी से पूर्णतया मुक्त कम्युनिस्ट पार्टी को जन्म दे सकना कैसे संभव हो सकता था? यह तो बिल्कुल अकल्पनीय चीज है। यह कहा जा सकता है कि जब तक समाज में ऐसी गंदी चीजें मौजूद हैं, जब तक वर्ग बाक़ी हैं और समाज में शोषक वर्गों के असर क़ायम हैं, तब तक किसी हद तक कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर ऐसी गंदी चीजों का होना भी अनिवार्य है।

इसीलिये कम्युनिस्ट पार्टी के ऊपर क्रांति को पूरा करने की जिम्मेदारी है और कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों के लिये लाजमी है कि वे अपना विकास

करें और अपने को इस्पाती बनाएँ। इसी वजह से उन ढुलमुल, अस्थिर तत्वों का विरोध करने के लिए जो पार्टी में सब प्रकार की अंधकारपूर्ण और दक़ियानूसी चीजों को प्रतिबिम्बित करते हैं, यह जरूरी है कि तमाम अंधकारपूर्ण और दक़ियानूसी चीजों के खिलाफ़ संघर्ष करने के अलावा हम अन्तर-पार्टी संघर्ष भी चलाएँ। पार्टी के अन्दरूनी अन्तर्विरोधों और हमारे अन्तर-पार्टी संघर्ष का यही आधार है। पार्टी के अन्दर और बाहर के विभिन्न संघर्षों के दौरान में समाज को फिर से ढालने; उसे क्रमशः अन्धकारपूर्ण, दक़ियानूसी चीजों से मुक्त करने; और साथ ही साथ, अपनी पार्टी और पार्टी मेम्बरों को फिर से ढालने की तथा अन्तर्विरोधों को हल करने की हम कोशिश करते हैं जिस से कि अपनी पार्टी और पार्टी मेम्बरों को उन्नत करके उन्हें हम एक अच्छे और मज़बूत स्तर पर ले जा सकें।

कॉ. स्तालिन कहते हैं :

"... सर्वहारा पार्टियों के अन्दर के अंतर्विरोधों के स्रोत दो परिस्थितियों में होते हैं।

"ये परिस्थितियाँ क्या हैं?

"प्रथम, वर्ग संघर्ष के दौरान में सर्वहारा वर्ग और उसकी पार्टी के ऊपर पूंजीपति वर्ग और पूंजीवादी विचारधारा का दबाव है—ऐसा दबाव जिसके सामने सर्वहारा वर्ग के सबसे कम मज़बूत स्तर और इसका मतलब होता है कि सर्वहारा पार्टी के सबसे कम मज़बूत स्तर, अक्सर झुक जाते हैं। यह नहीं कहा जा सकता कि सर्वहारा वर्ग समाज से पूर्णतया अलग है, वह समाज से बाहर है। सर्वहारा वर्ग समाज का अंग है, उसके विभिन्न स्तरों के साथ वह अनेक सम्बंधों से जुड़ा हुआ है। लेकिन पार्टी सर्वहारा वर्ग का अंग है। इसलिये, पार्टी पूंजीवादी समाज के विभिन्न स्तरों के साथ सम्बंधों से, और उनके असर से मुक्त नहीं हो सकती। सर्वहारा वर्ग और उसकी पार्टी के ऊपर पूंजीपति वर्ग और उसकी विचारधारा का दबाव इस चीज में जाहिर होता है कि किसी न किसी रूप में पूंजीवादी समाज से जुड़े हुए सर्वहारा वर्ग के कुछ स्तरों के जरिये पूंजीवादी विचार, नैतिकता,

रीत-रिवाज और मनःस्थितियाँ अक्सर सर्वहारा वर्ग और उसकी पार्टी के अन्दर घुस आती हैं ।

"दूसरे, मजदूर वर्ग की अनेकरूपता, मजदूर वर्ग के अन्दर विभिन्न स्तरों की मौजूदगी है । मेरा खयाल है कि एक वर्ग के रूप में, सर्वहारा वर्ग को तीन स्तरों में बाँटा जा सकता है ।

"एक स्तर तो सर्वहारा वर्ग का बुनियादी जन-समुदाय, उसका केन्द्र, उसका स्थायी भाग है; वह उन 'पक्के' सर्वहारा लोगों का जन-समुदाय है जो बहुत पहले ही पूंजीपति वर्ग से अपना सम्बंध-विच्छेद कर चुका है । सर्वहारा वर्ग का यह स्तर मार्क्सवाद का सबसे विश्वसनीय समर्थक है ।

"दूसरा स्तर उन लोगों का है जो सिर्फ़ हाल में ही ग़ैर-सर्वहारा वर्गों से, किसानों, मध्यम वर्गों, बुद्धिजीवियों के अन्दर से आये हैं । ये लोग, जो दूसरे वर्गों से आये हैं, जो सर्वहारा वर्ग की पाँतों में हाल में ही शामिल हुए हैं, मज़दूर वर्ग के अन्दर अपने साथ अपने रीत-रिवाजों, अपनी आदतों, अपनी हिचकिचाहटों, अपनी अस्थिरता को ले आये हैं । यह स्तर सब प्रकार के अराजकतावादी, अर्द्ध-अराजकतावादी और 'अति वामपक्षी' दलों की पैदाइश के लिये सबसे उपयुक्त स्थल होता है ।

"अन्त में, एक तीसरा स्तर है : मज़दूर वर्ग का अभिजात वर्ग, मज़दूर वर्ग का सबसे संपन्न वर्ग, सर्वहारा वर्ग का सबसे खुशहाल अंग । उसमें पूँजीपति वर्ग के साथ समझौते की प्रवृत्ति होती है, उसकी प्रमुख प्रवृत्ति अपने को सत्ताधारियों के अनुकूल बनाने की होती है, वह 'कोई ख़ास व्यक्ति बनना' चाहता है । यह स्तर घोर सुधारवादियों और अवसरवादियों की पैदाइश के लिये सर्वोत्तम स्थल है ।"

साथियो ! उन विभिन्न ग़ैर-सर्वहारावर्गीय विचारधाराओं, ग़लतियों, कमजोरियों और गंदी चीजों की उत्पत्ति का, जो अब भी हमारी गौरवशाली सर्वहारा पार्टी में मौजूद है, यही स्रोत है । यही उन विभिन्न अंतर्विरोधों की उत्पत्ति का स्रोत है जो अब भी पार्टी में मौजूद है ।

पार्टी के अन्दर की विभिन्न ग़लत विचारधाराओं और अन्तर-पार्टी संघर्ष की तरफ़ रुख़

शोषक वर्गों के असर के कारण, मज़दूर वर्ग और हमारी पार्टी की अनेक-रूपता के कारण विभिन्न पार्टी मेम्बरों की विचारधारा, उनके दृष्टिकोण, उनके रीत-रिवाजों, उनकी आदतों और मनःस्थितियों में भेद उत्पन्न होते हैं। विभिन्न पार्टी मेम्बरों के अन्दर उनके जीवन दर्शन के सम्बंध में, उनके विश्व दृष्टिकोण के सम्बंध में और नैतिकता की उनकी धारणाओं के सम्बंध में विभिन्न मात्रा में मतभेद उत्पन्न होते हैं। विभिन्न पार्टी मेम्बरों के अन्दर चीज़ों को देखने के तरीक़ों के सम्बंध में तथा विभिन्न क्रान्तिकारी समस्याओं के बारे में सोचने के ढंगों के सम्बंध में मतभेद उत्पन्न होते हैं। कुछ लोग चीज़ों पर सही वस्तुगत ढंग से, उनके विकास और पारस्परिक सम्बंध के दृष्टिकोण से विचार करते हैं। दूसरे लोग चीज़ों पर ग़लत मनोगत ढंग से, चीज़ों को ठहराव और अलगाव की स्थिति में मान कर विचार करते हैं। कुछ लोग चीज़ों के इस पहलू को देखते हैं, या उसको बढ़ा-चढ़ा कर पेश करते हैं; दूसरे लोग चीज़ों के केवल उस पहलू को देखते हैं या बढ़ा-चढ़ा कर पेश करते हैं, अर्थात समस्याओं पर वे उनकी पूर्णता में और विकास के नियमों के अनुसार तथा वस्तुगत चीज़ों के पारस्परिक सम्बंध के अन्तर्गत नहीं, बल्कि एकतरफ़ा और मनोगत ढंग से विचार करते हैं। इसलिये पार्टी मेम्बरों के अन्दर काम करने के तरीक़े के सम्बंध में मतभेद उत्पन्न होते हैं और विभिन्न विचार, दृष्टिकोण और तर्कों की उत्पत्ति होती है और इस भांति अंतर-पार्टी संघर्ष उठते हैं।

ऐसे मतभेद और तर्क ख़ास तौर से क्रान्ति के मोड़ों के समय पर, निरन्तर तीव्र होते हुए क्रान्तिकारी संघर्षों और बढ़ती हुई कठिनाइयों की परिस्थितियों में, तथा शोषक वर्गों और उनकी विचारधाराओं के असर और दबाव के अन्तर्गत अनिवार्य रूप से और भी तीव्र रूप ले लेंगे। इसलिये मूल समस्या यह नहीं है कि पार्टी के अन्दर विचारधारा सम्बंधी और लोगों की रायों में मतभेद हैं या नहीं—ऐसे मतभेदों का होना अनिवार्य है। मूल बात यह है कि पार्टी के अन्दर के अन्तर्विरोधों को हल किस तरह किया जाय, इन मतभेदों को दूर किस तरह किया जाय, पार्टी के अन्दर की विभिन्न ग़लत, ग़ैर-सर्वहारावर्गीय विचार-

धाराओं को खतम किस तरह किया जाय। स्वाभाविक है कि इन अन्तर्विरोधों को अन्तर-पार्टी संघर्ष के जरिये ही हम हल कर सकते हैं, मतभेदों को मिटा सकते हैं और विभिन्न ग़लत विचारधाराओं का अन्त कर सकते हैं।

जैसा कि एंगेल्स ने कहा था :

"अन्तर्विरोधों को बहुत दिनों तक कोई भी नहीं छिपा सकता। अन्तर्विरोधों को संघर्ष के द्वारा हल किया जाना चाहिये।"

पार्टी के अन्दर की विभिन्न ग़लतियों और कमज़ोरियों तथा अवांछनीय चीज़ों की तरफ़ पार्टी के अन्दर और बाहर दोनों स्थानों के अलग-अलग लोग अलग-अलग प्रकार के विचार रखते हैं और अलग-अलग रुख़ अपनाते हैं।

एक तरह के लोग पार्टी की कमज़ोरियों, ग़लतियों और उसके अन्दर की अवांछनीय चीज़ों को नहीं देखते, या देखने से इन्कार करते हैं। वे अंधे आशावादी होते हैं और यह मान लेते हैं कि पार्टी में सब कुछ ठीक है। इसलिये वे अपनी जागरुकता को कम कर देते हैं और कमज़ोरियों, ग़लतियों तथा तमाम अवांछनीय चीज़ों के ख़िलाफ़ अपने संघर्ष को ढीला कर देते हैं।

दूसरी तरह के लोग ग़लतियों, कमज़ोरियों और अवांछनीय चीज़ों के अलावा और किसी चीज को नहीं, या नहीं के बराबर देखते हैं; वे पार्टी के उज्ज्वल पहलू को नहीं देखते। वे सोचते हैं कि पार्टी में कोई चीज़ अच्छी नहीं है; इसलिये वे निराश, हताश हो जाते हैं और पार्टी के भविष्य में अपना विश्वास खो देते हैं। अथवा वे घबरा जाते हैं और ऐसी चीज़ों को 'सत्यानाशी' समझने लगते हैं।

ये दोनों ही विचार ग़लत और एकतरफ़ा हैं। हमारा विचार इन दोनों से भिन्न है। एक तरफ़ तो हम यह जानते हैं कि हमारी पार्टी, चीनी सर्वहारा वर्ग की सबसे प्रगतिशील, सबसे क्रान्तिकारी राजनीतिक पार्टी है। दूसरी तरफ़, हम स्पष्ट रूप से समझते हैं कि हमारी पार्टी में अब भी विभिन्न प्रकार की छोटी और बड़ी दोनों तरह की ग़लतियां, कमज़ोरियां और अवांछित चीज़ें मौजूद हैं। साथ ही साथ, हम इन चीज़ों के उत्पत्ति के स्रोत को

और उन्हें धीरे-धीरे दुरुस्त करने और ख़तम करने के तरीक़े को भी स्पष्ट रूप से जानते हैं। अस्तु, हमें अपने प्रयत्नों और काम को और बढ़ाना चाहिये तथा अपनी पार्टी और क्रान्ति को आगे ले जाने के लिये आवश्यक संघर्ष चलाना चाहिये।

जिस तरह से विभिन्न लोगों के दृष्टिकोण और विचार अलग-अलग हैं, उसी तरह से पार्टी के अन्दर की अवांछित चीज़ों की तरफ़ भी विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोण हैं।

पहली किस्म का दृष्टिकोण है : पार्टी के अन्दर की कमज़ोरियों, ग़लतियों और अवांछित चीज़ों को देखकर खुश होना और उन पर प्रसन्नता प्रगट करना तथा पार्टी को कमज़ोर करने के लिये हर उपाय से उनका इस्तेमाल करना और उन्हें बढ़ाना (कभी-कभी किन्हीं ग़लतियों का विरोध करने और पार्टी की नीति का समर्थन इस तरह से करने का तरीक़ा इस्तेमाल किया जाता है कि ग़लतियों की दिशा बदल जाती है)। यही वह दृष्टिकोण है जिसे पार्टी के बाहर हमारे दुश्मन और पार्टी के भीतर छिपे हुए खुफिया और ट्राट्स्कीवादी लोग अपनाते हैं।

दूसरी किस्म का दृष्टिकोण है : किन्हीं निजी महत्त्वाकांक्षाओं और ख़्वाहिशों को हासिल करने के लिये ग़लत विचारधाराओं और अनुचित चीज़ों के साथ सहानुभूति दिखाने, उन्हें मानने और उनसे सीखने का। इस तरह का दृष्टिकोण रखनेवाले लोग सोचते हैं कि पार्टी के अन्दर किन्हीं ग़लतियों और कमज़ोरियों का होना उनके लिये फ़ायदेमन्द है। इसलिये जानकर, या अनजाने में वे खुद इस तरह की कमज़ोरियों और ग़लतियों को बढ़ाते हैं और उनका इस्तेमाल करते हैं। यह वह रुख है जिसे अवसरवादी और सबसे अवांछित क़िस्म के पार्टी मेम्बर अपनाते हैं।

तीसरी तरह का रुख़ है : इन ग़लतियों, कमज़ोरियों और अवांछित चीजों को बिना छेड़े हुए स्वयं अपना मार्ग लेने के लिए छोड़ देने का। इस रुख़ को रखनेवाले लोग चीज़ों को यों ही चलने देते हैं और उनके ख़िलाफ़ संघर्ष करने से कतराते हैं। अथवा वे अन्तर-पार्टी संघर्ष और आत्म-आलोचना से डरते हैं और इन चीज़ों को पार्टी के लिये लाभकर नहीं, हानिकारक समझते हैं। अथवा वे इन घटनाओं की ओर से उदासीन होते हैं

और उनकी वास्तविकता को मानने से इन्कार करते हैं, या फिर इन घटनाओं की ओर वे लापरवाही, खुश करने और सिद्धान्त-हीनता का रुख अपनाते हैं। इस रुख को पार्टी के वे मेम्बर अपनाते हैं जिनकी कर्तव्य-भावना पार्टी के प्रति बहुत कमज़ोर है और जिनके अन्दर उदारवाद कूट-कूट कर भरा हुआ है तथा जो नौकरशाही प्रवृत्ति के दोषी हैं।

चौथी किस्म का रुख़ है: ग़लतियों, कमज़ोरियों तथा पार्टी के अन्दर के उन व्यक्तियों के प्रति, जिनकी विचारधारा ग़लत है, ज़बरदस्त घृणा की भावना रखने का। इस तरह का रुख रखनेवाले लोग दो टूक रूप से ऐसे व्यक्तियों से सम्बंध तोड़ लेते हैं, उन्हें एक बारगी ही पार्टी से खतम करने और निकाल बाहर करने की कोशिश करते हैं। लेकिन अगर इसमें वे असफल हो जाते हैं, अथवा उन्हें खुद डाँट-फटकार का सामना करना पड़ता है तो वे हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाते हैं और हताश और उदास हो जाते हैं। वे सिर्फ़ 'अपने काम से काम रखते हैं,' अपने को पार्टी से अलग या बहुत दूर रखने लगते हैं। इस किस्म का निरपेक्ष रुख अन्तर-पार्टी संघर्ष तथा आत्म-आलोचना के सम्बंध में एक यांत्रिक समझदारी के रूप में भी प्रगट होता है वे सोचते हैं कि पार्टी के साथियों के बीच जितना ही कटु संघर्ष हो उतना ही अच्छा होगा। वे हर तुच्छ चीज़ को तथाकथित 'सिद्धान्त के स्तर' पर ले जाते हैं। छोटी से छोटी ग़लती को वे राजनीतिक अवसरवाद आदि की संज्ञा दे देते हैं, और पार्टी के संगठनात्मक तरीक़ों का, या उन तरीक़ों का भी जो पार्टी के बाहर के संघर्षों में इस्तेमाल किये जाते हैं, अनुचित लाभ उठा कर वे साथियों को सज़ा देते हैं। अन्तर-पार्टी संघर्ष को वस्तुगत आवश्यकताओं और वास्तविक चीज़ों के विकास के नियमों के अनुसार उचित और ठोस ढंग से वे नहीं चलाते; बल्कि, इसके विपरीत, वे इस 'संघर्ष' को यंत्रवत रूप में, मनोगत रूप में, ज़ोरों से और बिना साधनों का कोई खयाल किये हुए चलाते हैं। वे सोचते हैं कि अन्तर-पार्टी संघर्ष को हर हालत में चलाया जाना चाहिए और यह संघर्ष जितना ही अधिक और जितना ही तीक्ष्ण हो उतना ही अच्छा होगा। परिणामस्वरूप वे जान-बूझ कर 'संघर्ष के बिन्दुओं' की तलाश करते हैं, जान-बूझ कर अन्तर-पार्टी संघर्ष पैदा करते हैं और इस तरह के यांत्रिक 'संघर्ष' के द्वारा पार्टी के काम को बढ़ाने की कोशिश करते हैं।

इस रुख़ को पार्टी के वे मेम्बर अपनाते हैं जो पार्टी के अन्दर के अन्तर्विरोधों की उत्पत्ति के कारणों को नहीं समझते और जो अन्तर-पार्टी मतभेदों को हल करने के तरीक़ों का ज्ञान नहीं रखते और अन्तर-पार्टी संघर्ष को केवल यांत्रिक ढंग से समझते हैं।

पांचवीं क़िस्म का रुख़ वह रुख़ है जो हमें अपनाना चाहिए। यह रुख़ पहले बताये हुये चारों क़िस्म के रुख़ के विपरीत है।

(१) सबसे पहले हम यह देखते हैं और इस बात का निर्णय करते हैं कि विभिन्न घटनाओं, विचारधाराओं, अलग-अलग रायों और विचारों में से कौन से सही तथा पार्टी और क्रान्ति के दीर्घ-कालीन हितों के लिये लाभदायक हैं और उनमें से कौन ग़लत तथा पार्टी और क्रान्ति के दीर्घ-कालीन हितों के लिये हानिकारक हैं। हो सकता है कि झगड़ने वाली दोनों फ़रीक़ ग़लत हों और एक तीसरी राय और विचार सही हो। गंभीरता से विश्लेषण और विचार करने के बाद हम अपना स्पष्ट रुख़ निश्चित कर लेते हैं और जो सही होता है उसका समर्थन करते हैं। अन्धे होकर न हम किसी का अनुकरण करते हैं और न किसी की पूजा।

(२) हम उन सब चीजों का जो अच्छी और न्याय-पूर्ण हैं, अध्ययन करते हैं, उनको बढ़ाते और विकसित करते हैं, तथा पार्टी के अन्दर तमाम सही विचारों और रायों का समर्थन करते हैं। हम बुरी मिसालों की नक़ल नहीं करते और न अपने को ग़लत विचारधारा से प्रभावित होने देते हैं।

(३) हम उदारवादी रुख़ नहीं अपनाते तथा पार्टी के अन्दर सैद्धान्तिक रूप से ग़लत विभिन्न विचारधाराओं और विचारों के ख़िलाफ़ तथा तमाम अवांछित घटनाओं के ख़िलाफ़ निर्मम संघर्ष करते हैं जिससे कि इस प्रकार की ग़लतियों और घटनाओं को ख़तम किया जा सके। हम ढील-ढाल नहीं करते और न इन ग़लतियों और घटनाओं को इस तरह बढ़ने देते हैं कि वे पार्टी के हितों को ख़तरे में डाल दें। न हम इस तरह के अन्तर-पार्टी संघर्ष से डरते हैं।

(४) लेकिन हम कोई यांत्रिक, निरपेक्ष रुख़ नहीं अपनाते। सैद्धान्तिक निर्ममता और स्पष्टता का, संघर्ष के तरीक़ों के लचकीलेपन तथा धैर्यपूर्वक समझाने की भावना के साथ हम समन्वय करते हैं। लम्बे संघर्षों के दौरान में

उन साथियों को, जिनकी विचारधाराएं ग़लत हैं लेकिन जो पूर्णतया गये-बीते नहीं हैं, हम शिक्षित करने की, उनकी आलोचना करने की, उन्हें इस्पाती बनाने और उनका सुधार करने की कोशिश करते हैं। विभिन्न मंजिलों में विभिन्न सैद्धान्तिक प्रश्नों की नज़र से जो विचारधारात्मक संघर्ष पार्टी में ज़रूरी होते हैं उन्हें हम ठोस और उचित ढंग से चलाते हैं, लेकिन मनोगत, यांत्रिक तथा कठमुल्ला ढंग से बेमतलब का पार्टी संघर्ष हम नहीं चलाते, न हमें ऐसे संघर्ष करने की आदत ही है।

(५) अन्तर-पार्टी संघर्ष के द्वारा हम पार्टी को संगठनात्मक दृष्टि से मजबूत बनाते हैं तथा उसके अनुशासन और उसकी प्रतिष्ठा को बढ़ाते हैं; तथा पार्टी को पक्का और संगठनात्मक दृष्टि से मजबूत बनाने के लिए उन तत्वों को जिनका सुधार नहीं हो सकता, हम संगठनात्मक सजाएँ देते हैं या उन्हें पार्टी से निकाल तक देते हैं। तमाम अच्छे और परिपक्व पार्टी मेम्बरों को यही रुख़ अपनाना चाहिए।

पहले बताये गये पाँच रुख़ों में से सिर्फ़ पाँचवा सही बोल्शेविक रुख़ है। यह तो साफ़ है कि पहला और दूसरा रुख़ ग़लत है। इसमें ज़रा भी अचरज नहीं है कि हमारी पार्टी को कमज़ोर करने के लिए हमारे दुश्मन हमारी तमाम कमज़ोरियों और ग़लतियों का इस्तेमाल करते हैं। अपनी जागरुकता को बराबर बढ़ाते रहने के अलावा, हर मौक़े पर जब पार्टी के अन्दर कमज़ोरियाँ और ग़लतियाँ पैदा हों तो हमें कोशिश करनी चाहिये कि दुश्मन को उनका इस्तेमाल करने का कम से कम अवसर मिले। पार्टी को चाहनेवाले प्रत्येक साथी का यह पुनीत कर्तव्य है। अन्तर-पार्टी संघर्ष के दौरान में अगर कोई पार्टी मेम्बर इस चीज़ की उपेक्षा करता है, या सिर्फ़ फौरी संघर्ष में विजय प्राप्त करने और क्षणिक संतोष की फिक्र करता है, या वह बुरे तत्वों से मदद लेने से इन्कार नहीं करता बल्कि उनके साथ मिल जाता है, या अगर अन्तर-पार्टी संघर्ष में किसी उद्देश्य को हासिल करने के लिये वह पार्टी के बाहर की किन्हीं शक्तियों और मदद का इस्तेमाल करता है, तो वह एक अक्षम्य राजनीतिक ग़लती करने का और पार्टी के अनुशासन को बहुत बुरी तरह से भंग करने का अपराधी बनता है।

हमारे पार्टी मेम्बरों को सही विचारधारा को प्रतिबिम्बित करना चाहिये। उन्हें अच्छे उदाहरणों से सीखना चाहिए, ग़लत विचारधाराओं और

बुरे उदाहरणों से शिक्षा नहीं लेनी चाहिये। गलत विचारधाराओं और बुरे उदाहरणों से उन्हें मोर्चा लेना चाहिये। लेकिन, पार्टी में अब भी कुछ ऐसे साथी हैं जो सही विचारधाराओं को प्रतिबिम्बित करने और अच्छे उदाहरणों का अनुकरण करने के अलावा कभी कभी कुछ गलत विचारधाराओं को कमोबेश मात्रा में प्रतिबिम्बित करते हैं और बुरे उदाहरणों का अनुकरण करते हैं। कुछ साथियों को बुरा बनना सीखना आसान मालूम पड़ता है लेकिन अच्छे बनने की शिक्षा लेना उनके लिये कठिन होता है। इस ओर हमें गंभीरता से ध्यान देना चाहिये।

पार्टी में इन्हीं ग़लतियों के प्रगट होने के समय ये साथी जानकर या अनजाने में इन ग़लतियों को बढ़ाने और बड़ा करने में मदद दे सकते हैं और अन्तर-पार्टी संघर्ष में वे अक्सर ग़लत तरफ़ शामिल हो जाते हैं, या किन्हीं कारणों से जीतने वाले पक्ष से मिल जाते हैं। अगर उन्हें गंभीरतापूर्वक आगे न बढ़ाया गया और इस्पाती न बनाया गया तो ये साथी मुश्किल से ही प्रगति करेंगे।

मेरा खयाल है कि मार्क्सवाद–लेनिनवाद शिक्षालय के आप विद्यार्थियों के लिये यह चीज़ बिल्कुल साफ़ होगी कि तीसरे क़िस्म के साथी जो विभिन्न ग़लतियों, कमज़ोरियों तथा अवांछनीय घटनाओं की ओर उदारवादी और नौकरशाही रवैया रखते हैं, बिल्कुल ग़लत हैं और उनका रुख़ एकदम गैर–बोल्शेविक है। आपने **पार्टी निर्माण** का अध्ययन किया है। उसमें आत्म-आलोचना और पार्टी के अन्दर विचारधारात्मक संघर्ष के ऊपर एक पूरा अध्याय है। इस बात के सम्बंध में लेनिन और स्तालिन ने भी अनेक अवसरों पर स्पष्ट और प्रगाढ़ व्याख्याएँ की हैं। आप उन्हें देख सकते हैं। इसके अलावा, चीनी प्रकाशन गृह द्वारा प्रकाशित की गई पुस्तक, **राजनीतिक पार्टियों के सम्बंध में** के चौथे और पांचवे अध्यायों में इस प्रश्न पर विस्तार से विचार किया गया है। इसलिये इस वक्त मुझे उसके ब्योरे में जाने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन जो चीज मैं ज़रूर बताना चाहता हूँ वह यह है कि पार्टी में अब भी ऐसे साथी कम नहीं हैं जो इस तरह का रुख रखते हैं। आत्म-आलोचना करने और ख़ास तौर से निचली सतहों से ऊपर तक की आत्म-आलोचना करने में तथा उन्हें सुधारने और ख़तम करने की

दृष्टि से पार्टी की विभिन्न गलतियों, कमज़ोरियों और अवांछनीय घटनाओं को एक ज़िम्मेदार, नियमित और सच्चे ढंग से खोलकर रखने के सम्बंध में उन्होंने अत्यधिक कोताही दिखाई है। इस सिलसिले में हमें अब भी अत्यधिक उन्नति करने की आवश्यकता है। लेकिन, पार्टी के अन्दर इस या उस व्यक्ति के बारे में, अथवा इस या उस सवाल के सम्बंध में बहुत सी ग़ैर-ज़िम्मेदार, अनियमित और कायरतापूर्ण आलोचना चलती है और असंतोष, पीठ पीछे बुराई करना और गप लगाना मिलता है। पार्टी के अन्दर उदारवाद के ये दो स्वरूप हैं। इससे ज़ाहिर होता है कि क्रांतिकारी संघर्ष के सिलसिले में कुछ साथियों का राजनीतिक विकास और साहस अब भी नाक़ाफी है और पार्टी के अन्दर जनवादी ढंग से काम करने की सही आदत अब भी काफी नहीं पड़ी है।

कुछ साथी झूठे दिखावे की आदत को नहीं छोड़ते, दूसरों को नाराज़ करने, या उनकी दुश्मनी मोल लेने या उनकी विरोधी आलोचना सुनने से वे डरते हैं। वे इस चीज़ को अधिक पसन्द करेंगे कि पार्टी की विभिन्न ग़लतियों और कमज़ोरियों को यों ही छोड़ दिया जाय। वे 'किसी न किसी तरह पार निकलने' के लापरवाही भरे रुख़ को अपनाते हैं और सोचते हैं कि 'जितना ही कम झगड़ा हो उतना ही अच्छा।' इसके बावजूद, दूसरों के पीठ पीछे वे उनकी आलोचना करते हैं। यह चीज़ पार्टी के लिये लाभकर नहीं, बल्कि हानिकारक है। इस तरह की ग़ैर-ज़िम्मेदार आलोचना और बातचीत से पार्टी के अन्दर सिद्धांत-हीन झगड़े और गुट पैदा हो सकते हैं। उनसे पार्टी के अन्दर छिपे हुए खुफ़िया लोगों को और बुरे तत्वों को पार्टी के अन्दर तोड़-फोड़ की कार्रवाइयाँ करने का मौक़ा मिल सकता है। इसके अलावा, पार्टी के अन्दर की ग़लतियों और कमज़ोरियों को इस तरह की ग़ैर-ज़िम्मेदार आलोचना से कभी ठीक नहीं किया जा सकता। इसलिये चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमिटी के छठे प्लेनरी अधिवेशन में मंजूर किये गये **पार्टी के नियमों** में इस तरह की ग़ैर-ज़िम्मेदार आलोचना और बातचीत की मनाही की गयी है। उनमें बताया गया है कि पार्टी के अन्दर ऐसी ज़िम्मेदार और नियमित आत्म-आलोचना होनी चाहिये जो पार्टी को फ़ायदा पहुँचाए।

चूँकि पार्टी के अन्दर विभिन्न प्रकार की ग़लतियाँ, कमज़ोरियाँ और ग़लत, ग़ैर-सर्वहारावर्गीय विचारधाराएँ मौजूद हैं, इसलिये एक न एक समय पार्टी के अन्दर इन ग़लत विचारधाराओं में से हरेक ख़ास प्रवृत्ति का रूप ले सकती है

और किन्हीं सिद्धान्तों के सिलसिले में पार्टी के अन्दर मतभेद उत्पन्न कर सकती है और कार्य में पार्टी की एकता को भंग कर सकती है। इन परिस्थितियों में अगर हम पार्टी के अन्दर सही-सही आत्म-आलोचना नहीं चलाते और विभिन्न ग़लतियों और कमज़ोरियों को लगातार खोलते और दुरुस्त करने की नीति नहीं अपनाते, तमाम ग़लत विचारधाराओं को ख़तम नहीं करते, और पार्टी के अन्दर के मतभेदों को मिटाने के लिए अन्तर-पार्टी संघर्ष नहीं चलाते, बल्कि, इसके बजाय, एक सिद्धान्त-हीन रुख़ और 'मध्यम' मार्ग अपनाते हैं तथा किसी न किसी तरह पार निकलने की कोशिश करते हैं तो, "पार्टी, सर्वहारा वर्ग और आम जनता को हम सही तौर से शिक्षित नहीं कर सकेंगे।" (**स्तालिन**) "हम आगे नहीं बढ़ सकेंगे, न विकास कर सकेंगे। फिर हम सर्वहारा क्रांतिकारी नहीं रह जाएंगे और हमारी असफलता निश्चित हो जाएगी।" (**लेनिन**)

स्तालिन कहते हैं :

"सिद्धांत के प्रश्नों के सम्बंध में 'मध्यम' मार्ग एक ऐसा 'मार्ग' है जो आदमी का दिमाग़ ख़राब कर देता है, ऐसा 'मार्ग' है जो मतभेदों को ढक देता है। वह पार्टी के विचारधारात्मक पतन का 'मार्ग' है, पार्टी की विचारधारात्मक मृत्यु का 'मार्ग' है।

"सिद्धान्त के प्रश्नों के सम्बंध में 'मध्यम' मार्ग की नीति हमारी नीति नहीं है। सिद्धान्त के प्रश्नों के सम्बंध में 'मध्यम' मार्ग की नीति ऐसी पार्टी की नीति है जो दिनोंदिन पतन और विनाश की ओर बढ़ रही है। इस तरह की नीति लाज़मी तौर से उस पर चलने वाली पार्टी को एक ऐसे खोखले नौकरशाही यंत्र में बदल देगी जो बेकार काम करता रहता है और मेहनतकश लोगों से अलग है। यह रास्ता हमारा नहीं है।

"इसलिये ... पार्टी के अन्दर के अन्तर्विरोधों को संघर्ष के द्वारा ख़तम करना हमारी पार्टी के विकास का नियम है ... अखिल संघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) अपने अन्दर के अन्तरविरोधों को ख़तम करके ही बढ़ी और मज़बूत हुई है।"

इसलिये उदारवादी और नौकरशाही रुख का अपनाना गलत है। आत्म-आलोचना का विकास किया जाना चाहिये; और पार्टी के अन्दर की तमाम अवांछनीय घटनाओं का विरोध करने के लिये तथा उनके संगठित, विकसित और बड़ा रूप धारण करने के पहले ही पार्टी के अन्दर के तमाम मतभेदों को खतम करने के लिये अन्तर-पार्टी संघर्ष चलाया जाना चाहिये।

उदारवाद एक दूसरे रूप में भी प्रगट होता है। कभी-कभी पार्टी के अन्दर किसी खास झगड़े के शुरू हो जाने के बाद बहुत से साथी अपना नियमित काम बंद कर देते हैं और दिनों और रातों तक अनुचित वादविवादों में ही उलझे रहते हैं, या जान-बूझकर पार्टी की हर चीज की निंदा करने लगते हैं। इन बहसों के दौरान में वे पार्टी एकता को कमज़ोर करते हैं, कार्यकर्ताओं के भाईचारे में दरार पैदा करते हैं, पार्टी अनुशासन को कमज़ोर करते हैं, पार्टी के नेतृत्व को निष्क्रिय बना देते हैं, पार्टी के संगठनों और पार्टी संस्थाओं को बहस मुबाहिसे की एक सभा में बदल देते हैं। अतीत काल में इस तरह की चीजें हमारे कुछ पार्टी संगठनों में एक से अधिक बार हुई हैं। जैसा कि स्तालिन कहते हैं: " यह आत्म-आलोचना नहीं, बल्कि एक मज़ाक है।" " यह मजदूर वर्ग को बदनाम करना है।" यह बाहरी, बोल्शेविक-विरोधी 'आत्म-आलोचना' है। जिस आत्म-आलोचना की हिमायत हम करते हैं उससे इसका कोई वास्ता नहीं है। आत्म-आलोचना की ज़रूरत हमें पार्टी की प्रतिष्ठा को नष्ट करने, पार्टी अनुशासन को मिटाने, पार्टी के नेतृत्व को कमज़ोर करने के लिये नहीं; बल्कि पार्टी की प्रतिष्ठा को बढ़ाने, पार्टी अनुशासन को सबल बनाने और पार्टी के नेतृत्व को और मजबूत करने के लिये है।

चौथे किस्म के वे साथी भी, जो एक निरपेक्ष रुख लेते हैं, गलत हैं। यह रुख उदारवाद का — उस तीसरे रुख का जिसका ऊपर जिक्र किया गया है— उलटा चेहरा है। जो लोग इस रुख को अपनाते हैं वे यह नहीं समझते कि पार्टी के अन्दर की ग़लत विचारधाराओं का एक गहरा सामाजिक स्रोत है तथा उन विचारधाराओं को एक बारगी ही नहीं खतम किया जा सकता। समाज की किसी ग़लत विचारधारा को, कमोबेश मात्रा में पार्टी के सभी साथी कभी न कभी, प्रतिबिम्बित कर सकते हैं। केवल मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन जैसे लोग ही—जो इतने सच्चे, इतने दृढ़ और इतने सही थे और और चीज़ों को देखने की इतनी तीक्ष्ण और प्रगाढ़ दृष्टि रखते थे—इन

विचारधाराओं के असर से पूर्णतया मुक्त हो सकते हैं। इसीलिये डॉ. सन यात-सेन ने लेनिन को 'क्रान्ति का द्रष्टा' कहा था। यह अनिवार्य है कि काम करते समय हममें से हरेक कोई न कोई ग़लती करें। अगर उन सब साथियों के साथ जो किसी न किसी मात्रा में समाज की ग़ैर-सर्वहारावर्गीय विचारधाराओं को प्रतिबिम्बित करते हैं और कुछ न कुछ ग़लतियाँ करते हैं लेकिन जो ऐसे बुरे तत्व नहीं हैं जो सुधार से परे हों—हम सहिष्णुता से न पेश आएँ और उन्हें माफ़ न करें, बल्कि उन्हें रद्द कर दें और निकाल दें तो हमारी पार्टी का निर्माण नहीं हो सकेगा। इस तरह से रद्द करने और निकाल बाहर करने का अन्तिम परिणाम यह हो सकता है कि आगे चलकर आख़िर में इस तरह का निरपेक्ष रुख़ रखने वाले ये साथी ख़ुद भी निकाल बाहर किये जाएँ क्योंकि वे 'क्रान्ति के द्रष्टा' तो हैं नहीं और एक न एक दिन स्वयं भी अवश्य कोई ग़लती करेंगे। उदाहरण के लिए, प्रतिक्रियावादी तत्वों को दबाने के आन्दोलन के दौरान में पिछले ज़माने में इसी निरपेक्ष रुख के कारण कुछ साथियों ने ग़लतियाँ की थीं। जो साथी इस रुख़ को अपनाते हैं वे इस ख़ास बात को नहीं समझते कि कम्युनिज़्म के उद्देश्य के लिये संघर्ष के दौरान में सबसे महान और सबसे कठिन काम मनुष्य जाति को कम्युनिस्ट समाज के निस्वार्थी नागरिकों में बदलना है। अगर वे इस बात को समझें, अगर वे समझें कि अपनी तमाम कमज़ोरियों के बावजूद मनुष्य जाति को एक लम्बे संघर्ष के द्वारा इस्पाती और शिक्षित बनाया जा सकता है और उच्च रूप से सभ्य कम्युनिस्टों में परिवर्तित किया जा सकता है तो फिर उन पार्टी मेम्बरों को भी क्यों न वे शिक्षित और दुरुस्त कर सकते हैं जो पार्टी में आ गये हैं किन्तु थोड़ी बहुत मात्रा में अब भी पुराने समाज की विचारधारा के कुछ अवशेषों के शिकार हैं?

निस्सन्देह इन पार्टी मेम्बरों को सुधारने और शिक्षित करने के लिए लम्बी, धैर्यपूर्वक दी गई शिक्षा की जरूरत होगी। यह एक कठिन काम है। लेकिन अगर हम इस छोटे, कठिन काम को करने में अनिच्छा दिखाएँ और उससे दूर भागें तो फिर हम दुनिया और मनुष्य-जाति को बदलने की बातें किस मुँह से कर सकते हैं? जब हमने दुनिया और मनुष्य-जाति को बदलने के अतुलनीय रूप से कठिन कार्य का बीड़ा उठा लिया है और तै कर लिया है कि हम इस काम से पीछे नहीं हटेंगे, तो फिर दुनिया में और कौनसा कठिन काम हमें डरा सकता है? जीवन के कम्युनिस्ट दर्शन तथा उसके विश्व दृष्टिकोण में

विश्वास करने वाले पार्टी मेम्बर किन्हीं भी कठिनाइयों और मुसीबतों से नहीं डरते। साथ ही साथ वे यह भी समझते हैं कि विश्व घटनाओं की प्रगति का मार्ग बहुत तकलीफ़देह है। जो साथी एक निरपेक्ष रुख अपनाते हैं वे अभी तक कम्युनिज़्म के उद्देश्य के कठिन और तकलीफ़देह रूप को नहीं समझते हैं। अगर वे मुसीबातों से डरते हैं, सीधे मार्ग पर चलने की, एक बारगी ही तमाम अवांछित चीजों को खतम करने की और फौरन ही अपनी आदर्श दुनिया में पहुँच जाने की ख़्वाहिश रखते हैं तो निस्संदेह उनके हाथ निराशा ही लगेगी। मुसीबतों का सामना होते ही वे निराश और हताश हो जाएँगे, कम्युनिज़्म के उद्देश्य के भविष्य में अपना विश्वास खो देंगे; और, इस तरह, अपनी ग़ैर–सर्वहारावर्गीय विचारधारा की असलियत को खोल देंगे। कितने अफसोस की बात है कि अब भी हमारी पार्टी में किसी न किसी मात्रा में इस तरह का रुख रखनेवाले साथियों की तादाद कम नहीं है।

अन्तर-पार्टी संघर्ष के जरूरी होने का कारण यह है कि पार्टी के विकास और सर्वहारा वर्ग के संघर्ष के दौरान में पार्टी के अन्दर सिद्धान्तों के सम्बंध में मतभेद उत्पन्न हो जाते हैं। ऐसे समयों पर 'सिर्फ़ एक या दूसरे सिद्धान्त के लिये, संघर्ष के एक या दूसरे लक्ष्य के लिये, उस लक्ष्य के नज़दीक ले जाने वाले संघर्ष के एक या दूसरे तरीक़े के लिये लड़ कर' ही इन मतभेदों को खतम किया जा सकता है और अन्तर्विरोधों को दूर किया जा सकता है। किसी तरह के समझौते से काम नहीं चलेगा। अन्तर-पार्टी संघर्ष इसलिये नहीं जरूरी होता है कि संघर्ष करना या बहस करना हमें पसन्द है। इस सबका मतलब हुआ कि जब सिद्धान्तों के सवाल उठ खड़े हुए हों और उन्हें संघर्ष के अलावा और किसी तरह से हल न किया जा सकता हो तो उन्हें हल करने के लिये बिना पीछे हटे हुए हमें अन्तर-पार्टी संघर्ष चलाना चाहिये। इसका मतलब यह नहीं है कि अन्तर-पार्टी संघर्ष को हमें, रोज़मर्रा की नीतियों और शुद्ध अमली सवालों से सम्बंधित तमाम विरोधी विचारों के खिलाफ़ लम्बा मुँह कर एक झगड़ालू और समझौता-हीन ढंग से चलाना है। कॉमरेड स्तालिन ने कहा है :

> "पार्टी के अन्दर रोज़मर्रा की नीति से सम्बंधित प्रश्नों, शुद्ध अमली किस्म के प्रश्नों के सम्बंध में मतभेद रखने वाले लोगों के साथ हम तमाम प्रकार के समझौते कर सकते हैं और हमें करने चाहिये।"

पार्टी के अन्दर जब कोई अवसरवादी विचारधारा सिर उठाए और सैद्धांतिक मतभेद पैदा हों तो इन ग़लत सिद्धांतों और अवसरवाद का विरोध करने के लिये और उन्हें ख़तम करने के लिये हमें अवश्य संघर्ष करना चाहिये। इसका मतलब यह नहीं होता कि जब पार्टी के अन्दर सिद्धांत के सम्बंध में कोई मतभेद नहीं हैं, न कोई अवसरवाद है, तो भी साथियों के बीच के किसी शुद्ध अमली सवाल से सम्बंधित मतभेद को ही मनोगत रूप से और जान-बूझकर हम बढ़ाएँ और उसे 'सैद्धांतिक' मतभेद की संज्ञा दें और जान-बूझकर कुछ साथियों को 'अवसरवादी' करार दें और उन्हें अंतर-पार्टी संघर्ष का 'निशाना' बनाएँ। इसका मतलब यह नहीं होता कि हम सोचते हैं कि अगर इस तरह के 'निशानों' के खिलाफ़ अपने हमले को हम सिर्फ़ तेज़ कर देंगे तो पार्टी का काम, पार्टी का विकास, और सर्वहारा क्रांतिकारी संघर्ष की विजय किसी अलौकिक रूप से आसान हो जाएगी। बेशक, यह अंतर-पार्टी संघर्ष को गंभीरता-पूर्वक चलाना नहीं है। यह महज़ पार्टी का मख़ौल बनाना है, अंतर-पार्टी संघर्ष को जो एक बहुत ही गंभीर चीज़ है, बच्चों का खेल बनाना है।

पार्टी के अन्दर ऐसे साथियों के ऊपर—जो सिद्धांत की ग़लतियाँ करने और अवसरवादी विचारधारा प्रदर्शित करने के बाद समझाने-बुझाने की ओर ध्यान नहीं देते, पार्टी आलोचना की उपेक्षा करते हैं और, इसके अलावा, अपनी ग़लतियों को जारी रखते हैं और इतने ज़िद्दी और हठधर्मी बन जाते हैं कि पार्टी की नीति के ही खिलाफ़ संघर्ष करने लगते हैं, या दो-मुँहा रुख़ अख़्तियार करने लगते हैं—अंकुश लगाना, सार्वजनिक रूप से उनकी आलोचना करना, या संगठनात्मक रूप से उन्हें सज़ाएँ देना तक ज़रूरी होता है। लेकिन हमें उन साथियों पर सख़्त प्रहार नहीं करना चाहिये, और न उन्हें सज़ा ही देनी चाहिये जिन्होंने ग़लतियाँ तो की हैं लेकिन जो अपनी ग़लतियों पर अड़े हुये नहीं हैं और बहस-मुबाहसे और समझाने-बुझाने के बाद अपनी ग़लतियों को सुधारने के लिये और अपने पहले के विचारों को छोड़ने के लिये तैयार हैं। न उन पर हमें तब प्रहार करना या उन्हें सज़ा देनी चाहिये जब वे अपनी ग़लतियों पर शांतिपूर्वक विचार कर रहे हों, अथवा उनके ऊपर दूसरे साथियों के साथ संजीदगी से बहस कर रहे हों। आत्म-आलोचना करते और अंतर-पार्टी संघर्ष चलाते समय हमारा ख़याल यह नहीं होता कि चेहरा जितना तना हो उतना ही अच्छा होगा; न हम यही सोचते हैं कि हम जितने

ही ज़्यादा साथियों को सज़ा दें उतना ही अच्छा होगा। आत्म-आलोचना और अंतर-पार्टी संघर्ष का सर्वोच्च उद्देश्य पार्टी को अच्छी तरह शिक्षित करना, जिन साथियों ने ग़लतियाँ की हैं उन्हें शिक्षित करना, ग़लतियों को दुरुस्त करना तथा पार्टी को संगठनात्मक रूप से सबल बनाना है। अगर यह उद्देश्य साथियों पर हमला करने के बजाय शांतिपूर्ण बहस-मुबाहसे से, समझाने-बुझाने और आलोचना के द्वारा हासिल किया जा सके तो निस्संदेह यही सबसे अच्छा है। लेकिन, पिछले ज़माने के कुछ कालों में पार्टी के अन्दर लोगों को यह कहते मुश्किल से ही शायद कभी हमने सुना हो कि सैद्धांतिक मतभेदों के अभाव से उत्पन्न अंतर-पार्टी शांति और एकता वांछित और आवश्यक चीज़ें हैं। कुछ सिर-फिरे लगने वाले लोगों की नज़र में अंतर-पार्टी शांति बुरी है चाहे वह सैद्धांतिक और नीति-सम्बंधी एकता से ही क्यों न उत्पन्न हुई हो। उनकी नज़र में अंतर-पार्टी संघर्ष को हवा में से जान-बूझकर पैदा करके ही हम 'बोल्शेविक' कहला सकते हैं। निस्संदेह इस तरह के लोग ज़रा भी बोल्शेविक नहीं हैं, बल्कि ज़बरदस्ती 'बोल्शेविक' का नाम धारण करने वाले बिल्कुल गये बीते और पदलोलुपतावादी लोग हैं।

यही वजह है कि पहले जिनका ज़िक्र किया गया है वे चार रुख ग़लत हैं। पार्टी के अन्दर ग़लतियों, कमज़ोरियों और अवांछित घटनाओं के सम्बंध में हमें कौनसा रुख़ अपनाना चाहिये, इस सवाल का भी यही जवाब है। सच बात तो यह है कि दुनिया और मानव जाति को और, साथ ही साथ पार्टी को और अपने को हम पार्टी के अन्दर और बाहर की अंधकारपूर्ण चीज़ों के ख़िलाफ़ संघर्ष करके ही बदलने की कोशिश करते हैं। अन्तर-पार्टी संघर्ष पार्टी के बाहर के वर्ग संघर्ष का प्रतिबिंब है। पार्टी के बाहर वर्ग संघर्ष के दौरान में, क्रान्तिकारी जन-संघर्ष के दौरान में पार्टी तप कर निखरती है, विकसित होती है और संगठनात्मक रूप से अपने को दृढ़ करती है; और, साथ ही साथ, अन्तर-पार्टी संघर्ष के दौरान में वह अपनी आन्तरिक मज़बूती और एकता हासिल करती है जिससे कि क्रान्तिकारी जन-संघर्ष का व्यवस्थित रूप से, सही सही और कारगरता के साथ नेतृत्व करने के लिये वह योग्य बनती है।

इसलिये, पार्टी के अन्दर विभिन्न ग़लतियों, कमज़ोरियों और अवांछित घटनाओं की ओर उदारवादी रुख़ अपनाना, पार्टी के अन्दर सैद्धांतिक मत-

भेदों से इन्कार करने की कोशिश करना, अंतर-पार्टी संघर्ष से बचना, अंतर-पार्टी विरोधों को ढंकना और किसी न किसी तरह से 'पार निकलने' की कोशिश करना बिल्कुल ग़लत है। उससे दुश्मन को मदद मिलती है क्योंकि वर्ग संघर्ष के विकास के नियमों के तथा संघर्ष द्वारा दुनिया और मनुष्य जाति को बदलने के हमारे मूलभूत दृष्टिकोण के वह ख़िलाफ़ है।

इसलिये, अंतर-पार्टी संघर्ष को पार्टी के बाहर के वर्ग संघर्ष से—व्यापक जनता के क्रांतिकारी संघर्ष से—अलग करना और उसे एक खोखली बकवास में बदल देना भी ग़लत है, क्योंकि व्यापक जनता के क्रांतिकारी संघर्ष से अपने को अलग करके पार्टी न अपने को इस्पाती बना सकती है, न अपना विकास कर सकती है, और न अपने को संगठनात्मक रूप से ही मज़बूत बना सकती है।

लेकिन, इस चीज़ को दूसरी हद तक ले जाना—उन साथियों की ओर जिनमें कमज़ोरियाँ और त्रुटियाँ हैं लेकिन जो बिल्कुल गये बीते नहीं हैं, एक बिल्कुल निरपेक्ष रुख अख़्तियार करना और अन्तर-पार्टी संघर्ष को यांत्रिक रूप से चलाते जाना, या उसे स्वयं मनोगत रूप से पैदा कर देना—भी ग़लत है· क्योंकि उससे पार्टी कमज़ोर होगी, दुश्मन को हमारी पार्टी पर हमले करने के मौके मिलेंगे और क्योंकि वह पार्टी के विकास के नियमों के विरुद्ध है। पार्टी के ईमानदार साथियों से, उनके कुछ ग़लतियाँ करते ही हमें सम्बंध-विच्छेद नहीं कर लेना चाहिये, बल्कि एक विचारपूर्ण, सहानुभूतिपूर्ण ढंग से उन्हें समझाने-बुझाने, शिक्षित करने और इस्पाती बनाने की कोशिश करनी चाहिये। सार्वजनिक रूप से उनके ऊपर हमला हमें नहीं करना चाहिये और न उन्हें पार्टी से बाहर ही निकालना चाहिये जब तक कि ऐसा करना एकदम ज़रूरी न हो जाय।

इसके बावजूद कि हमारी पार्टी के अन्दर अब भी कुछ ग़लतियाँ और कमज़ोरियाँ, कुछ इक्की-दुक्की, अलग-थलग, बुरी घटनाएँ मौजूद हैं, हमें पूरा विश्वास है कि मज़दूर आन्दोलन के विकास के दौरान में तथा आम जनता के महान क्रांतिकारी संघर्ष के दौरान में इन चीज़ों को हम दूर कर सकते हैं और निश्चित रूप से ऐसा ही करेंगे। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के पिछले दस वर्ष से

आधिक के इतिहास ने, उसकी महान बहुमुखी प्रगति ने, तथा दुनिया के विभिन्न देशों के मज़दूर आन्दोलन के विकास के इतिहास ने इस चीज़ के बारे में हमें पूर्ण विश्वास दिला दिया है।

अंतर-पार्टी संघर्ष पार्टी के क्रांतिकारी संघर्ष का अनिवार्य और आवश्यक अंग है। इसलिये हमारे साथियों को न सिर्फ़ पार्टी के बाहर के संघर्ष के दौरान में इस्पाती और परिष्कृत बनना चाहिये, बल्कि अन्तर-पार्टी संघर्ष के दौरान में भी, यानी दोनों मोर्चों पर अपने को इस्पाती और परिष्कृत बनाना चाहिए। लेकिन अब भी हमारे काफी ऐसे साथी हैं जो इस चीज़ को पूर्ण रूप से नहीं समझते और इस सम्बंध में उनमें आत्मविकास और इस्पातीकरण का अभाव है। यह चीज़ पार्टी के अन्दर सिद्धान्त-विहीन संघर्ष के रूप में और निम्न उदाहरणों में दिखती है : हमारे कुछ साथियों ने, और ख़ास तौर से जिन्होंने अपेक्षाकृत लम्बे काल तक फौज में काम किया है, क्रांति-विरोध के ख़िलाफ़ संघर्ष के दौरान में न कभी ढुलमुलाहट दिखाई, न शिकायत की और न कभी पस्त हुए, चाहे वह संघर्ष कितना ही निर्दय और कठिन रहा हो और चाहे उन्हें कितने ही हमलों, अनुचित चीज़ों, अथवा अन्यायों को सहना पड़ा हो। किन्तु अंतर-पार्टी संघर्ष के दरम्यान उनके लिये किसी भी तरह की आलोचना, हमलों और अन्यायों के एक शब्द तक का सह सकना, मुश्किल था। अथवा वे शंकाशील थे और सोचते थे कि दूसरे लोग जो कुछ कहते थे उसका इशारा उन्हीं की तरफ़ था और इस वजह से वे शिकायतें करने लगते थे और एकदम पस्त हो जाते थे। साथियो! ऐसी घटनाओं की तरफ़ ध्यान देना हमारे लिये जरूरी है।

हमें कहना चाहिये कि आम तौर से वे बहुत अच्छे साथी हैं, क्योंकि क्रान्ति-विरोध से अत्यंत दृढ़ता के साथ उन्होंने मोर्चा लिया है और पार्टी को वे अपनी माँ समझते हैं। क्रान्ति-विरोध के खिलाफ़ अनेक कठिन लड़ाइयों में भाग लेकर अपनी महान मां की गोद में लौटने के उपरान्त उनके दिल में यह आशा समायी थी कि उन्हें प्रोत्साहन, सहानुभूति और स्नेह प्राप्त होंगे—उन्हें हमलों, आलोचनाओं तथा अन्यायों का सामना नहीं करना पड़ेगा। उनके लिए ऐसी आशा रखना स्वाभाविक है। लेकिन जिस चीज़ की ओर उन्होंने ध्यान नहीं दिया है, या पूरा ध्यान नहीं दिया है, वह यह है कि चूँकि पार्टी के

अन्दर अब भी बहुत सी ग़लतियाँ और कमज़ोरियाँ हैं, इसलिये अंतर-पार्टी संघर्ष करना आवश्यक है। इस संघर्ष में हर साथी को हिस्सा लेना चाहिये। अंतर पार्टी संघर्ष के दौरान में यह अनिवार्य है कि हर साथी को सही और ग़लत आलोचनाओं, हमलों, अथवा अन्याय और अपमान तक का सामना करना पड़े। हर साथी को उसको सहन करना चाहिये। यह इसलिये नहीं है कि हमारी पार्टी निर्दय है, बल्कि इसलिये है कि वर्ग संघर्ष के दौरान में पार्टी के अन्दर घटने वाली यह एक अनिवार्य घटना है। लेकिन, ये साथी इस चीज़ को नहीं हृदयंगम करते, इसलिये ज्योंही ऐसी घटनाओं से उनका सामना होता है वे चकित हो जाते हैं और बहुत दुखी और पस्तहिम्मत हो जाते हैं।

इस सिलसिले में मेरा ख़याल है कि एक तरफ़ तो हमारे साथियों को दूसरे साथियों के साथ एकता क़ायम करने का प्रयत्न करना चाहिये, उनके साथ खुले दिल से व्यवहार करना चहिये, चलती-फिरती विद्वेषपूर्ण टीका-टिप्पणियों से उनकी भावनाओं को चोट नहीं पहुँचाना चाहिये, न उनके ऊपर तीक्ष्ण व्यंग करना चाहिये। ख़ास तौर से साथियों के पीठ पीछे ग़ैर जिम्मेदारी से उनकी कोई आलोचना नहीं करनी चाहिये। उन लोगों को छोड़ कर जोकि अत्यधिक हठी हैं और अपनी ग़लतियों पर अड़े हुए हैं और पार्टी के अन्दर हर तरह की ग़लत चीज़ करते हैं, बाक़ी सब साथियों को जिन्होंने ग़लतियाँ की हैं, उनकी मौजूदगी में ही स्पष्ट रूप से और सच्चाई से तथा एक विचारपूर्ण और सहायतापूर्ण ढंग से डाँटना-फटकारना चाहिये और उनकी आलोचना करनी चाहिये। हमें, और ख़ास तौर से हमारे तुलनात्मक रूप से जिम्मेदार साथियों को, इस चीज़ की ओर ध्यान देना चाहिये। अपने दिमाग़ में इस पुरानी चीनी कहावत को हमें रखना चाहियेः 'अगर शरीर को एक तेज चाकू से काटा जाता है तो घाव भर जायेगा, लेकिन व्यंग द्वारा पैदा की गई दुर्भावना कभी भी क्षमा नहीं की जाएगी।' दूसरी तरफ़, हमारे साथियों को अंतर-पार्टी संघर्ष के लिये अपने तईं तैयार होना चाहिये। आलोचना, हमले, या ग़लतफ़हमियों और अन्यायों को सहने का उनमें साहस होना चाहिये। ख़ास तौर से दूसरों की ग़ैर-जिम्मेदार और ग़लत आलोचना से और अफ़वाहों से उन्हें गुस्सा नहीं होना चाहिये। जब तक कि हमारी विचारधारा और हमारा व्यवहार सही है तब तक

पार्टी संगठनों में पार्टी साथियों के बीच नियमित और पारस्परिक आलोचना करने के अलावा, अगर जरूरत हो तो दूसरों की गैर-जिम्मेदार आलोचना तथा ग़लतफ़हमियों के जवाब में हम अपनी तरफ़ से कुछ सफ़ाई भी दे सकते हैं। और अगर इस सफ़ाई का भी कोई असर नहीं होता तो यही बेहतर है कि लोगों को जो उनके मन में आता है, हम बकने दें। हमें दो और चीनी कहावतों को याद रखना चाहिये: 'ऐसा कौन है जिसके पीठ पीछे लोग उसके बारे में गप्पें नहीं लगाते, और ऐसा कौन है जो दूसरों के बारे में गप्पें नहीं लगाता?' 'जब तूफ़ान उठे तो अपनी नाव में चुपचाप बैठ जाओ।' ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं है जिसे दूसरे लोग किसी न किसी रूप में गलत न समझते हों। एक तरफ़, हममें गलतफ़हमी को बरदाश्त करने की शक्ति होनी चाहिये और सिद्धांतहीन संघर्षों से अपने को हमें दूर रखना चाहिये; दूसरी तरफ़, हमें हमेशा सावधान रहना चाहिये और स्वयं अपनी विचारधारा और व्यवहार की जाँच करते रहना चाहिये।

कहने का मतलब है कि अपनी टीका-टिप्पणियों के चलते-फिरते ढंग से दूसरे साथियों की भावनाओं को हमें चोट नहीं पहुँचाना चाहिये, लेकिन अगर दूसरे लोग हमारे ऊपर कोई टीका-टिपणी करते हैं तो हममें उसे सह लेने की ताक़त होनी चाहिये।

पार्टी के अन्दर सिद्धान्तहीन झगड़ों के हम बुनियादी तौर से ख़िलाफ़ हैं। चूँकि वे 'सिद्धान्तहीन' हैं इसलिये पार्टी के लिये वे नुक़्सानदेह और अलाभकर हैं। चूंकि वे 'सिद्धान्तहीन' हैं इसलिये उनके सही या गलत होने का अथवा अच्छा या बुरा होने का कोई सवाल ही नहीं है। सिद्धांतहीन संघर्षों में हमें इस चीज का पता लगाने की कोशिश नहीं करनी चाहिये कि कौन सही है और कौन ग़लत, या कौन अच्छा है और कौन बुरा; क्योंकि इन चीज़ों का फैसला नहीं हो सकता। इस तरह के सिद्धांतहीन संघर्ष के हम बुनियादी तौर से ख़िलाफ़ हैं, और जो साथी उसमें फँसे हुये हैं उनसे हम कहते हैं कि बिना किसी नुक़्ता-चीनी के उसे बन्द कर दो और सिद्धांत के सवालों पर लौट आओ। सिद्धांतहीन झगड़ों के सम्बंध में हमें इसी नीति को अख़्तियार करना चाहिये। अगर पार्टी के मना करने और हमारे विरोध करने के बावजूद भी, पार्टी में सिद्धांतहीन झगड़े चलते

हैं, अथवा किन्हीं सैद्धांतिक संघर्षों के साथ बहुत से सिद्धांतहीन प्रश्न भी मिल जाते हैं, तो हम क्या करें ? अगर सिद्धांतहीन प्रश्न हमारे ऊपर लाद दिये जाते हैं और हम उनमें फँस जाते हैं तो हम क्या करें ? ऐसी हालतों में, अपने ध्यान को हमें सिद्धांत के प्रश्नों पर, और सिद्धांतहीन प्रश्नों पर नहीं, लगाना चाहिये; और सिद्धांतहीन झगड़ों के सम्बंध में ऊपर बताई गई नीतियों के अनुसार सख़्ती करनी चाहिये। सिद्धांत-हीन झगड़ों में उलझे बिना अपने दृष्टिकोण पर अंत तक हमें अटल रहना चाहिये। 'ग़लती का' जवाब हमें 'ग़लती से' नहीं देना चाहिये। दूसरों की 'ग़लतियों का' विरोध करने के लिये हमेशा 'सही' के पक्ष में खड़ा होना चाहिए। ऐसा करना हमारे कुछ साथियों के लिये बहुत आसान नहीं है। इसलिये हमें अपना इस्पातीकरण और आत्मविकास करना चाहिये।

एक शब्द में, हमारे विचारधारात्मक विकास का उद्देश्य अपने को बुनियादी तौर से वफ़ादार, सच्चे, प्रगतिशील और आदर्श पार्टी मेम्बर और कार्यकर्ता बनाना है। हमें निम्न चीज़ें करनी चाहिये :

(१) मार्क्सवाद-लेनिनवाद के अध्ययन और क्रान्तिकारी अमल के द्वारा अपनी पार्टी और वर्ग के अपने दृष्टिकोण को हमें पक्का बनाना चाहिये।

(२) खुद अपनी विचारधारा और व्यवहार की जाँच करनी चाहिये और तमाम ग़लत विचारों को दुरुस्त करना चाहिये। साथ ही साथ तमाम सवालों और दूसरे साथियों की तरफ जीवन के कम्युनिस्ट दर्शन, विश्व दृष्टिकोण और पार्टी के पक्के नज़रिये से हमें देखना चाहिये।

(३) पार्टी के अन्दर विभिन्न ग़लत विचारधाराओं के खिलाफ़ संघर्ष में—ख़ास तौर से उन विचारधाराओं के ख़िलाफ़ संघर्ष में जो उस समय के क्रांतिकारी संघर्ष पर असर डालती हैं—हमें हमेशा सही रुख़ और तरीक़ा अख़्तियार करना चाहिए।

(४) विचारधारा, भाषण और व्यवहार में हमेशा अपने ऊपर हमें नियंत्रण रखना चाहिये। उन राजनीतिक विचारधाराओं, भाषणों और कार्रवाईयों पर, जिनका सम्बंध उस समय के क्रान्तिकारी संघर्ष से है, हमें

ख़ास तौर से नियंत्रण रखना चाहिए। मज़बूत रुख अपना कर और सिद्धांत के ऊपर अटल रह कर ही हम ऐसा कर सकते हैं। इसके अलावा, बहुत सी 'तुच्छ बातों' (व्यक्तिगत जीवन, व्यवहार, आदि) की ओर ध्यान देना भी अच्छा होगा। लेकिन जहाँ तक, दूसरे साथियों का सम्बंध है तो सिद्धांत के प्रश्नों और महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रश्नों को छोड़ कर बाकी चीज़ों के सम्बंध में हम उनके ऊपर जो प्रतिबंध लगाएँ, उन्हें बहुत सख्त नहीं होना चाहिये। हमें 'छोटी बातों' में छिद्रानुवेषण नहीं करना चाहिये।

साथियो! मेरी राय में कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों के बुनियादी विचार-धारात्मक विकास का यही मतलब है।

★

परिशिष्ट

मनुष्य का वर्ग स्वरूप

वर्ग समाज में मनुष्य का वर्ग स्वरूप ही मनुष्य की प्रकृति और उसका सारतत्त्व होता है।

वर्ग समाज में तमाम मानव प्राणी किसी खास वर्ग के मानव प्राणियों की हैसियत से रहते हैं। इसलिये मनुष्य का सामाजिक स्वरूप उसकी वर्ग हैसियत से निर्धारित होता है। जिस तरह एक व्यक्ति की वर्ग हैसियत दूसरे व्यक्ति की वर्ग हैसियत से भिन्न होती है, उसी तरह उसका सामाजिक स्वरूप भिन्न होता है। पुराने ज़माने में मेन्शियस, काट्ज़े, सुन्तज़े* तथा दूसरे लोगों ने यह निर्णय करने की कोशिश की थी कि 'मानव प्रकृति अच्छी है या बुरी'। वे कभी किसी नतीजे पर न पहुंच सके। इसका कारण यह था कि वे मनुष्य के सामाजिक स्वरूप के वर्ग भेदों को नहीं समझते थे, अथवा उन्हें जान-बूझकर ढंके रखना चाहते थे। वर्ग समाज में अच्छाई और बुराई के बारे में मनुष्य के विचार अलग-अलग होते हैं। शोषक जिसे अच्छा समझते हैं, शोषित उसी को बुरा समझते हैं और शोषित जिसे अच्छा समझते हैं शोषक उसे बुरा समझते

*ये कन्फ्यूशियस मत के तीन प्रसिद्ध विद्वान थे। ये चाऊ वंश के शासन (११२२-२५५ ईसा पूर्व) के अन्तिम भाग में हुए थे। मानव स्वभाव के सम्बंध में उनकी अलग-अलग धारणाएँ थीं। मेन्शियस कहता था मानव स्वभाव मुख्यतया अच्छा ही होता है। सुन्तज़े उसे बुरा मानता था और काट्ज़े परिवर्तनशील।

हैं। इसलिये, यह स्वाभाविक है कि वर्गों के सम्बंध पर विचार किये बिना इस प्रश्न पर बहस करने से कि मानव प्रकृति अच्छी है या बुरी, हम किसी नतीजे पर नहीं पहुँचेंगे। इसी तरह, अगर हम सर्वहारा वर्ग के दृष्टिकोण को नहीं अपनाते तो हम इस बात का निर्णय नहीं कर सकते कि कोई लोग कितने अच्छे, या कितने खराब हैं। इन लोगों की पार्टी भावना के बारे में तो हम और भी कम निर्णय कर सकेंगे।

मनुष्य का वर्ग स्वरूप उसकी वर्ग हैसियत से निर्धारित होता है। कहने का मतलब है कि अगर कुछ लोगों का एक समूह बहुत दिनों से एक विशेष वर्ग की हैसियत से रहता आया है, अर्थात् सामाजिक व्यवस्था के अन्दर एक खास स्थिति में रहा है और बहुत दिनों तक एक खास ढंग से वह उत्पादन करता, रहता और संघर्ष करता आया है तो, अपनी जिन्दगी का एक खास ढंग, अपने खास हित, माँगें, मनोविज्ञान, विचार, रीति रिवाज, दृष्टिकोण, तौर-तरीके और दूसरे लोगों के समूहों व चीजों आदि के साथ विशेष प्रकार का सम्बन्ध—उस समूह के लोग पैदा कर लेंगे। ये सब उनसे भिन्न होंगे, अथवा उनके उल्टे होंगे जो लोगों के दूसरे समूहों ने पैदा किये हैं। मनुष्यों की खास विशेषतायें, उनका खास वर्ग स्वरूप इसी तरह बनता है।

जिस तरह समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों के अलग-अलग हित, माँगें, विचार और रीति-रिवाज होते हैं, उसी तरह समाज और इतिहास की प्रत्येक चीज़—जैसे राजनीति, अर्थनीति, संस्कृति, आदि—की तरफ़ देखने का उनका अलग अलग ढंग, तथा उसे तै करने की अलग-अलग नीतियां हैं। शासक-वर्ग, क़ानूनों और व्यवस्थाओं को अपने हितों, माँगों और दृष्टिकोणों के अनुसार बनाते हैं। फलस्वरूप समाज की तमाम राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवस्थायें शासक वर्ग के हाथ के अस्त्र बन जाती हैं। वे सब एक वर्ग-स्वरूप की भावना में डूबी रहती हैं।

वर्ग-समाज में मनुष्यों के तमाम विचार, कथन, व्यवहार, सामाजिक व्यवस्थाएँ और सिद्धान्त एक वर्ग-स्वरूप में डूबे होते हैं। वे किन्हीं वर्गों के विशेष हितों और माँगों की नुमायन्दगी करते हैं। मनुष्यों की भिन्न माँगों, सिद्धान्तों, विचारों, कथनियों और व्यवहार से हम उनके भिन्न वर्ग-स्वरूप का पता लगा सकते हैं।

उदाहरण के लिये, प्राकृतिक खेतिहर अर्थ व्यवस्था और दस्तकारी उद्योग व्यवस्था के उत्पादन का तरीक़ा सामन्ती समाज का आधार है। ऐसे उत्पादन में सामन्ती स्वामी, किसानों के अतिरिक्त-श्रम का शोषण कर सकते हैं। वे काम नहीं करते, बल्कि अपने जीने के लिये भूमि-कर और बेगारी पर निर्भर रहते हैं। इसलिये वे चाहते हैं कि उनके क़ब्ज़े में और ज़मीन आजाये और वे स्थायी रूप से उसके मालिक बने रहें। वे माँग करते हैं कि किसान उन्हें और अधिक लगान दें और उनके लिये और ज़्यादा हरी-बेगारी करें तथा किसानों को पैरों तले कुचलने के और उनका शोषण करने के अधिकार को वे न्याय-पूर्ण स्वीकार कर लें। उनकी सामन्ती स्वर्थान्धता, तथा दूसरों को हड़पने और फिज़ूल ख़र्ची करने तथा सुस्ती, निर्दयता और सामाजिक प्रतिष्ठा की उनकी भावना इसीसे उदय होती है। सामन्ती-वर्ग के ये ही लक्षण हैं।

आधुनिक उद्योग व्यवस्था के अन्तर्गत मशीन-उत्पादन का तरीक़ा पूंजीवादी समाज का आधार है। इस उत्पादन व्यवस्था में पूंजीपति वर्ग उत्पादन के साधनों और तमाम उत्पादित वस्तुओं का स्वामी होता है। उसी के ज़रिये सर्वहारा वर्ग के अतिरिक्त श्रम का वह शोषण करता है। उनकी जीविका मजदूरों द्वारा पैदा किये गये अतिरिक्त मूल्य पर निर्भर होती है। इसकी वजह से वे चाहते हैं कि मालों और श्रम-शक्ति की मुक्त ख़रीद-फरोख़्त हो और मुक्त प्रतियोगिता चले। अपने प्रतिद्वन्द्वियों को नष्ट करने के लिये और अपना आर्थिक और राजनीतिक एकाधिकार स्थापित करने के लिये वे आर्थिक साधनों का उपयोग करते हैं। वे दावा करते हैं कि उनकी निजी सम्पत्ति अभेद्य है। वे इस बात की माँग करते हैं कि अपने अतिरिक्त श्रम को उन्हें मज़दूर और अधिक मात्रा में (काम के लम्बे घंटों और तेज़ काम के रूप में) तथा और अच्छे रूप में (और अच्छे तथा अनुभवी कार्य-कौशल के रूप में) दें तथा तनख़ा और कम लें। वे यह भी चाहते हैं कि उनके दौलतमन्द बनने और समाज की दौलत पर एकाधिकार क़ायम करने के अधिकार को मज़दूर न्यायपूर्ण मान लें। प्रतियोगिता, एकाधिकार और फिज़ूल खर्चो की तथा उनके केन्द्रीभूत और यांत्रिक स्वरूप वाले संगठन की पैदाइश इसी तरह होती है। पूंजीपति वर्ग के ये ही लक्षण हैं।

किसानों की बात लीजिये। किसान लम्बे काल से जमीन से बंधे रहे हैं। जिस तरह के उत्पादन में वे लगे रहे हैं वह बिखरा हुआ, स्वतन्त्र, सरल,

और स्वतः में पूर्ण रहा है। पारस्परिक सहयोग, उसके अन्तर्गत नहीं रहा है। उनके जीवन का तरीका सरल और व्यक्तिवादी है और उनकी पीठ पर लगान और हरी-बेगारी, आदि का बोझ है। इसीसे उनके ढीले ढाले ढंग, उनकी रूढ़िवादिता, कूप-मंडूकता, उनके पिछड़ेपन, निजी सम्पत्ति के मालिकों वाले उनके दृष्टिकोण तथा सामन्ती स्वामियों के खिलाफ़ उनके विद्रोह और राजनीतिक समानता आदि के लिये उनकी मांग का आधार पैदा हो जाता है। किसानों के ये ही लक्षण हैं।

मज़दूर बड़े उद्योग-धंधों में केन्द्रित हैं। वे अत्यन्त बारीक श्रम-विभाजन के आधार पर उत्पादन का कार्य करते हैं। उनके सारे काम मशीनों और पारस्परिक निर्भरता के आधार पर संचालित होते हैं। वे मज़दूरी पर काम करने वाले लोग हैं जो अपनी श्रम-शक्ति बेचते हैं। उनके पास उत्पादन के कोई साधन नहीं होते। अपनी जीविका के लिये वे मज़दूरी पर निर्भर करते हैं। उनके बुनियादी हितों का दूसरे श्रमजीवियों के हितों के साथ कोई विरोध नहीं है। इसीसे उनकी महान एकता, पारस्परिक सहयोग तथा संगठन और अनुशासन की भावनाओं का; उनके प्रगतिशील दृष्टिकोण, सम्पत्ति के सार्वजनिक स्वामित्व की उनकी मांग और शोषकों के खिलाफ़ उनके विद्रोह तथा उनके लड़ाकूपन, उनकी लगन, आदि का आधार पैदा हो जाता है। मज़दूर वर्ग के ये ही लक्षण हैं।

तमाम शोषित वर्ग शोषितों को धोखा देते हैं और उनका उत्पीड़न करते हैं। शोषितों द्वारा पैदा की गई अतिरिक्त पैदावार अथवा अतिरिक्त मूल्य के लिये वे आपस में लड़ते हैं। उनकी धोखेबाज़ी, मनुष्य का उनके द्वारा उत्पीड़न और पारस्परिक लूट-खसोट इसीसे उत्पन्न होती है। इतिहास की बहुत सी लड़ाइयों का कारण शोषितों द्वारा पैदा की गई अतिरिक्त पैदावार और अतिरिक्त मूल्य के ऊपर क़ब्ज़ा करने और उसको आपस में बाँटने के सम्बंध में शोषक वर्गों के बीच हुए झगड़े ही रहे हैं।

तमाम शोषकों का एक आम लक्षण यह है कि वे अपने सुख का निर्माण दूसरे लोगों की तकलीफ़ों के ऊपर करते हैं। एक व्यक्ति अथवा कुछ मुट्ठीभर लोगों के लिये विशेष सुविधाएँ और विशेष सुख-आराम मुहय्या करने

के लिये संपूर्ण मानव जाति अथवा जनता के विशाल बहुमत के सुख आराम की हत्या करना, उसको भूखा व वस्त्रहीन अवस्था में रखना और उसकी बेइज़्ज़ती करना—यही तमाम शोषकों के ' उच्च चरित्र, ' उनकी ' महानता, ' उनकी ' सम्मानीयता ' और नैतिकता का आधार है ।

सर्वहारा वर्ग और कम्युनिस्टों की बात इससे बिलकुल उल्टी है। अपने सुख का निर्माण वे अपने सुख को सबके साथ बाँटने के आधार पर करना चाहते हैं। तमाम आम मेहनतकश जनता और संपूर्ण मानव जाति की मुक्ति के संघर्ष के दौरान में वे अपना उद्धार करना चाहते हैं और मुट्ठीभर लोगों के विशेष अधिकारों को वे मिटा देना चाहते हैं। कम्युनिस्टों के उच्च चरित्र, उनकी महानता, सम्मानीयता और नैतिकता का यही आधार है ।

वर्ग समाज में मनुष्यों के यही विभिन्न वर्ग स्वरूप हैं। ये वर्ग स्वरूप, उत्पादन में बहुत दिनों तक लगे हुए लोगों की विशेष स्थिति, उत्पादन के उनके विशेष सम्बंधों, और जीवन के उनके विशेष ढंग के परिणाम·स्वरुप धीरे-धीरे बनते हैं। एक तरह से वे मनुष्यों की प्रकृति बन जाते हैं। इस प्रकृति का रूप सामाजिक होता है।

मनुष्यों के इस तरह के वर्ग स्वरूप का सर्वोच्च और सबसे स्पष्ट रूप उनकी पार्टी भावना है। इसलिये मनुष्यों में विभिन्न प्रकार की पार्टी भावनाएँ होती हैं: सामंती वर्ग की पार्टी भावना, पूंजीपति वर्ग की पार्टी भावना सर्वहारा वर्ग की पार्टी भावना, आदि।

कम्युनिस्ट की पार्टी भावना सर्वहारा वर्ग के वर्ग·रूप, उसके सार-तत्व और उसके हितों का स्पष्टतम रूप है। किसी कम्युनिस्ट का पार्टी भावना में पक्का और विकसित होने का मतलब अपने सारतत्व को फिर से ढालना होता है।

कम्युनिस्ट पार्टी को सर्वहारा वर्ग की अनेक महान और प्रगतिशील विशेषताओं को उच्चतम स्तर तक विकसित करना चाहिए। हर कम्युनिस्ट को अपने को इन्हीं विशेषताओं के अनुसार फिर से ढालना चाहिये और इन उत्तम विशेषताओं से अपने को लैस करना चाहिये। यही सारतत्त्व का पुनर्निर्माण है। वे तमाम पार्टी मेम्बर जो औद्योगिक मज़दूरों के अन्दर से नहीं आते, ग़ैर-सर्वहारा